

सद मीम सन १८९७ २५ मे आरड सुगव रजिस्टर करके  
प्रयत्नसंगे इन्का हक रक्षाधीन रणाई.

## विज्ञापन.

श्रीमंतो धर्माचार्य धर्मशील सद्गुरुन्योनमः  
 अहो जग्यलोको नमस्कार करो उस आदि पु-  
 रपोत्तम ऋषि सर्वज्ञकुं की जिसने धर्म अर्थ  
 काम और मोक्षका रस्ता बतलाया और प्रजा  
 सुखसे निर्वाह करसके इसवास्ते अनेक क-  
 लाकौशल पैदा करके प्रजाकुं सिखलाइ जगत-  
 में कुंजार सुथार छुदारादिकोकी कारीगरी दे-  
 खके निश्चे अनुमान होताहे के यह विद्यासरूमें  
 उसीने सिखलाईहे वह देहधारी और स्वयंबुद्ध  
 ज्ञानीथा निराकार ईश्वर विद्या उपदेशक नहीं  
 होसकता इय बात तो न्यायसे और प्रत्यक्ष प्र-  
 माणासँही सिद्धहे हां अलबत्तें बुद्धि तो मनु-  
 प्योकी उसमें सहाय देणेवाली जरूरहे जेसँ  
 विद्यामान अंग्रेजोने एक २ वस्तुका होता हुवा  
 कार्य देखके रेल तार बिजली ठापरपाणे आदि  
 अनेक कल पैदा करली खिचनी पकती हुइ  
 हंभीकी वाफूसे ढकणी ठठलतीकुं देख अग्नि और  
 पाणी और वायूके योगसे एसी कुदरत होतीहे  
 इतनी वातकुं बिचारते वाफूकुं रोकणेका ज्यादा  
 प्रयत्न बढ़ाया तो अनेक किरमके कार्य ड्रव्यानु  
 योगसँ करते बले जातेहे अगर इस वातकुं

ज्यादा सुक्ष्मबुद्धिसं विचारोगे तो इह कार्यजी  
 उस आदि पुरपकी बनाइ शिल्पकलाउमेहीहे  
 जो कोइ कहेगा की तुमारे आर्यावर्तमें यह  
 विद्या कब थी झूठी बातकूं हम कैसे माने उ-  
 त्तर हे महाशय हमारा देश सर्व विद्याका उर  
 धनका जंमारथा देखो हमारा कोणिक असोक  
 चंद्रराजाका चरित्र उसने ठव खंरुका चक्रवर्ति  
 वणणेकूं दिग्विजय करणेकूं सातरत्न लोहमइ  
 बणायेथे सो चक्र तो आकासमें स्वत चलताथा  
 इत्यादि इस कलसे काम लेणेकी कारीगरी उस  
 यखन कायमथी जिसकों अढाइ हज़ार वर्षही  
 नयाहे गजसिंह कुमार चरित्रमे एक सुथारने  
 ऐसा मोर बणायाथा कलका उसपर वेणुणेसे  
 सड़कमो योजन गजसिंह कुमार फिराथा देखो  
 वसुदेव हिंदु हममें वसुदेवजीकूं बुलाणे राजाने  
 कलमइ हार्थी बणाके नेजाथा देखणेमें हार्थीकी  
 तंग हमके पेटमें आदमी लोक बेग़ेथे इत्यादिक  
 कलकी कारीगरी आर्यावर्तमेंथी विमाननी आ-  
 काशमे चलनेथे पद्मचरित्रमे सावितहे जयसे  
 विद्याका पगुन पागुन कमपना तयसं गुप्तिनी  
 मंद होने गई लमाइ दंगोमे यहोन कामिल  
 गाम्नी नष्ट भ्रष्ट होगये उर विज्ञापगोवालेनी

लेगये इसवांस्ते यह ग्रंथको जो मेने संग्रह कराहे सो च्यारोही वर्णके मनुष्योके लिये हितकारीहे कारण हरकिसमका काम जो ज्ञानयुक्त बुद्धिसँ विचारके करणेमें आताहे तो अंतमे उसका परमार्थनी ठीक हासिल होताहे इसमे नोकरी राज्य सेवा युद्ध मातापिता आदिकोसँ बर्तावा रुजगार सात प्रकारकी आजिविका व्याज वगेरे सब करके पूरा नफा करके शंसारमे धनवान इज्जतदार उर बमा चतुर बजकर अंतमें जीव परमपद साध सकताहे ऐसा ग्रंथ किसीने नहीं ठापाहे ज्यादा क्या तारीफ लिखूं इस ग्रंथकूं पदके जो अमल करेगा तो निश्चय वह मनुष्य बतोर बालरटरोके माना जायगा यह ग्रंथ साक्षान्तकानून धर्मशास्त्रहे इस अर्थके प्रकाशक अर्हद् परमेश्वरहे जैनधर्मके कायदा कानून कइएक नमुनेकी बानगी लोकहितार्थ जाहिराकीहे अथलसँ लेकर आखरीतक पढे बिगर नृसिनी न होगी गृहस्थके धर्म कायदेके श्राद्धदिनकर आचारदिनकर विवेक विज्ञाश श्राद्धप्रज्ञप्ती श्राद्धकौमुदी आदि अनेक ग्रंथ बने विस्तारके संस्कृत प्राकृत नापामें यणे द्येहे लेकिन नापानिजापी पुरपोके लियेही मेरा प-

रिश्रमहे जैनधर्ममें सर्व तरेके ग्रंथ मौजूद  
 ज्योतिषवैद्यकादिक परंतु जैनलोक उसकी खोज  
 नहीं करतेहे उर जो कोइ खोज करे तो उसकूं  
 मदत नहीं मिलतीहे मेने यह ग्रंथ मंवरमें ठ-  
 पाणे गया तब श्रीमान् सावणसुखा वीकानेर  
 वास्तव्य सेठ जुहारमलजी समेर मलजीके मु-  
 नीम पारख माणकचंदजीने मुझे कुछ एक  
 आश्रय दियाहे जिसके सहायसें यह मेरा  
 परिश्रम सफल जयाहे इस ग्रंथकी किमत ब-  
 होत खरचा लगणेपरजी बहोत थोमी रख्कीहैं  
 १॥ रुपा देठ जिल्द बंधी समेत ॥ मिलणेका  
 ठिकाणा वीकानेर राजपूताणा बना उपासरा उ-  
 पाध्याय युक्तिवारिधिः श्रीरामलालजी गणिः  
 के शिष्य पांभेमचंद पैमचंद अमरचंद प्रकाशक  
 विद्याशाला ॥

## ॥ श्री श्रावक व्यवहारालंकारः ॥

॥ श्रीऋषजादिचतुर्विंशतितीर्थकरेभ्योनमः ॥  
 श्रीवाण्यायै नमः ॥ अथ श्रावकव्यवहारालंकार  
 ग्रंथोऽयं लोकजापयात्रिख्यते ॥ सर्वसंपत्करीयासा  
 वाणीकक्षुपनासिनी ऋषिसिद्धिप्रदानित्यं बंदे जि  
 नमुखोद्भवं ॥ १ ॥ धर्मशीलात्मयाजव्या जवाब्ध्यो  
 छेदकारणीं लोकलोकोत्तरो शुद्धिं नौमिनित्यं स-  
 सङ्गुम् ॥ २ ॥ व्यवहारालंकारं श्रावकस्य सुखायै  
 क्रीयते ऋषिसारेण श्राद्धग्रंथानुसारतः ॥ ३ ॥

अव-पदले गृहस्थ श्रावक चार घन्टी पि-  
 ठली रात रहनेसें ठठके मनमें नवकार मंत्रका  
 जाप करता हुवा जिधरका स्वर नाकका चलता  
 होय वोही पांव अपने बिठोनेसें नीचे जमीनपर  
 रखके फेर जतनके साथ निर्जोव शुद्ध जमीनपर  
 काय चिंतासे निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र पहनकर  
 सारे वदनपर हाथ फेरकर आठ पांखनीका  
 कमल अपने नाभिचक्रमें मनसे विचारकर एक-  
 सो आठ बेर अथवा ज्यादा मनमेही नवकार  
 मंत्रका जाप करे जिसमें संसार संबंधी कार्य-

सिद्धिके वास्ते ॐ ह्रीं ऐं सा वीज लगाकर पाँ-  
 चोही परमेष्ठीका जाप जपे मुक्तिके वास्ते ए-  
 साही जापजपे फेर सामायकादिक ठ आवश्यक  
 करे जिन मंदिरमें जाके विधीके साथ चैत्यवं-  
 दनादि करे इसका विस्तार चैत्यवंदनज्ञाप्य  
 श्राद्धदिनकरादिक ग्रंथसें जाणना फेर जतनके  
 साथ जिनमूर्तिंकी पूजा स्नान तिलकादिक करके  
 हव्यज्ञाव संयुक्त करे पूजाका विस्तार श्राद्धविधी  
 पूजापंचाशकादि ग्रंथोंसें जाणना फेर उपाश्रय  
 जाके गुरुवंदन करके व्याख्यान सुणे पंचस्काण  
 करे गुरुवंदनकीविधि गुरुवंदनज्ञाप्यसें जाणना  
 पंचस्काणका निर्णय आगारोका अर्थ पंचस्वाण  
 ज्ञाप्यसे जाणना गृहस्थकूं चाहीये पंक्ति जतीसें  
 हमेसां धर्म सुणे उरसीखे कयूं के विद्या ऐसी  
 अमोलख कामधेनुहे सो सबतरेके मनवंडित  
 पूरणे समर्थ हे ऊपर कहे मुजब धर्मक्रिया  
 किया पीठे राजा अपने राज्यसजामें जावे  
 मंत्री अपने सुप्रत न्यायसजाका काम देखे  
 व्यापारीवणिक अपने उद्यमका प्रयास करे  
 धर्मकूं विरोध नही आवे इस मुजब धन पैदा  
 करे जेसें राजा धनवानका उर गरीबका अपने  
 खातरीवाले मान्य पुरुषका उर सामान्य प्रजा-

का उत्तमका ठर नीचका, पूर्वापर जुवानकूं  
 विचारकर कसूरदारका कसूर जाणकर मध्यस्थ  
 जावसैं इनसाफ करें ज्यादे खातरी न्यायपक्षमें  
 नही करे इसपर ऐसा दृष्टांतहे कल्याण कटकपुर  
 नगरमें ब्रमा न्यायवान ऐसा यशोवर्मानामे  
 राजा राज्य करताथा उस राजानें राज मेहेलके  
 नीचे गरीब लोकोंकी फरियाद सुननेको न्याय  
 घंटा बंधवाई एक समय राजाकी कुलदेवी  
 राजाके न्यायकी परिक्षा करणेकूं तुरत जणी हुई  
 गायका रूप धारण कर बचे समेत राज रास्तेमें  
 बैठ गई इतनेमें राजाका लम्का पूरे जोरसैं  
 घोडा दोमाता हुवा आतेके फेटमें आणेसैं बठ्ठा  
 मारा गया तब वो गाय बने शब्दसैं पुकार  
 करती हुई रोती २ आंसू बरसाणे लगी तब  
 किसी आदमीने गायसैं कहा इहांतो जो  
 होणहारथा सो होगया अगर इनसाफ कराये  
 चाहतीहे तो राजाकी न्यायघंटा बजाकर फरी-  
 याद कर तब वह गाय उसी मुजब जायकर  
 सींगोंसैं घंटा बजाणे लगी राजा उस वखत  
 नोजन करताथा घंटाकी अवाज सुणकर पूछा  
 ये फरीयादी कोण हे नोकरोने देखकर कहा  
 एक गइया बजातीहे राजा नोजन ठोमके



बाहिर आया तब गइयासैं पूठणे लगा तुजें  
 किसीने सतायाहे क्या वो सताणेवाला कहाहे  
 मुझे बतला तब गऊ आगे चली राजा उनके  
 पिठामी चला गऊनें मराहुवा बठना दिखलाया  
 राजा तब लोकोंसैं पूठणे लगा ये बठमेकूं जि-  
 सनें माराहे वो हमारे सामने आवे जब को-  
 इनी आदमी हाजर नहीं जया तब राजाने  
 नियम कीया जब कसूरवार जाहिर होगा  
 तनी अन्न जल लूंगा राजाकूं लंघन जया तब  
 राजाका लम्का हाथ जोर हाजर हुवा कहणे  
 लगा हे स्वामी गुनहगार में हूं इसवास्तेही  
 चाणक्य नीतिमें लिखाहे यतः विनयं राज-  
 पुत्रेभ्यः पंक्तिभ्यः सुजापितं ॥ अनृतं द्यूतकारेभ्यः  
 स्त्रीभ्यः शिक्षेतकैतवं ॥ १ ॥ अर्थ—विनय याने  
 अदबका कुरव कायदा सीखणा होय तो रा-  
 जोंके कुमरोंसैं सीखणा वो लक्ष्मीपूत्र गोटे उर  
 बने सबोके संग बरतावेकी नीतीसैं चलतेहे  
 कुलहीन आदमी हुकमत उर पेसेके नसेमें  
 किसीकूं कुछ नहीं नमज्जतेहे काग जो सिंहा-  
 मणपरनी बँठ जाय तो क्या हंसके गुण जो  
 क्षीरनीर जुदे करणेके हे वो कब आसकताहे  
 उर भनामेंबोलणेके सुनापित सीखणा होय तो

पंक्तियोंसें सीखणा अनृत याने झूठ चोरी हरी-  
 फाड़ सीखणा होय तो जुवारीसें सीखणा ठस-  
 में ये सब अपलक्षण होतेहे ठर कैतव याने  
 कपटाड़ सीखणा होय तो ठरतोसें सीखणा  
 स्त्रीका जन्मही मायाबद्धहे ठस कुमरनें राजासें  
 सब हकीगत कह सुणाई हे पिताजी जेसा  
 मेरा कमूरहे बेसीही मुझे सजा होणी चाहिये  
 तब राजा कानूनके जाणकार स्मृतियोंके पढे  
 ब्राह्मणोंसें राजाने पूठा तब उन ब्राह्मणोंने कहा  
 हे राजन् राजके योग्य तेरे ये एकही लम्काहे  
 इसके बास्ते क्या सजा बतलावें तब राजा  
 बोला हे ब्राह्मणो किसका राज किसका लम्का  
 मेंतो सबसें ज्यादा न्यायनीतिकूं समझताहुं  
 ठर राजासंका यही श्रेष्ठधर्महे सोही लिखाहे  
 दुर्जन जो बढ आदमी प्रजाकूं कष्ट देणेवाला  
 ठसकूं दंड करणा १ सत्जन याने गुणवंत ठर  
 श्रुती चालचलणेवाले पुरपोंकी पूजा सत्कार  
 करणा २ न्यायसें खजानेका धन जमाकरणा ३  
 पक्षपात याने तरफदारी न करणा ४ शत्रु जो  
 राज्यके दुस्मन हे ठनकूं जीतके प्रजाकी  
 हमेसां रक्षा करणी ५ ये राजा लोकोंकूं नित्य  
 करणे योग्य पंचमहायज्ञ जाणना सोमनीतिमेंनी

कहाहे राजाजंको चाहिये अपने लम्बेने कोइ  
 कसूर कीया होय तो अपराध माफक दंड  
 करणा इसवास्ते राजपुत्रकी कोइ खातरी नही  
 राखकर शास्त्रोक्त दंड होय सो कहो तबजी  
 पंक्तोनें कुठनी नही बतलाया तब राजा वि-  
 चारणे लगा जो जीव दुसरे जीवकूं हकनाहक  
 दुख देवे तो जिस मुजब उस जीवने दुसरे  
 जीवकूं कष्ट पोहचाया होवे वेसाही कष्ट उस  
 गरीब फरीयादीके बदलेमें कसूरदारकूं देणा  
 यही राजाजंका न्यायहे ठर किसीने उपगार  
 कीया होय तो उसका गुण नही जूलकर उसका  
 बदला उतारणा ये सब सत्पुरुषाका धर्म हे  
 ठर राजाजंकों चाहिये अनाथ दीन दुखी  
 अघोषकी ज्यादा रक्षा करे क्षत्रीलोकोकी ऐसी  
 नीतिहे की जो दुस्मन शस्त्र मालके नग्न हो-  
 जावे उसकूं मारे नही जो शत्रु संग्राममें नाग  
 जावे ठग नागतेकूं मारे नही जो शत्रु मूंमे  
 घास निणखा माल लेवे ऐसे पशुसंझक शत्रुकूं  
 मारे नही जिसने किसीकानी बिगान नहि  
 कियाहे एमे निरपराधीकूंनी मारे नही जेसं  
 राजाकी प्रजा मनुष्यहे उससं अधिक राजाकी  
 प्रजा दुपगो ठर चापगो बगेरह जिनावरहे इस

जाणवरोसैं प्रजाकुं अनेक तरेके फायदे उस  
 जानवरोके जीवणसे हे अपणी मोतसैं मरे  
 बादजी उनके चमना बगेरह अनेक तरेका काम  
 आताहे मनुष्य तो मरे बाद कुठजी काम  
 नही आसकताहे एसैं जानवर निरपराधीयोको  
 जो राजपुत्र अपणे स्वारथकेवास्ते मांस खाने-  
 का लालची होकर मारे वो राजपुत्र न्याइ नही  
 महा अन्याईहे क्योके आदमी तो आपणा  
 अहवाल कहकर सुणाताहे ये जानवरोका दुख  
 जब राजाही नही सुणेंगे ठर दया न लावेगे  
 तो फेर इन गरीबोको तो सब अनार्य म्हेछ  
 मारतेही हे फेर इनकुं तो सरणागत जो राजा  
 सबका रक्षक वोही मारताहे तब तो न्याय  
 पाताजमें गया पहले लिखाहे नग्न शस्त्ररहित  
 शत्रूकुं राजा मारे नही तो सब पशु नग्न ठर  
 शस्त्ररहितहे श्वापद सिंहादि बलीहे लेकिन  
 शस्त्रधारी तो नहीहे लेकिन ठर पशुओंको मनु-  
 ष्योंको मारताहे इसवास्ते उसका यत्न करे लेकी-  
 न अन्यपशु निरपराधी शस्त्ररहित हे घास मूंमें  
 ग्रास लेवे एसैं शत्रूकुंजी राजपूत पशुजाण मारे  
 नही तो प्रत्यक्ष घास करके पेट नरणेवाले  
 एसे निरपराधी पशुकुं फेसैं मारे जागते पशुजी

मारणे योग्य नहीं कारण जागते शत्रूकूं राज-  
 पूत मारे नहीं तो जागते हुये जानवरकूं कैसें  
 मारे केइ एक मांसाहारी अपणे स्वारथके वास्ते  
 ऐसा कहतेहे पशुओंमें अविनासी आत्मा नहीं  
 ऐसें कहणेवाले महामुख निर्दइ ठर मांसके  
 जालचीहे ज्यांनवरका मायना सोचेतो ऐसा  
 अर्थ जाहिरा मालम देताहे ज्यांन कहते जीव  
 वर मायने प्रधान याने अच्छा जीव तो फेर  
 अविनासी आत्मा पशुओंकी नहीं इसबातमें  
 क्या प्रमाणहे खून मनुष्योकेजी शस्त्र लगणेसें  
 निकलताहे ठर खून पशुओंकेजी निकलताहे श-  
 स्त्रकी चोट लगणेसे आदमी पुकार करताहे बेसा  
 ही जानवर करताहे मारके मरसें मनुष्य जागताहे  
 वैसेंही मारके मरसें पशूजी जागताहे अपणे  
 शंतानकी रक्षा मनुष्यजी करताहे बेसेही पशुजी  
 करतेहे मरणपर मनुष्यजी पुत्रादिकके वियोगसें  
 रोतेहे ऐसेंही पशुजी रोतेहैं इत्यादिक अनेक  
 प्रत्यक्ष प्रमाणसें मनुष्य जेसीही आत्मा पशु-  
 ंमेंहे अपणे १ कर्मोंके वश चोराशी लक्षयो-  
 नीमें जीव जटकताहे मरणा कोइजी नहीं चा-  
 हता सर्व मतोंमें वही धर्म श्रेष्ठहे की जिसमें  
 सब जीवोंकी हयाहे देखो गीता अहिंसा

परमोधर्मः फेर कृष्ण द्वैपायन व्यासने अठारोंही पुराणोका ऐसा सार निकालकर कहाहे यत् अष्टादशपुराणेषु व्यासस्यवचनद्वयं परोपकाराय पुण्याय पापायपरवीर्यं ॥ १ ॥ अर्थ-तो प्रगटहीहे तुलसीदास जक्तिमार्गवालेने कहाहे ॥

हुदा-दयाधर्मकोमूलहे नरकमूलअनिमान् ॥  
 तुलसीदयानगोमिये जवलजघटमेंप्राण ॥ १ ॥  
 तुलसीदायगरीबकी कनीननिरफलजाय ॥  
 मरे ठागकेचामसें छोदनसहोजाय ॥ २ ॥

मनुस्मृतिमेंनी आठ कस्ताइ लिखेहे जीवों-  
 कों मारणेवाला बताणेवाला मांस खाणेवाला  
 मांस बेचणेवाला मांस खरीदणेवाला रांधणेवाला  
 पुरसणेवाला ठर खाणेवाला मांसका अर्थनी  
 मनुने एसाही कीयाहे मांस अर्थात् जिसको  
 में खाताहुं सो कहता वो जीव मुझे खायगा  
 मांस खाणेवाला पत्थर ठर कूर मिजाजवाला  
 होजाताहे प्रतक्ष्य प्रमाणसें साधितहे मांस  
 खाणेवाले जितने जानवरहे सो सबोसों देखा  
 जावे तो सबके सब धमे निर्घृण ठर पत्थरहैं  
 बेसे घास ठर नाज फल फूल खानेवाले जानवर  
 दुष्टस्वभाववाले नदी ठर बमे सीधे नोले दोनेहे

एसाही मनुष्योंका अहवाल जाणना ऐसेइ  
 शेख सइयदनेजी फारसी जापाकी करीमा कि-  
 ताबमें लिखाहे की ज्यांनके मारणेवालोंको खुदा  
 गुनाह माफ नही करेगा इत्यादिक अनेक  
 ग्रंथोंसे साबितहे के मांस तो बिगर ज्यांनवर  
 मारे होता नही उर मारणेवाला गुनहगारहे  
 जो श्रुति स्मृती पुरान कुरानके बचन सचेहे  
 तब तो जो हाल उन ग्रंथोंमें लिखाहे सो  
 जानवर मारणेवालोंको मांस नक्षीयोंको गुना-  
 हकी सजा मिलेहीगी उर ये शास्त्र बगेरह नही  
 मानने उर एसा कहतेहे इराक भीठा  
 परवर किण दीठा उन लोकोंमें परवर मानने-  
 का एक प्रत्यक्ष प्रमाण देखणा जो पापपुन्यका  
 फल नहीहे सो अंधा लूना लंगना कोड़ी निर्धन  
 व्याणेंहे न मिळणा इयनों किण कारणसेहे उर  
 राजा सेठ साहुकार पेशआगामी बगेरह  
 अनेक मूर्खी जीव किम कारणमें देखणोंमें आवे  
 हे ये प्रत्यक्ष प्रमाणमें पापपुन्यका फल जाणकर  
 अजारे पापमवानक होमनेका समय करणा दा-  
 खही उर परार्थीनवासमें करणा घने सोनी पापके  
 कामहे पापमनदला येती धर्मही जहहे केइयर  
 दुर्ग एसा कहतेहे जवमें राजाओंसे दया

धर्मधार लीया तवसें सत्रुठसें संधाम करणेकी शक्ति नही रहणेसें राज्य खो वेठतेहे ये कहणा मूर्ख मांसाहारीयोका हे राजा जरत ऋषज देवके पूत्रसें लेकर विक्रमसंवत् वारेसे तक कुमारपाल सिद्धपुरपाटण प्रमुख अगारे देशके राजातक अनेक दयाधर्मी राजा असंख्यकालसें सूर्यवंसी चंद्रवंसी इस आर्यावर्त्तादि क्षेत्रोमें राज्य कर्ते जये थे शत्रुठके दलके तोमणेवाले हुये परिशिष्टपर्वादि क ग्रंथोका इतिहास देखणेसें मालूम होगा परम जैनदयाधर्मी चेटक राजा विशाला नगरीका शरणागत पिंजर विरुद धारणेवाला जिसका नाती अशोकचंद्र इन दोनोके जमाइमे एक क्रौर अस्सीलाख मनुष्य मारे गये राज्यनीति जवही प्रमाणहे सो अपराधीका निग्रह निरपराधीकी रक्षा करे मांस नही खाणेसें राज्य जाता हे उर खाणेसें रहताहे ये बात झूठ हे मुसलमीन दिल्लीके बादस्याह राज्य क्यों खो वेठे टीपू सूलतान आदि तो मांसाहारीही थे ये तो निश्चे जाणना पृथ्वी सदा कुमारीहे अनेक पति हुये अनेक होंयगें वीर-जोल्या वसुंधरा इति वचनान फेर एसानीहे के एकसमय एसीनी आजातीहे सो सूरवी-



रोसें कुछवण, नही आता एकसमे कायरजी  
 राजा बनवैवतेहे जेसें अकबरके बालपणेमे हे-  
 मचंद अग्रवाला बणिया बादस्याह दिल्लीका  
 बनगयाथा उर एकसमेका वो हालथा अर्जुनने  
 महानारत कीया एकसमे बोही अर्जुनसें कुछ  
 नही वणपमा ॥

डुहा-समेंबनीबलवानहे पुरपनहीबलवान ॥

कावांलूँटीगोपिका वहअर्जुनवहवाण ॥ १ ॥

हमारी समजसें तो राज्य जाणेका ऐसा  
 वरतावा मालम देताहे राजा प्रमादी विषयलं-  
 पट होकर अन्यायसें धन जमा करे निष्ठा  
 मांगणेवालोंसें कर लेवे डुष्ट उर विद्यारहित  
 मूर्खोंको राजकाजका अधिकार सोंपे विद्यावान  
 अकलवंत बुजरक पुरपोकी सल्लाह लेकर काम  
 नही करणेसें हर किसीका विश्वास करणेसें  
 साम दाम दंरु जेदसें च्यार प्रकारकी राजनीति  
 नही जाणनेसें खजानेमें धन नहीं रहणेसें  
 अपने नोकरोकी कदरदानी नहि करणेसें देव  
 गुरु धर्मकी अपमानता करणेसें गरीबोंको स-  
 ताणेमें बहोत मदिरा आदि नसेके पीणेसें  
 इत्यादि कारण राज्य जाणेकेहें इत्यादि कार-  
 णोंको विचारकर राजानें अपने अपराधी लम्बेकूं

ऐसा हुकम दीया तूं इस राजरस्तेमें सोजा  
 आप वो घोमा मंगाकर अपने चाकरोँको  
 हुकम दीया तुम इस घोमेपर सवार होकर  
 दोमाता हुवा इस लम्केके ऊपरसें लेजाउ रा  
 जाका लम्का विनयवानथा रस्तेमें सोगया  
 लेकिन नोकरोंने ऐसा करणा मंजूर नही करा  
 तब राजा घोमेपर आप असवार हुवा सर्व  
 लोकोने बहोत मना कीया तोजी राजा उस  
 गायका इनसाफ करणे घोमेकी वाग उठाइ  
 घोमा उठा इतनेमें राज्यकी अधिष्ठाइका देवी  
 लगामपकम फूलोंकी बरसात राजापर करी ठर  
 कहा हे राजन् में तुम्हारी न्यायबुद्धिकी परीक्षा  
 करी प्राणसेंजी प्यारा ऐसे लम्केकी खातरी  
 नही करते हुये तेनें गरीबकी करीयादी सुणके  
 सच्चा न्याय कीया तूं धर्मराजा हे तूं बहोत  
 काजतक निर्विघ्नपणे राज्यकर ऐसे न्यायकी  
 युक्तिपर दृष्टांत कहा अब जो राज्यके अधिकारी  
 कामदार वो केसा होणा चाहिये जेसें अन-  
 यकुमार चाणाक्य प्रधानकी तरे महाबुद्धिशाली  
 राजाका ठर प्रजाका दोनोंका हित चाहणे-  
 वाला ऐसा राज काज करे रुसपतखाके सचेकूं  
 झूठा न करे जिस काममें धर्मकूं विरोध नही



वालाही मंत्री करणा ये सूरता तथा व्यवहारी  
 शंकाशास्त्रकी निपुणता उर अन्य लोकोमें प्रायें  
 थोमे मिलेंगें वणिक जातिकी इतनी चपलता  
 हम मरुधर गुर्जर कच्छ पंजावादि देशवालोकी  
 देखीहे एक हिसाव अंग्रेजी पढे पुरुषकों  
 करणा बतलावे वोही हिसाव एक पारसी पढेकुं  
 करणा बतलावे उर वोही हिसाव माहाराष्ट्र  
 बंगालादि देशवालोंकों करणा बतलावे वही  
 उक्त वणिक तथा अश्वपतिसें करणा एक बर-  
 तही बतलावे तो सबसैं पहिले अश्वपतादिक  
 महेश्वरी अग्रवाल कहेगा कुछ देरसैं अंग्रेजी-  
 वाला कहेगा बाद माहाराष्ट्र बंगाल कहेगा सबके  
 पीत्रेनी केवल पारसी पढा कहेगा शंका होय  
 तो पातवाण देखें वणिक तथा अश्वपतादिकके  
 साथही अस्ति १ मसी २ ऋषी ३ कर्म संसारमें  
 चलताहे व्यापारी बगेर अन्य वर्णका निर्वाह  
 उर संसारधर्म चलणा दुसवारहे व्यापारीतो  
 उर वर्णके सारे प्रायें नही रह सकतेहे बाकी  
 तो अपने २ कर्मकर्ता नही होवे तो प्रलयका-  
 लकी मर्यादा हो जातीहे जैनशास्त्रमें मुख्यप-  
 णेकर चार संज्ञा करके प्रजाकी स्थिती बांधी  
 हे राज्यकाजके दंगपासकोपा उग्रकुल संज्ञाहे।

आवे कहाहे के फकत राजाके घरमें फायदा  
 करणेवाला कामदार प्रजाका दुस्मन होताहे उर  
 फकत प्रजाके घरमें फायदा करणेवाले मुत्सद्दीकूं  
 राजा निकाल देताहे इसवास्ते दोनोकों फायदे-  
 वंद प्रधान मिलणा मुसकिलहे वणिक् प्रधान अ-  
 थवा अश्वपतिकूं मंत्री पदमें स्थापन करणा कारण  
 अश्वपति जातीवालोकूं राजन्यवंशता होणेसें  
 सूरवीरता प्रमुख राज्यधर्म अन्याससें तुरत  
 आताहे कारण बीजकी तासीर उर सोवतका  
 असर प्रायें रहताही हे दुसरे असपति लोकोमें  
 वर्तमान समयमें प्रायें व्यापारी होणेसें व्यापा-  
 रमें नफे नुकसानकूं पहलेहीसें विशेषकरके देश  
 क्षेत्र काल जावका पूर्वापर विचारके कारण बने  
 विचक्षण होतेहे व्यवहारमें कोमीकानी मुखा-  
 यजा नही करनेहे किसी कविने कहाहे  
 बाणयो विणजन ठोमसी जो स्वर्गापुर  
 जाय लेग्या करता रामसें टक्का पेसा खाय  
 ? इगवाम्ते जिसकूं नफे नुकसानका ख-  
 याज हो मृदुनाथी शत्रुसें सूरवीर संग्राम-  
 मर्हि दृढनवाला मर्वकला कुशल अनिमान-  
 रहित ग्नाका नक प्रजारक्षक दया धर्म सर्वज्ञ  
 बचनकी आनायाजा राजाके अश्वपती जाती

बालाही भंत्री करणा ये सूरता तथा व्यवहारी  
 शंभाशास्त्रकी निपुणता उर अन्य लोकोमें प्रायें  
 थोमे मिलेंगें वणिक जातिकी इतनी चपलता  
 हम मरुधर गुर्जर कच्छ पंजाबादि देशवालोकी  
 देखीहे एक हिसाब अंग्रेजी पढे पुरुषकों  
 करणा बतलावे वोही हिसाब एक पारसी पढेकूं  
 करणा बतलावे उर वोही हिसाब महाराष्ट्र  
 बंगालादि देशवालोंकों करणा बतलावे वही  
 उक्त वणिक तथा अश्वपतिसें करणा एक बख-  
 तही बतलावे तो सबसें पहिले अश्वपतादिक  
 महेश्वरी अग्रवाल कहेगा कुछ देरसें अंग्रेजी-  
 वाला कहेगा बाद महाराष्ट्र बंगाल कहेगा सबके  
 पीछेनी केवल फारसी पढा कहेगा शंका होय  
 तो पातवाण देखें वणिक तथा अश्वपतादिकके  
 साथही अस्ति १ मसी २ ऋषी ३ कर्म संसारमें  
 चलताहे व्यापारी बगेर अन्य वर्णका निर्वाह  
 उर संसारधर्म चळणा दुसवारहे व्यापारीतो  
 उर वर्णके सारे प्रायें नही रह सकतेहे बाकी  
 तो अपणे २ कर्मकर्ता नही होवे तो प्रलयका-  
 लकी मर्यादा हो जातीहे जैनशास्त्रमें मुख्यप-  
 णेकर च्यार संज्ञा करके प्रजाकी स्थिती बांधी  
 हे राज्यकाजके दंभपासकोका उग्रकुल संज्ञाहे ?

संसारि गृहस्थयोके पौनस संस्कार करी  
 गृहस्थी गुरुकी जोग कुलसंज्ञाहे २ राज्यकर्ता-  
 के परवारवालोको राजन्य कुल संज्ञाहे ३ शेष  
 सर्व प्रजा व्यवहार शिल्प कर्मादिकर्ताओंको  
 क्षत्रिय संज्ञाहे ४ इन चारोंही वर्ण व्यवस्थासें  
 वज्रित सर्व मोह कंचनकामनीके त्यागी जिज्ञा  
 जोजी वो जती साधू इन चारोही वर्णवालो-  
 का संसारसे उच्चार करणेवाला गुरुहे वणिक  
 व्यापारी लोकोको चाहिये अच्छा शुद्ध व्यापार  
 करणा जिससे धर्मकुं विरोध नही आसके इस  
 बातपर श्राद्धविधीमें ऐसी गाथा लिखीहे  
 ॥ गाथा ॥ व्यवहारसुद्धिदेसाइ विरुद्धचाय उ-  
 चियचरणेहिं तोकुणइ अत्यर्चितं निवाहितो  
 निग्रं धम्मं ॥ अर्थ-याने गृहस्थ श्रावक धन  
 पैदा करणेसंबंधी विचार करे उसमें तीन बात-  
 पर जरूर ध्यान रखना चाहिये एक तो धन  
 बगेरह जमा करणेका साधन जो व्यवहार  
 ठमकी निर्दोषता रखणी रुजगार करते वरत  
 मन वचन काया सीधा रखणा कपट नही क-  
 रणा जिम देसमे रदता होय उस देसमें माने  
 लोकविम्वद कृत्य नही करणा तीसरे उचित  
 जरूर करणा इन तीन आनोंका धिस्नार

हम आगे करेंगे इन तीन बातोंकां दिलमें रखता हुआ धनकी चिंता करणी चौथी ये बात है अपने जो पहले अंगीकार कीयाहे व्रत सिंदम सो लोभके बस उनकी खंमना न करणी नृलकेनी हरकत नहीं लगणे देणा संसारमें ऐसी चीज थोमी होगी सो धनसँ न मिल सकती होय इसवास्ते बुद्धिवान पुरुषोनें सब तरेके यतनके साथ धन जमा करणा धन चिंता करणेका हुकम आगम देता नहीं कारण मनुष्य-मात्रोंके अनादि कालकी परिगृह संज्ञासँ अपने कर्मके प्रेरणासँ जीव करताहे केवली कथित आगम ऐसे सावद्य व्यापारमें जीवोंकी प्रवृत्ति किसवास्ते करवावे पूर्वपरचित अनादि संज्ञासँ करते हुयेकुं धर्ममें बाधा नहीं आवे ऐसी आज्ञा जिनागम देताहे लोक जितना लाखों उद्यमों सँ रातदिन संसारी काम साधताहे उसके लाखमें हिस्से जो उद्यम धर्ममें करे तो तोक्या मिलणा बाकी रहे मनुष्यकी आजीविका १ व्यापार २ विद्या ३ खेती ४ गाय बकरा बगेरे पशुओंका पालणा ५ पलाकोशल ६ सेवा ७ उर निक्षा ये सात उपायसँ होतीहे उसमें वणिक लोक व्यापारसँ वैद्य ज्योतषी व्याक-



रणी वेदपाठी प्रमुख अपनी विद्यासँ आज्ञा-  
 विका करतेहैं जाट कुणबी प्रमुख खेतीसँ गो-  
 बाल धनगर राईके राठलोक गाय वगेरेके रस्ते-  
 णसँ चितारे सुनार सुथारकूँ आदि लेकर  
 होत लोक अपनी कारीगरीसँ नोकर चाकर  
 वगेरह सेवासँ उर जिझारी लोक जिज्ञासँ  
 अपनी १ आज्ञाविका करतेहैं उसमें धी तेल  
 धान कपास मूत कपडा तांबा पीतल वगेरह  
 धानू मोती जवाराहित रुपिया पेसा मोहर  
 वगेरह किरियाणके जेदसँ अनेक तरेके व्या-  
 पारहे तीनसे साठ जेद किरियाणकेहे उर  
 अंग्रेजी राज्यकी चीजोंकी व्यापारमें अनेक  
 किस्महे इसीवास्ते भ्रातृविधीकी टीकामें लिखा  
 हे पेटेके जेद गिणना चाहे तब तो व्यापारकी  
 संज्ञाका पार नही आताहे व्याजवट्टानी व्या-  
 पारमेंही गिणा जाताहे ओषध रस रसायण  
 चूर्ण अंजन वास्तु शकुन निमित्त सामुद्रिक  
 धर्म अर्थ काम ज्योतिष तर्क प्रमुख जेदसँ ना-  
 नाप्रकारकी विद्याउंहे इनोंमे एक तो वैयक  
 ज्ञान नंग अनार पसारीपणा ये दोय रुजगार  
 होणके कारण विशेष गुणकारी पणके  
 जनवान बेमार पने अथवा एमानी

दुसरें प्रसंगमें पसारीकूं वैद्यकूं बहोत खान  
 ठर मान मिलताहे सोही बात वैद्यकमेंनी लि-  
 खताहे-रोगकाले पिता वैद्य-अर्थात् बेमारी हो-  
 णेपर वैद्यवापसैनी ज्यादा माजम देताहे रो-  
 गीका मित्र कोण वैद्य राजाका मित्र कोण  
 हांजीहां हजूर सब फरमातेहे एसा कहणे-  
 वाले संसारके दुखसैं मरे हुयेका मित्र कोण  
 मुनिराज ठर धन खोबेहे हुये आदमीका  
 मित्र कोण ज्योतपी व्यापारमे व्यापार गांधी  
 याने पसारीकाही सरसहे कारण टकेमें खरी-  
 दी हुई चीज बखत पम्नेपर सोटकेमें बेचताहे  
 वैद्यकूं पसारीकूं खान ठर मान बहोत मिलताहे  
 इसवास्ते एसा कारण पाया जाताहे जिसकूं  
 जिस रुजगारमें ज्यादा खान मिलताहे तो वो  
 जीव बेसा कारण हमेसां चाहताहे सोही बात  
 नीतीमें लिखीहे योछार सिपाही रणसंग्रामकी  
 चाह रखताहे वैद्य धनवानके बिमारीके आरा-  
 मीकी चाह रखताहे ब्राह्मणलोक अपने  
 जजमानकी मरणेकी चाह रखताहे ॥

हुदा-जो जगपृष्ठे व्याहविरतकूं नाइपुठेसूठ ॥

जैनमुनिसुखशांतापृष्ठे ब्राह्मणपृष्ठेमुंठ ॥ १ ॥

मनमे धन जमाका जोनि केवल इच्छावाला

करतेहे दुसरे मासिक पगार राज्यसें मिलताहे  
उपधी बणाणी नही पन्ती पैसाजी रईसका  
लगताहे जो बुजावे फी देवे देसी वैद्योंको तो  
मूर्ख लोग बदनामीजी देदेतेहे नाकतरोके सां-  
मने चूं नही करते वैद्यक क्रियाके संपूर्ण शास्त्र-  
का जाणकार होय सो वैद्य संसारमें उत्तम  
गिणा जाताहे सोही लिखाहे ॥ व्याधेः तत्त्व  
परिज्ञानं वेदनायाश्चनिग्रह ॥ एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वं  
नवैद्यप्रभुरायुषः ॥ १ ॥ रोगकूं जाणणा उस  
रोगकूं मिटाणेवाली उपधीका देणा वैद्यपणेकी  
इतनीही खूबीहे लेकिन् वैद्य आयु देणे समर्थ  
नही रोगी जबही आराम होताहे जब च्या-  
रांही पायें पूरेही मिलतेहे जेसें रोगकी परि-  
क्षाकारक वैद्य वेसीही दवाई जो कनी पुराणी  
दवा चाहीये उर नई मिले नई चाहीये उर  
पुराणी मिले अथवा बणाणेमें कसर रहजावे  
तो दवा अमृतरूपनी जहिर होजाती हे तीमरा  
रोगीका परचारक निगेंदार्तीवाला पूरा चा-  
हिये कहे मुजब हिफाजत रखे चोथा रोगी  
वैद्यके कहे मुजब दवा लेवे उर पध्य करे तनी  
छुरस्त होजानाहे इन चारोंमेंमें एकमेंनी क-  
सर होगी तो आगामी नही होगी असाध्य जब

जाणा जावे तो उपचार वैद्यकूं करणा अंगीकार-  
 ही न करणा कदास रोगीके स्वजन बहोत आ-  
 ग्रह करे तब असाध्य दशा कहणेवाला दवा  
 देवे तो वैद्यकूं दोष नहीं रोग तीन तरेसे हो-  
 ताहे पूर्वकृत पापके उदयसें वो दवाइसें मिट-  
 नेवाला नहीं उसका इलाज ध्यान जप पुन्य  
 सुपात्रकी जक्ति प्रमुख धर्महे १ दुसरें मावापके जो  
 रोग होताहे सो संतानके होताहै अथवा कुट आं-  
 ख छुखणा खाज सीनला बोदरी सुजाक फिरं-  
 गादिक संसर्गो होताहे इसवास्ते नलशली संस-  
 र्गज कहलाताहे २ इसका इलाज संसर्गजकाहे  
 नलशली मिटणा मुमकिलहे ३ तीसरा कायक  
 तथा मानसक रोगहे मिथ्या आधार मिथ्या  
 बिहारसे वात पित्त कफादिकसें होणेवाले तेसे  
 काम शोक जयसे होणेवाले जिसमें साध्यका  
 इलाज सहज हे कष्ट साध्यका इलाज दुर्ब हो-  
 ताहे असाध्य रोग त्याज्यहे देश क्षेत्र काल  
 अवस्था ठर अग्निबलकूं विचारे फेर अधर्मकूं  
 नहीं प्राप्त होणेवाला इलाज करे ज्योतप निम-  
 तादिक शास्त्रसें आजीविका करणेवाले पुरपकूं  
 यथार्थ फलही कहणा चाहीये जो फलित शा-  
 स्त्रमें लिखा होवे नास्तिकादिकोने अपने क-

द्विपत्र शास्त्रोंमें फलादेश ग्रहोका नहीं मानाये  
 अनेक कुतुहलियां लगाकर फला देशकी नास्तित-  
 ता सिद्ध करीहे हमने प्रत्यक्ष प्रमाणमें वैश्यका  
 ज्योतिषी देखेहे तो विगर प्रश्न कीये छन आये  
 पुरानी मनचिन्ता बात कहतेहे देखावाइमें पंच  
 फलीका पढ़ाहुवा ज्योतिषी अनीनियमानहे  
 इस विचारका पत्रन पाठन कम होणोगें ज्योति-  
 षीकीही बात कमभिद्यगीहे ये दोष शास्त्रोका  
 नहीं पढ़ा हुआ होये तो सत्य कहणा मिलनाहे  
 सुर्वप्रज्ञाी संछमज्ञाी ज्योतिष करंदाविक  
 मणिव शास्त्रां नद्वानाहुमंहिता चमत्तमणि प्रमुख  
 फलादेशके शास्त्रां नमवान महावीर सर्वज्ञ  
 कहोहे हे मीनम शङ्काविकोंके शून्य ज्ञानुत फल  
 तो में कहनाहे तो मनष्योंके पूर्वकृत पापपुण्यके  
 फल मनष्योंके ज्ञाननिवासने इन सद्गोंके निमा-  
 नहे पदार्थ कहनाहे शून्याशून्य फल सद्गोंका  
 नही है हे स्वकृत फलोंकाहे निमित्तके उक्त  
 फलहे दिग्ग १ सुखाय २ जीवति ३ स्व ॥  
 ४ सुख ५ स्वयं ६ महाशुद्धिकादिह त्रिद्वयके  
 ७ स्व स्वकी ज्ञेयोंमें पाप पापपाप फलकाहे  
 निमित्तके सद्गोंकाहे उपादिकारण कहें मीदी  
 फलहे १ हे २ सुखहे ॥ निमित्तके स्वयंस्वयं

प्रत्ययोत्थानकारणौ निदानमाहृष्यार्यै प्राश्रूपं-  
येनलक्ष्यते ॥ १ ॥ निमित्त १ हेतु २ आद्यतन  
३ प्रत्यय ४ उत्थान ५ कारण ६ निदान ७ ये  
सब पर्यायवाचक नामदे जिसकरके होनेवाले  
अहवाल पहले मात्रम होवे उस निमित्तके  
इतने नाम एकार्थका कहणेवालाहे इन ग्रहोकी  
दूर दशा जब आवे तब अशुन कर्मका उदय  
आया ऐसा समझके अगरे दोसरहित तीर्थ-  
करकी नक्ति पूजा सुसाधुकी सेवा शीघ्र व्रत  
तप श्रुननावनायुक्त जप करे जेसा नञ्वाहू  
रवामीने नवग्रह शान्तिस्तोत्रमें लिखाहे उनके  
वर्ण जेमाही अनाथ दीन दुःखीयोकां दान  
करे ग्रहोके आम्नीये वणके जो पोरपत्री निक्षा-  
की उगाड़ करे ठनोंसँ सावचेत रहे उरनी जो  
संसारी कार्य साधनके अनेक शास्त्रहे उसकुं  
गुणता उर पढता हुवा हंश जेसी तत्वबुद्धि  
हेय झेयपणा करे उपादेयतो सर्वथा प्रकारे  
आप्तका वचनरूप शास्त्रहे सोही करे नंदी सू-  
त्रमें लिखाहे मिथ्याश्रुत सम्यक दृष्टि बांचे तो  
सम्यक शास्त्र होके परिणमे उर सम्यक शास्त्र  
मिथ्या दृष्टी बांचे तो ॥ मिथ्यात्वमश्परणमें  
यदुक्तं नीती ॥ उपदेशोद्दिमूर्खाणां प्रकोपायन

शांतये ॥ पयपानजुजंगानां केवलं विपवर्जनं ॥ १ ॥  
 मूर्खकं उपदेशनिश्चे करके क्रोधकेवास्ते होय  
 शांतिकेवास्ते नहीं जेसैं अमृतरूप दूध सांपकूं  
 पिलाणेसे निकेवल जहरकूंही वधावे एसां जाणना  
 जेनोक्त शास्त्र आचार्योंके रचे सब तरेके मोजुदहे  
 वणे जहांतक उनकाही परिचय करे तो मि-  
 थ्यात्व नहीं बधे सब पुरपोकी बुद्धि हंस जेसी  
 नहीं जेसे कहाहे ॥ कुसंगासंगदोपेण काष्ठवंटा  
 विटंबना ॥ अगर सम्यक्तत्व जिसकूं पहली प्राप्त  
 होगयाहे एसोकी बुद्धि कुसंगसैं अस्तव्यस्त  
 नहीं होती हे जेसे कहाहे ॥ हीयोहोवेहाथ  
 कुशंगीकेतामिलो चंदनभुजंगासाथ कालोना  
 होयकिसनीया ॥ १ ॥ सुसाधू पंक्ति चतुरों  
 की संगतही श्रेष्ठ हे ॥ कहानहोयसत्संगसे  
 देखोतिलउरतेल जातिवर्णसबमिटगयो पाथो  
 नाम फुलेल ॥ १ ॥ अब खेती तीन तरेंकी  
 होती हे एक तो वरसाद के जलसैं होणेवाली  
 दूसरी कूवा नदी तलाव वगेरोंके जलसैं  
 तीसरी दोनोके जलसैं होणेवाली गाय  
 त्रेंस ऊंठ घोडा बकरी बलद हाथी वगेरे जा-  
 नवरोके पालणंसैं जो आजीविकाकरणी सो  
 पशुपक्षा वृत्ति कहलातीहे वो जानवर बहोत

तरेके होतेहे खेती उर पशुरक्षा वृत्तिसँ आजी-  
 विका करणा विवेकी पुरुषोके लायक नही  
 कहाहे हाथीयोके दांतोमें घोमोके खुरोमें राज्य  
 लक्ष्मीहे बलदोके खंधोपर खेमृतोकी लक्ष्मीहे  
 तरवारकी धारपर सुभटोकी लक्ष्मीहे सज्जे उर  
 शिणगारे हुये स्तनोंपर वैश्यायोकी लक्ष्मी रहती  
 हे कदाम कोइ दुसरी आजिविका नही होय  
 उर खेतीही करणी पमे तो बोणेका समय  
 बराबर ध्यानमे रखणा तेसँही पशुरक्षा वृत्ति  
 करणी पमे तो मनमें बहोत दया रखणी कहाहे  
 जो करपणी बीज बोणेका समय जमीनका जाग  
 विचार किसमें केसा पाक आवे ऐसा विचार  
 जाणे रस्तेके ऊपर खेत होय सो ठोम देवे  
 तब जान होताहे धनके वास्ते जो पशुरक्षण  
 करता होय तो दयाके परिणाम ठोमणा नही  
 खसी करणा नाक बाँधना आप जाग्रतपणे  
 करके ठविछेद वर्जना अब शिल्पकला सो  
 जातकीहे कुंनार सुतार लुहार चित्रकार उर  
 बस्त्रकार इन कारीगरोके एकेक पेटेके बीस २  
 नेद गिणणेंसँ सो होतेहे उर न्यारे २ कारी-  
 गरोकी गिणतीसँ शिल्पके अनेक नेदहे आचा-  
 र्यके उपदेशसँ होणेवाली शिल्प कहलातीहे



मुख्य पांच शिल्प ऋषन देवके हुक्मसे चलता आयाहे आचार्यके उपदेश विगर लोक परंपरासे चलता आया खेती व्यापार सो कर्म कहलाता हे खेती व्यापार पशुरक्षावृत्ति कर्ममे गिणे गये बाकी सब कर्मादिक शिल्पमें आजातेहैं पुरषोंकी स्त्रियोंकी कलाउं कितनी एक तो विद्यामें कितनी एक शिल्पमें आजातीहे कर्माका सामान्यसें चार प्रकारहे बुद्धिसें काम करणेवाले उत्तम हाथसें काम करणेवाले मध्यम पगसे करणेवाले अधम उर सिरसें बोझा उठाके काम करणेवाले अधमसें अधम जाणना बुद्धिसें काम करणेवाले पर दृष्टांत लिखतेहैं चंपा नगरीमें मदननांमे धनसेठका लम्काथा उसने बुद्धिवान आदमीसें पांचसों रुपये देकर एक बुद्धिली दोजणे लम्ते होय वहां खना रहणा नही जब भित्रोने ये बात सुणी तो मस्करी करणे लगे बापनेजी उलंजा दीया तब मदन पीठा रुपये लेणेकूं शिक्षा पीठी देणेकूं गया तब बुद्धिवानने कहा तूं जो ऐसा कबूल करे जहां दोजणे लम्ते होय वहां खना रहूंगा तो रुपये पीठा देदेताहूं उसने कबूल करी रुपये पीठे दिये एकदिन रस्तेमें दो सिपाइ आपसमे लम्तेथे मदन वहां खना रहा आ-

खिर उन दोनोंनें मदनकूं गवाह बनाया ठर  
 कहा जो मेरी गवाह नहीं जरेगा तो तेरी खबर  
 लूंगा दोनोंनें एकांतमे धमकाया मदनने वा-  
 पसैं कही इतनेमें तो दोनोंने फरियादकी पो-  
 लिसके अंदर मदनकूं गवा लिखाया वापने  
 देखा ठोकरेकूं ये छुष्ट मार मालेंगें घनराकर  
 उसही बुद्धिवानके पास गये उसने कहा लाख  
 रूपे लूंगा बचादूंगा तब सचहे मरता क्या नहीं  
 करता तब बेसाही दिया उस बुद्धिवानने  
 उसको सिखाया नूं पागलपणा पहचनेहीसे क-  
 रणे लगजा ऐसीही कीया करणेंसे बचगया  
 ऐसीही हाल इस बखतमें बने २ अंग्रेजी पढे  
 हुये वाल्स्टरोका देखणे ठर सुणणेमे आताहे  
 इसको बुद्धिका कमाणा कहतेहे इसबजे बुद्धि-  
 बानीके मुझे अनेक दृष्टांत यादहे लिखनेसे ग्रंथ  
 बढजायगा ज्यादा देखणा होय तो अजयकुमार  
 रोहिक बगेरोके चरित्रसें जाणना जिसमें मति  
 ज्ञानसंबंधी चार बुद्धि होतीहे सो उत्पातकी  
 १ वैनेयकी २ कार्मणकी ३ पारिणामकी ४ वो  
 अदमी बखत पम्नेपर प्रत्युत्पन्न मति होताहे  
 आगूंके तो नालिक बचन ऐसे सुणनेमें आतेहे  
 अग्रिम बुद्धिवानिकजन पिठल बुद्धिविप्र सदा

मुख्य पांच शिल्प ऋषि देवके हुक्मसे चलता आयाहे आचार्यके उपदेश विगर लोक परंपरासे चलता आया खेती व्यापार सो कर्म कहलाता हे खेती व्यापार पशुरक्षावृत्ति कर्ममे गिणे गये बाकी सब कर्मादिक शिल्पमें आजातेहैं पुरपोंकी स्त्रियोंकी कलाउं कितनी एक तो विद्यामें कि-  
तनी एक शिल्पमें आजातीहे कर्मोंका सामान्यसें चार प्रकारहे बुद्धिसें काम करणेवाले उत्तम हाथसें काम करणेवाले मध्यम पगसे करणेवाले अधम उर सिरसें बोझा ठगके काम करणेवाले अधमसें अधम जाणना बुद्धिसें काम करणेवाले पर दृष्टांत लिखतेहैं चंपा नगरीमें मदननामे धनसेनका लम्काथा उसने बुद्धिवान आदमीसें पांचसों रूपे देकर एक बुद्धिली दोजणे लम्मे होय वहां स्वमा रहणा नही जब मित्रोने ये बात सुणी तो मस्करी कण्ठे लगे वापनेजी ठजंजा दीया तब मदन पीडा रूपे लेणेकूं शिक्षा दीनी देणेकूं गया तब बुद्धिवानने कहा तूं जो एसा कबुल करे जहां दोजणे लम्मे होय वहां स्वमा रहंगा तो रूपे पीडा देदेताहूं उसने कबुल करी रूपे पीडे दिये एकदिन रस्तेमें दो सिपाइ आगमे लम्तेथे मदन वहां स्वमा रहा आ-

जाणना बोझ ठगनेवाले वगैरे लोक  
कमाके खातेहे अथ नोकरीजी च्यार  
होतीहे १ राजाकी २ राजांके अमलदार  
३ श्रेष्ठ साहुकारोंकी ४ चौथे सब  
लोककी राजाकी नोकरी रातदिनपर  
जोगणी परमणेके कारण हरकिसीसे वण  
मुसकिलहे सोही बतलातेहे अगर नोकर  
नही तब तो गुंगा कहलाताहे जो खुल्ला  
प्राय देता हुवा बोलेतो धकवादी कहलावे जो  
जीक बैठे रहे तो धीगा कहलाताहे जो दूर  
बैठा रहे तो बुद्धिहीन कहलाताहे मालक कहे  
सो सब सहन करे तो कायर कहलाताहे जो  
नही सहे तो कमजात कहलाताहे इसवास्ते  
योगी लोकनी जिसकुं नही जाणसके ऐसा  
वाधर्म परम गहनहे जो अपनी बढोतरीके  
स्ते सिर नीचे झुकावे अपनी आजीविका-  
प्राणनी देणे तइयार होय मुखकेवास्ते  
होय नोकरा करणेवाले आदमी  
होगा पराई नोकरी करणी सो  
ऐसा केइयक लोक कहतेहे  
कुनेकी वृत्तिसैनी  
पूंठसै गुमामंद परताहे

सुबुद्धिसे बना तुरतबुद्धि तुर्क ? लेकिन कोइ  
 अपेक्षा आश्री कोइ इनांमे किसी क्षेत्रमें होवे  
 ताजबानही इस वखत तो बुद्धि उर उद्यम  
 संप उर लक्ष्मी साहस उर धैर्य उर शौर्य  
 अंग्रेजोकी जितनी तारीफ करें  
 थोमीहे एसाहे तनी तो भारतके  
 वादस्याह वणे हुये विजय मंका  
 रहेहें अगले जमानेकें इतिहास वांचणेसँ  
 स्तेश्वय मालम देताहे इस आर्यावर्तवालोमें  
 उरने पाये जातीथी अगर फेरनी वि-  
 अथमसे अधभाठनकी वृद्धि होजाय तो ऊपर  
 पर दृष्टांत लिखतहोणी मुसकिल नही अंगरे-  
 सब वास्का लम्काथा आसिल कीयाहे सो वि-  
 का पठन पेरुपे देकर एक याहे पारलामिन्ट सजा  
 खी सब बात सजा रहणा नक्ष देशमे लंदन राज-  
 ने जोजो काम हे मस्करी कजा अणकके राज-  
 बुद्धिके उद्यमसेही पादन पीठा रुथ कौशलसना  
 आज विद्यमानमे इंगलि बुद्धिवानने बंदानामकी  
 नीमेंहे ये बात नइ नहीहे राणे लम्ते हंद्दी बु-  
 से प्रधानोके पुत्र गृहं उसने ६ तेसँ  
 पुत्र गृहं उसने ६ तेसँ  
 गजाल च्यारा दो सिपाया  
 कुमार दाम्पत्य आ-

एवाले जाणना बोझ उठानेवाले बगैरे लोक  
 सिरसे कमाके खातेहे अब नोकरीजी च्यार  
 तरेकी होतीहे १ राजाकी २ राजाके अमलदार  
 लोकोंकी ३ श्रेष्ठ साहुकारोंकी ४ चोथे सब  
 जातिवालोककी राजाकी नोकरी रातदिनपर  
 बसता जोगणी पन्हेके कारण हरकिसीसे बण  
 आणी मुसकिलहे सोही बतजातेहे अगर नोकर  
 बोले नहीं तब तो गुंगा कहलाताहे जो खुल्जा  
 जबाब देता हुवा बोलेतो बकवादी कहलावे जो  
 नजीक बेंठा रहे तो धीगा कहलाताहे जो दूर  
 बेठा रहे तो बुझिहीन कहलाताहे मालक कहे  
 सो सब सहन करे तो कायर कहलाताहे जो  
 नहीं सहे तो कमजात कहलाताहे इसवास्ते  
 योगी लोकनी जिसकुं नहीं जाणसके ऐसा  
 सेवाधर्म परम गहनहे जो अपनी बढोतरीके  
 बास्ते सिर नीचे झुकावे अपणी आजीविका-  
 वास्ते प्राणनी देणे तइयार होय सुखकेवास्ते  
 दुखी होय ऐसे नोकरी करणेवाले आदमी  
 जेसा कोण मूर्ख होगा पराइ नोकरी करणी सो  
 श्वानवृत्ति जेसीहे ऐसा केइयक लोक कहतेहे  
 लेकिन हम तो जाणतेहे कुत्तेकी वृत्तिसँजी  
 नोकरी बुरी कुत्ता तो पूँठसँ खुसामंद करताहे

सुबुद्धिसे वना तुरतबुद्धि नुर्क १ लेकिन को  
अपेक्षा आश्री कोइ इनोंमे किसी क्षेत्रमें हो  
तो ताजवनही इस वखत तो बुद्धि उर उद्यम  
उर संप उर लक्ष्मी साहस उर धैर्य उर शौर्य  
सर्व आश्री अंग्रेजोकी जितनी तारीफ करे

जितनीही थोनीहे एसाहे तजी तो भारतके  
तीन <sup>ए</sup>खंनके वादस्याह वणे हुये विजय मंका  
वजा <sup>म</sup> रहेहें अगले जमानेके इतिहास वांचणेसं  
खूब <sup>म</sup> विश्वय मालम देताहे इस आर्यावर्तवालोमें  
ये सब बातें पाये जातीथी अगर फेरजी वि-  
द्याका पठन पठनकी वृद्धि होजाय तो ऊपर  
लिखी सब बातें होणी मुसकिल नही अंगरे-  
जोने जोजो काम <sup>ह</sup> सिल कीयाहे सो वि-  
द्याबुद्धिके उद्यमसेही पायाहे पारलामिन्ट सना  
जो आज विद्यमानमे इंगलि <sup>प</sup> देशमे लंदन राज-  
धानीमेहे ये बात नड नहीहे रा <sup>जा</sup> श्रेणके राज-  
गृही नगरीमेंनी पांचसे प्रधानोके <sup>१</sup> कौशलसना  
जिसमें मुख्य मंत्री राजाका पुत्र <sup>२</sup> दानामकी  
वैश्य जानकी राणीका अंगजान चार <sup>३</sup> बु-  
द्धिका धरणवाला अथवा कुमारथा व्यापार <sup>४</sup> तमें  
शिल्पवाले लोक हाथमें कमाणेवाले जाणना  
हलकारे चपगामी कामीद दोगरह पगोंगे कमा-

णेवाले जाणना बोझ ठठानेवाले बगेरे लोक  
 सिरसे कमाके खातेहे श्रव नोकरीनी च्यार  
 तरेकी होतीहे १ राजाकी २ राजांके श्रमलदार  
 लोकोंकी ३ श्रेष्ठ माहुकारोंकी ४ चोथे सब  
 जातिवालोकी राजाकी नोकरी रातदिनपर  
 बसता नोगणी पम्णेके कारण हरकिसीसे घण  
 आणी मुसकिलहे मोदी बतलातेहे अगर नोकर  
 बोले नही तब तो गुंगा कहलाताहे जो खुब्जा  
 जबाब देना हुवा बोलेतो बकबादी कहलावे जो  
 नजीक बेंठा रहे तो धीठा कहलाताहे जो दूर  
 बेठा रहे तो बुझिहीन कहलाताहे मालक कहे  
 सो सब सहन करे तो कायर कहलाताहे जो  
 नही सहे तो कमजात कहलाताहे इसवास्ते  
 योगी लोकनी जिसकुं नही जाणसके एसा  
 सेवाधर्म परम महनहे जो अपनी बढोवरीके  
 बास्ते सिर नीचे झुकावे श्रपणी आजीबिका-  
 वास्ते प्राणनी देणे तइयार होय मुरखेबास्ते  
 दुखी होय एसे नोकरी परणेवाले आदमी  
 जेसा कोण मूर्ख होगा पराइ नोकरी करणी सो  
 श्रानवृत्ति जेसीहे एसा केइयक लोक कहतेहे  
 लेकिन हम तो जाणतेहे बुनेकी धनिसैनी  
 नोकरी बुरी कुजा तो पंठसँ खुमानंद परताहे





राजा सत्पुरषोके मानने योग्य होताहे खराब  
 चाल चलणके लोक कत्ती बुरे काम करणेकी  
 सल्लाहनी देवे तोनी राजा माने नही इसी-  
 वास्ते लोकोंमें ये बातकी कहणा बटहे रावणके  
 पास साहूकार प्रधान सल्लाह गीर नहीथा  
 तबही तो लंकाका राज्य ठर ज्यांन खो बेठा  
 हमारी समझसें तो इसपर इननाही कहणा  
 बटहे अन्याईकी जय नही होती मालककूं  
 चाहीये नोकरके गुणके माफक उसका आदर-  
 सत्कार करणा क्योंकि अठे ठर बुरे सबोंको एक  
 जेसे गिणणेसें जो उद्यमी साहसीकहे उन  
 नोकरोका दिल खट्टा होजाताहे मुणतेहेकी  
 महेश्वर राजाका दिवान टीपू सुखताण नोकर-  
 रोका बमाही कदरदानथा इसवास्ते दक्षिण  
 प्रांत देशोका मन्त्रीक राजा वणगयाथा नोकर-  
 रोकों चाहीये सो नक्ति ठर चतुराडमें सावचेत  
 रहे नक्तिवान होय लेकिन बुद्धिहीन ठर का-  
 यर होय तो कोण कामकाहे ठर बुद्धिवान सूर-  
 वीर नोकर होय ठर नक्त मालकका नही होय  
 तो मालककेक्या कामका इसवास्ते ये तीनोंही  
 गुण नोकरमें चाहीये तब राजाके संपत्तिमें  
 ठर विपत्कालमें वो नोकरका मखहे ये तीन



नहि करे उसीमोकेकी बात होय उर नही  
 अरज करेसें आगे विगारु होणेका काम होय  
 तब वदोत आजीजीसाथ बात वाक्य कर देवे  
 जेसें गुमानसिंहवेद प्रधान सुगनकुवर पारवती-  
 जी पद्मायतकी लम्कीका देहांत होणेसें बी-  
 कानेरके नृपति राठोरु सिरदारसिंहजी जब  
 दसरराहेकी सवारी तथा जोजन कीया नही तब  
 बने ओकानुरोंको हेतुयुक्तियोसें समझाकर  
 राज्यकार्य करवाया पीछे राजा साहिवने उस  
 प्रधानकी वदोत तारीफ करी अगर मुझे नही  
 समझाता तो उर राजपूतोमें मेरी लघुताइ  
 मालम पद्मती के बीकानेर महाराज पद्माय-  
 तकी संतानवास्ते दसरराहा नही कीया कारण  
 रामचंद्रकी दिग्विजय लोकीकमें दसरराहेकी  
 मानतेहे तबहीसे राजालोक दसरराहा करणा  
 सक्त कराहे राजालोक इस दिनकुं बना मंग-  
 लीक गिणतेहे इसीतरे अपणे मालककुं सम-  
 झाणा चाहिये इसीतरे राजाकी माता पाटराणी  
 कुमर मुख्य मंत्री राजाका गुरु उर द्वारपाल  
 इनोके संगती राजाकी तरेही वर्त्तावा रखणा  
 जेसे कोइ अक्लहीण ऐसा विचारे इस अंगा-  
 रकुं मेने सिखगाइहे अथवा मेंही जायाहुं सो

मुझे ये बालेगी नहीं ऐसा समझके अग्निसे  
 आ संगतपणा करे तो क्या अग्नि बालेबिना  
 ठोमे तेसैंही विचारे में इनको हिकमतसैं  
 राजदिजायाहे ऐसा समझके जो राजाकी  
 अवज्ञा हुकम अदूली करेगा अंगली राजाके  
 लेंगावेगा तो राजा बिगर सजा दीये नहीं  
 रहता इसवास्ते जेसैं वो प्रसन्न रहे खूबे नहीं  
 ऐसा चलणा किसी अदमीको राजा बहोत  
 मानता होय तो दिलमें गर्व नहीं करणा कारण  
 बहोत अहंकार विनासकर देताहे इसपर ऐसा  
 दृष्टान्तहे दिल्लीके बादशाहका बन्ना बजीर मन-  
 में ऐसा समझणे लगाके ये रासत भेरेही आ-  
 धारसैं चलतीहे ये गर्वकी बात उस बजीरनैं  
 किसी उमरावके सामने करी वो बात बादशा-  
 हतक पहुची बादशाहनैं उसकी बजीरायत  
 उतारकर एक मोचीके सुप्रतकरदी वो सही  
 करणेकी जगे लोहकी धींधणी जो मोचीयोके  
 जूते सीनेकी होतीहे उसकी कर्ता मतलब  
 राजा जिधर नजर करे उससेही काम लेकर  
 उसकूं बधा देताहे केयोकां बधाया ठर बधातेहे  
 राजाके प्रसन्न होणेंसैं ऐश्वर्य बधना कोण बनी  
 बातहे सांगेका खेत दरियाव अपने कुटुंबका

जरण पोषण जीवोंकी प्रतिपालना उर राजाकी  
 महरवानी इतनी चीजें तुरत दरिद्र दूर कर दे-  
 तीहे विक्रम संवत उगणीससैं चोदेकी गदरमें  
 जिनोने बने २ अंग्रेजोंकी ज्यांन बचाइ वो  
 अनी दलद्र त्यागके बने २ ऋद्धिबंत विद्यमानहे  
 सुखकी चाह करणेवाले ऐसे अनिमानी लोक  
 राजा बगेरोकी नोकरीकी बेजासक निंदा करो  
 लेकिन् राजाकी नोकरी विगर स्वजनका उछार  
 उर शत्रुठका संहार होताही नही गुमारपाल  
 राजा नागाथा तब वो सिर ब्राह्मणने सहाय  
 दीयाथा जब बखत पाके पीठा राजा हुवा तब  
 उसी बखत उस ब्राह्मणकुं जाट देशका राजा  
 बनायाथा जित शत्रु राजाका पोलिया एक  
 बखत राजाके सांपका उपद्रव दूर कराथा उस  
 राजाके लम्का नहीथा अंतमें उस देवराज  
 नारपालकुं राज्य देकर राजाने जैन दीक्षा ले-  
 कर सिद्धिपदपाया मंत्रवी नगरसेठ सेनापती  
 बगेरोका सब काम राजाकी नोकरीमें सना  
 जाताहे मंत्री प्रधान वजीर प्रमुखका काम ब-  
 होत पापमईहे उर फलनी कम्वाहे बणे जहां-  
 तक श्रावककुं वर्जना चाहीये क्खाहे जिस  
 अदमीके जो अधिकार सुप्रन कीया जावे ठ-



वालोंके फाके पन्तेहे इसपर कबीरजुलाहेका  
 दृष्टांतहे जेसँ कबीर जुलाहा प्रायँ विवहारीक जु-  
 ठ कम बोलताथा पगमीवणाके बाजारमेबेचणेगया  
 असलीदांम पांचरुपेकहे सबदिन फिरा किसी-  
 नेतीन किसीनेसाढेतीन च्यारसँ आगे नहीबढा  
 पूंजीमेंनी घाटा पमे जाण बेचा नही जब म-  
 कानपर आया कबीर संग्रह नही रखताथा  
 लाता तो खाता पूंजी काय मरखताथा दूसरे  
 दिन ठस पूंजीकाही सूतलाके बेजावणता रातफूं  
 नूखा रहा तब किसी पनोसणीने ये बात जाण  
 के शिक्षादी ठर कहा कबीर तेने एनमोज क्यों  
 बताया सात रुपे कहनेसँ दुनियांमें मफेके संग  
 पघमी विक जाती कबीर दुसरे दिन बेसाही  
 कीया तब बोही पघमी ठव रुपेमें दुसरे दिन  
 विकगइ तब कबीरने घर आके एक दुहा कहा॥  
 दुहा-साचेजगपतियायनही जुठेजगपतीयाय॥

पांचरुपेकीपाघमी ठवरुपयेविकजाय ॥१॥

इस वजेका जुठ बरतावा हमारे देसवालोंनें  
 अपणी पत गमाणे ठर ये जब ठर परजब बि-  
 गानेकों कर रख्याहे सच्चा बोलणेका विवहार  
 सबसँ उत्तम ठर बरकत करताहे इस नबमें  
 पेठ परनबमें गुनाहसँ बचना बाजे महर



उचितहै क्योंके ज्ञान दर्शनवाला ऐसा किसी  
 जैन श्रावणका दामनी गढ़णा श्रेष्ठहै उर मि-  
 थ्यात्वपणोकेके मूर्ख ऐसा राजा चक्रवर्त्तिकीनी  
 नोकरी करणी अर्च्छी नहीं किसीनी तरे निर्वाह  
 नहीं होता दीखे तब सम्यक्के पद्यग्याणमें ॥  
 वित्तीकंनारेणं ऐसा आगार गम्याहै जिसमें  
 बेसोकीनी नोकरी करना अपना शक्ति उर यु-  
 क्तीसं स्वधर्मका कष्ट दूर करणा जिस विजय-  
 पुरनगरमें विजयशेन राजा बसा मिथ्यावर्त्तीया  
 उस राजाके चंद्रदत्तनामि मंत्रवी बसा जिनभ-  
 णथा सत् गुरुके संयोगमें सर्वज्ञ कथिन धर्मकी  
 वाक्य कारी होणेमें ऐसा जिनधर्मपर दृढ़ श्रद्धा  
 होगइ सो अन्यकु देवोके वंदन पूजनका निय-  
 म का लीया एकदिन राजासं कथा नष्ट आ-  
 म्भणमें ये बात कह्यी तब राजा इस बातकी  
 परिक्षा करणेकु हुक्म दीया हे मंत्री  
 मो जन्मनक्षेत्र  
 कर्णेकु नुमकु ना  
 मान छनम इत्य नु  
 गजगदम मेकर दा  
 कदा तथागु  
 इत्यादिक

जब करचूका तब राजाके हुकम मुजब अब  
 उननोकोके संग चला विष्णु गृहपर पहुंचा  
 वहां जाकर अंदर प्रवेश करतेही अपनेपास  
 जो पुष्पट्टाथा सो जहां विष्णु उर लक्ष्मी वि-  
 राजमानथे उनोंके दरवाजेपर पन्दाकरके एक  
 पहरेदारकों बाहिर बैठा दिया उर उसको  
 कहा अंदर कीसीको जाणे मत देणा वहांसें  
 पूजापा योंकायों संग लेकर देवी अष्टादस  
 भुजीके गृहपर पहुंचा वहां अंदर जाके देखतेही  
 दरवाजे दोनो बंध करके एक पहरा नंगी त-  
 लवारका वहां बैठा दिया उर कहा किसीकूं  
 अंदर मत जाणे देणा वहांसें निकलकर विना-  
 यक गजाननके गृह पहुंचा अंदर जाके देखकर  
 सांगोकी कमर मंगाकर मंदिरमे ठिगकर दीया  
 वहांसे निकलकर रूद्र गृहपर पहुंचा अंदर जाके  
 देखकर ऐसी स्तुतिका काव्य पढा ॥ यतः ॥  
 अकंठस्यकंठेकथंपुष्पमालां ॥ विनानासिकायांक-  
 थंगंधधूपं अकर्णस्यकर्णेकथंगीतनादं ॥ अपादस्य  
 पादेकथंमेप्रणामं ॥ १ ॥      ऐसा स्तुति पढके  
 आगे जैन मंदिर गया जिन मंदिरमें प्रवेश  
 करके अंदर देखतेही पंचागप्रणामकर ऐसी  
 स्तुति पढणे लगा यतः ॥      प्रशमरसनिमग्नं

निशानजी नहि मूर्तिमें माजमदीया उर नही  
 उनअर्हत परमेश्वरकूं कजी किसीनें नग्न देखाथा  
 जब राजत्यागके योग लिया तब गहनावस्त्रादि-  
 क सबका मोहत्याग दीयाथा उर नग्न नहीं दी  
 खतेथे उनके जीवनचरित्र सुनोगे तब हे राजेंद्र  
 सब अज्ञानके पट खुलकर आस इश्वरकूं जाणो  
 गे जिसके पास नतो राग मोहकाचिन्ह स्त्री हे  
 उर नद्वेषकाचिन्ह शस्त्र हे उत्कृष्ट समतारसमे  
 मग्न प्रसन्न हे दोनुदृष्टीजिनोंकी ध्यान धारे  
 हुये चोरासीयोगके आसनमें मुख्य जो पद्मा  
 सनधारे हुये मसंपुरपद्मी शंशारसमुद्रके उच्चार  
 करणकूं नौका समान हे क्योंकि जो देव आप  
 ही कामरूप अग्निकुंभमें जलरहाहे वो अपने  
 सेवकोकूं शांतिपद क्यादेसकताहे जो पत्थरकी  
 नाव आपहीमूवजातीहे वोदुर्गमकूं केसंतागके  
 पार पाहचावेगी में आपके हुक्मसें पूजाका  
 सामान लेकर विष्णुके घरगया आगे देखातो  
 विष्णु अपनीस्त्रीकूं बगलमेंलियेहुवे शंशारके  
 विषयवासनामें प्राप्तथा तब मेने देखा कोइनी  
 अदमी अपनी स्त्रीमें एसीकुचेष्टाकरताहोय  
 कदाम अकम्मान किसीकी नजरपकजायेतो  
 अदमी आंखमूचकर पीगालोटजाताहे क्योंकि

नीतिमें लिखाहे नजाआदमी बोहीहे जोपरा  
यापमदा टके इसवास्ते हेराजेंऊ पूजनीकपुरप  
होके एसी कुचेष्टा कमेंके बसकरनेलगजावे  
तब भेनें पमदा टकदीया पहरा इसवास्तेबिठ  
लाया सो ठर कोइ भूलके चलाजावेगा तो  
इनोकी लज्या जावेगी उहांसे देवीकेगृहमें गया  
तो उहां एसादेखनेमें आया बोचंमी किसी  
अदमीका खूनकीयाथा सो उसकामस्तक खून  
झरता हुवा हाथमें लेरखवाथा इसवास्ते स्मृती  
योमेंलिखाहेकी खूनीको गिरभारकरना फेरएसा  
हालदेखनेमेंआया एकआदमीकूं नीचापटक  
रखवाथा उसआदमीका लिंग उसदेवीके नगमें  
लगारखवाथा उसलिंगकी जोरसे देवीकी जीन  
वाहिर निकलपमीथी सबहाथोमें नंगे शस्त्र लेर-  
खाहे चाणक्य नीतिशास्त्रमें लिखाहेकी ॥श्लोक॥  
नदीनां च नखीनां च भृंगीणां शस्त्रपाणिनां  
विश्वासो नैवकर्तव्य स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ १ ॥  
इसवास्ते क्यानरोसा खूनीका ठरनी किसीकूं  
मारनाले इसवास्ते राज्यनीतिके कायदेके माफक  
केदकर नंगीतलवारका पहरा लगवादिया अब  
हजूरके दिलमें आवे सोकरे मेंतो कायदेकी  
कारवाइ करणेवालाहूं उहांसे आगे गजाननके

गृहमें गया तों हाथी वेग देखां मेने विचारा  
 इनोके लायक पूजा चरणोकेवास्ते सांगोकी कम  
 वसे ज्यादा क्यानेटधरुं कारण लोकीककहना  
 बटनीहे के देवजेसीही पूजा. लेकिन एकबनीही  
 ताजबकीबाततो येदेखी के इतनामोटाहाथी  
 जिसकेचढ़णेको चूहा येविचारा केसेंउठासकता  
 होगा कोइकहेगाकी येचूहानी बलवानथा तो  
 क्या विनायकसेंनी ज्यादा बलवानथा या कम  
 कारण प्रत्यक्षमें देखतेहे मनुष्यकुं उठानेवाले  
 जानवर मनुष्यमें बलवानहोनेहें जब गजानन  
 मे बलवानथा तबतो उंदरमेनी निर्बल गजानन  
 उदर दूसरे हेराजेंद्र आपने कनीगणेशपुरा  
 णनी सुना होगा जिसमें विनायककी उत्पत्ति  
 इसतरेमें लिखीहे पार्वती उमा एकदिन पीठी  
 करहे अंग शर्मिलकुताकर परमेश्वर पुत्रलावना  
 कर उममें ज्यादा मालदी तबयो हाथजोस्तहने  
 लगा हे माता क्या हुकमहे तबपार्वतीबोली में  
 ध्यानकरनीहु तू पहागदे किमीकुं अंदरमनआने  
 देना पार्वती नम्रहोके स्नानकरनेलगी इतनेमें  
 नांगधतुरा मध्यमें मस्त एसा महेश्वरआया उम-  
 विनायकनें उमकुं गेका तब दोनोंके आप समे  
 युद्ध हुवा तब रुद्रने त्रिशूलमें उमका गिर काट

नाला ठर अंदर चलागया पार्वती लज्जितहोकर  
 वस्त्रसे अंग ढककर क्रोधमें आके ब्रटककर बोली  
 तुम एसैं अचानक एकाएक केसैं आगये मेने  
 पहरा बिठलायाथा उसके रहते आप केसैं  
 आये महेश्वर बोला में उसकूं मार आया सुणतें  
 ही पार्वती हाय २ कर रोणे लगी ठर रुझकूं  
 कहा तूं मुझे मुं मत दिखला तब लाचार रुझ  
 हाथ जोम्के बहोत अरजी ओर आजीजीसैं  
 कहणे लगा हे सुंदरी तेरा वियोग दुःखसे में  
 महादुःखित तेरे दासके तरफ जरा कृपाकटाक्ष-  
 कर जो अज्ञानपणसैं अपराध हुवा सो माफ  
 कर मेंने नही जाणा के ये तेरा पुत्रहे ऐसा  
 कहकर पार्वतीकूं प्रसन्न करणेकूं नाचणे लगा तब  
 नवानी बोली मेरे पुत्रकों जीता कर नही तो  
 तेरेसैं मेरे काम नही तब महादेव तीन लोक दृढ़  
 लीया लेकिन उसके सिरका पता नही मिला  
 तब देवीके कहणेसैं किसी हाथीका कटा हुवा  
 मस्तक लगाकर जीता कीया इति गणेशोत्पत्ति ।  
 खेर हे राजेंद्र दुक जरासी बातपर उक्त देवीके  
 चरित्रसैं आप तो बुद्धिवांनहे क्या अद्भुत कहा-  
 नी पूजनीक गणेश ठर महेश्वरकीहे बना  
 ताजव एक ठर सुणो जब पार्वतीका विवाह



हुवा धर्मकी प्राप्ति राजाकूं करदी इसी तरे जो कनी अपणा निर्वाह किसी सम्यक् दृष्टिबंत समक्षीके घर थोमेमें होता दीखे तो वणे जहांतक धर्ममें हरजाणा पोहचाणेवाला भिक्ष्या त्वीकी नोकरी नहि करे अब निक्षासैं आजीविका किसतरे जीव करतेहैं सो कहतेहैं निक्षा मांगणा गृहस्थीकूं किसीनी तरे योग्य नही लेकिन् आफत काल बहोत बुरा होताहे सोही कबीरके लम्हेने कहाहे ॥ नूखसैं कामनी काम तज देतहे नूखसैं पुरष तज देत नारी नूखसैं व्याव ठर यज्ञ रहजातहे नूखसे रहे कन्याकुमारी नूखसैं पुरषका तेज घटजातहे नूखसे दंभीकी बुद्धदारी कहतकबीर कमालका बालका वेदवेदांगसे नूख न्यारी ॥ १ ॥ इसवास्ते इसके अम जाचारीसैं जीख मांगणी किसी कारणसे लीया हे प्रथम तो इस कामकूं श्रावक आदरेही तव । ये निक्षा सोना धानू वगेरह अनाज वस्त्र मर्यादिक चीजोकी अनेक तरेकीहे वो निशुक खीन तरेकेहैं उसमें सर्वसंग परिग्रहके त्यागी मुनिराजकी जो निक्षाहे सो धर्मकेवास्ते काया रक्षणार्थहे आहार १ वस्त्र २ काष्ठपात्र ३ उपधी ४ आदि निक्षा उचितहे मुनिराजकूं ये नि-



क्षा कल्पलतासमान संसार समुद्रसं तारणे-  
 वालीहे इस जिभुककूं देव उर नरेंद्रजी नम-  
 स्कार करतेहैं बाकी सब तरेकी जिज्ञा लघुता  
 उत्पन्न करणेवालीहे सोही बतलातेहे ॥ श्लोक ॥  
 देहीतिवाक्यं वचनेपुनिष्टं नास्तीतिवाक्यं ततः  
 कनिष्टं ॥ गृहाणवाक्यं वचनेपुराजा नेच्छामि  
 वाक्यं राजाधिराजः ॥ १ ॥ दे एसी जुवान  
 बर्नी हलकीहे लेकिन नही एसी जुवानसं कहणा  
 उससंनी हलकाहे जीजीये एसा जो कहणाहे  
 सो राजा वचनहे नही चाहीये एसा जो क-  
 हणाहे सो राजाधिराज वचनहे ? जहांतक  
 संमारी मनुष्य दो एसा कहे नही उहांतक  
 रूप लज्या गुण उर सत्यता कुलवंतपणा उर  
 मान रक्षा हुवाहे दुसरी चीजोमें नृण हलकाहे  
 रुई उम नृणसंनी हलकीहे लेकिन याचक तो  
 रुईसंनी हलकाहे तब किसीनें शंका करी के  
 रुईसंनी हलकाहे तो याचककूं हवा क्यों नही  
 उमा लेजाती तब कहते हेमित्र पवनके दिलमें  
 इसवास्ते शंका पेदा नई के जोमें इसकूं ले  
 जाऊंगा तो स्यात् मेरे पाससेही कुछ मांगन  
 बेते उर शास्त्रोमें एतानी लिखाहे चहोन दि-  
 नोनक विदेश रहणेवाला नित पराया अन्न

खाणेवाला नित्त परचर सोणेवाला इन तीनोंका  
 जीवनव्य वृथाहे मांगके खाणेवाले आदमीमें  
 इतने अवगुण प्राप्त हो जातेहे याने बेफिकर  
 हीया शून्य बहुत खाणेवाला आजसु ठर  
 वहीत निजालू तेसंइ निष्ठावृत्तिवालेके प्राये तो  
 धन होताइ नही जो कदास कुठ होजाय तो  
 वो निश्चुक उस अव्यका उपनोग नही ले स-  
 कता न निष्ठाके धनसं वरकतहे विद्यमानका-  
 लमें निष्ठासं अव्यपात्र श्रीमाल ब्राह्मन दृष्टिमें  
 कैश्यक आतेहे लेकिन ये लोक सब जन्म  
 अपणा मांगणेमेही गमातेहे सांझतक जीमणके  
 नोहतेकी वाट देखा करतेहे कनी ज्ञानयोग  
 निहुंता नही आवे तो ब्राह्मणी नवन्यामतव-  
 णाके पुरसं तो कहताहे आजे तो अमे विप  
 खाधूं ठे एकदिन एक श्रीमालीब्राह्मण ठर ब्राह्म-  
 णी आनंद प्रमोदमें बाते २ करते २ ब्राह्मणी पृथणे  
 लगी जोतमे नगरीना राजा थइ जाउं तो  
 सूं मूं करो ब्राह्मन बोला अमे राजा थइ जइये  
 तो नूंतरो जमी २ ने बलि जमीये परंतु तमे  
 नानानी मा राजानी राणी थइ जाउं तो सूं मूं  
 करो ब्राह्मणी बोली अमे राजानी राणी थइ  
 जइये तो गोवर थापी २ ने बलि थापीये एसाही

हाल हमारे विद्यमान समयमें हुवा हे सो  
 लिखतेहे जोधपुराधीस तखतसिंहजीके पास  
 हरकरण नाजर जातिका श्रीमाल ब्राह्मणथा  
 बहोत राजाके माननीय था उसने चाहाकी मेरे  
 जायोंकी इज्जत बधाऊं हजूरसें अरज करेपर  
 राजा साहिबने उसके नाईकुं बुलाके सिरपाव  
 देकर हुकम दीया जालोरगढकी हाकमीका  
 फुरमाण पत्र लिख दीया जावे लिखदीया नीचे  
 गढसें उतरकर जब फुरमाण पढा तब तो बन्ना-  
 ही उदास होकर पीठाही दृजूमें गया उर  
 हाथ जोम कहणे लगा आहजुरे मूं कीधूं अमा-  
 रो मान तेमूं राख्यूं हजूर बोले क्या हुवा ब्रा-  
 ह्मण बोला गजबनीवात अमारो पेटीयो या  
 फुरमाणमें केम नही लख्यो राजा वगेरे सब  
 सनासद हमणे लगे हरकरणकुं राजा साहबने  
 कहा तेरा जाइ निर्नाग्यहे तब अश्वपती दिवान  
 विजेसिंघजी बोले गरीबपरवर सिंघणीका दूध  
 जोमुलककी हाकमीये राज्यपदस्थ कोइ अश्वपति  
 राजन्यवंसी सांनणेका पात्र होताहे ये निशुक  
 निशा सिवाय इसवातकुं क्या जाणे तब हजूरने  
 चार पेटीये सख्ख करवा दिये इस दृष्टांतकुं  
 देखके समझ लेणाकी निकेबल पोरपट्टी निशा

मांगणेवालोंकी बुद्धि कैसी होतीहे श्रीहरिनञ्जा-  
 चार्य पांचमें अष्टकमें तीन प्रकारकी निक्षा लि-  
 खीहे सर्व शंपत्करी १ पौरपत्री २ उर वृत्ति-  
 निक्षा ३ इसतरे तीन प्रकारकी निक्षा लिखीहे  
 गुरुकी आज्ञामें रहे हुयें धर्म ध्यान वगेरे शुन  
 आचरणमें प्रवृत्तमानं याने जावज्जीव सर्व आरंभसें  
 निवृत्ती प्राप्त हुये ऐसे यती साधूकी निक्षा सर्व  
 शंपत्करी कहलातीहे १ अब दुसरी पौरपत्री  
 निक्षा कहलातीहे सो ज्ञान उर व्रत शुनक्रि-  
 यारहित नाममात्र जती जिनोके पास शुद्ध  
 जतीवेपनी नही धर्मकूं फलंक जगे ऐसी चाल  
 चलणेवाले जो श्रावकका कोईनी काम साधने  
 लायक नही ऐसों पुरपोकी निक्षा पुरपार्थकूं  
 नाश करणेवाली पौरपत्री कहलातीहे इनके जेद  
 उरनी ऐसैंइ खटदर्शनी दस नामके सामी  
 दंभी गुसांइ योगी कबीरी दादू नानकके उदासी  
 निर्मले गरीबदासी रूखन सूरखन अनेक कि-  
 समके नेपधारी सबज्ञान उर क्रिया करकेहीन  
 विषयलंपट गांजा चिखम चमस फूंणणेवाले  
 व्यर्थ घूमणेवाले भूणीमें लाखों जीवोका घम-  
 साण फरके तपसी धजणेवाले जो लष्ट पुष्टपणे  
 नीख मांगके खातेहे बोनी पौरपत्री निक्षा कह-



डुहा-रुजगारकरेतो टोटा लागे गांठ खायतो बीते ॥  
 राघोचेतनयांकहे मांग खायसोजीते ॥ १ ॥  
 कालकुसम्मेनांमरे वांजणवकरीजंठ ॥  
 वो मांगेसबजातने वेचरजावेवूठ ॥ २ ॥  
 जती २ क्या नांमगुण मतीनसोचेकोय ॥  
 पांचो इंझीवसकरे सच्चाजतीसोहोय ॥ ३ ॥  
 सच्चाजतीसोहोय विषयरतपामेपटीया ॥  
 करेपांसिणगार रखेजोगणकूंडटियां ॥ ४ ॥  
 कहेरामऋक्षिसार झांनविनविगमीमत्ती ॥  
 खायहरामीमाल नहीवेसच्चाजती ॥ ५ ॥

जंगम अरु योगी सरस रस जोगी सन्यासी  
 समाजीवण लोकनकूं ठगेहे सिरकूं मुंनवाय मारे  
 किसीकोनकाजसारे पेट निजजरणकाज द्वार २  
 जगेहे नस्मी केइयक धरे मट्टीकेइतिजककरे  
 जूठेकदाग्रही मिथ्यामत लगेहे ऋक्षिसारत्या-  
 गधार सुखजतीगुरुसंनार ऐसे जेखजगतमे  
 कुमतिपंथजगेहे ॥ १ ॥

इसवास्ते जो जो मूर्ख साधूनांम धराके  
 साधूपणाकी क्रिया करके रहित शरीरमें पुष्ट  
 होकर दीन होकर नीख मांग पेट जरतेहे उ-  
 नोका पुरपार्थ नासकूं प्राप्त होजाताहे उन एसं  
 जेखधारीयांकों चाहीये सो अण्णे कुलकूं लंठन

नहीं लगे ऐसी लिखत पठत निमित्तादिक कला  
 कौशलताइसे अपणा निर्वाह गृहस्थके स्वारथ पो-  
 दचाके करे दगिद्री अंधा पांगला जो किसीजीतरे  
 धंधा करणे समर्थ नहीं ऐसे जो लोक अपने गु-  
 जरान करणेंकूं जीख मांगतेहे वो वृत्तीनिक्षा कह-  
 लातीहे वृत्ति निक्षामें बहोत दोष नहींहे कारण  
 वो भंगत दगिद्री लोक धर्मकी हलकाई नहीं पैदा  
 करतेहे मनमें दया लाकर लोक उनोकों निक्षा  
 देतेहे इसवास्ते धर्मी श्रावक मांगे नहीं निक्षा  
 मांगणेवाला गृहस्थ मितनानी धर्मानुष्ठान करे  
 लेकिन जेमें पुर्जनमें दोषनी रणमें लोकीकमें  
 श्रवज्ञा उर निंदा होतीहे एसा समझणा उर  
 जो जीव धर्मकी निंदा करणेवाला होय उम-  
 कूं सम्यक्तपाणानी मृमक्षित होनाहे नवनिर्मुक्ती  
 सूत्रमें साधुनेका निष्याह सर्व जनापक जीवों-  
 पर दया रखणेवाला साधूनी अगर आधार  
 नीहार करते तथा गउचरी करते निक्षा लेते  
 जो जगनी धर्मकी निंदा पैदा करे तो उमकूं  
 बोध बीजकी प्राप्ति होणी मृमक्षित होय नी-  
 त्रीका एसा कहणाहे विवहार नगमें के निक्षा  
 मांगणेमें कोइकूं लक्ष्मी तथा गुण होणा मायूम  
 नहीं पम्ता ॥ श्लोक ॥ दयापारेवर्द्धंलक्ष्मीः

कथंचित् सातु कर्पणे आयव्ययेनृभृजेहे निक्षायां  
 तु कदाचन ॥ १ ॥ पूरी लक्ष्मी व्यापारमेहें  
 वो लक्ष्मी थोमी कर्पाणमेहे राजद्वारमें आवंद  
 ठर खरच दोनोंहे ठर फेर जीखसेती कजी  
 लक्ष्मी होतीही नही निकेवल पेट जराइ होतीहे  
 इसवास्ते मनुस्मृतीके चोथे अध्यायमें इसवजे  
 आजिविका करणी लिखीहे ऋत १ अमृत २  
 मृत ३ प्रमृत ४ ठर सत्यानृत ५ इतनी तरे  
 आजिविका करणी लेकिन नीचकी सेवा करके  
 पेट जराइ नही करणी बजारमे बिखरे हुये दाणे  
 चुगणा सो ऋत कहलाताहे ठर बिगर मांगे जो  
 मिले सो अमृत कहलाताहे ये अमृत निक्षा  
 मनूकी लिखी हुइ प्रायें जैन जतीयोंमें दिखतीहे  
 कारण जती लोग गृहस्थके घर जातेहे तब  
 याचना नही करतेहे गृहस्थ पात्रमें अपनी  
 इच्छा माफक अर्पण करतेहे सच्चहे परमहंसद-  
 तिवालेनी मांगते नहीहे सच्ची ठर पूरी परम-  
 हंसगतितो तीर्थकर जिन कल्पवाजोकेही च्छद-  
 मस्थ नावमें होतीहे ठर मांगणेसे मिले सो  
 मृत कहलाताहे खेतीसैं जो मिलताहे सो अ-  
 मृत कहलाताहे ठर व्यापारसे जो प्राप्त होवे  
 सो सत्यानृत कहलाताहे लक्ष्मी नही तो विष्णु-





मालम कर देतीहे व्यापारके अंदर विवहारकी शुद्धि अथ १ क्षेत्र २ काल ३ ठर जाव इन त्रेदोसैं चार प्रकारकीहे जिसमें अव्यसैं तो पनरे कर्मादांनका कारण ऐसा किरियाणा सब तरेसैं आवककूं ठोरणा चाहीये धर्मकूं पीना करणेवाला ठर लोकमें अपयस पैदा करणेवाला ऐसा जो किरियाणा बहोत मुनाफा मिलता होय तोजी पुन्यार्थी पुरपोकूं गृहण नहीं करणा चाहीये तयार कीया हुवा सूत वस्त्र नगदी सोना रत्न धानू वगैरे जो निर्दोष किरियाणाहे सो विवेकी आचरे जितना व्यापारमें आरंज पाप कम होय तेसा हमेसां चलणा कनी काल-कुसमयमें दुसरी तरे निर्वाह नहि होता दीखे तो बहोत आरंज ऐसा व्यापार तेसैंही कठोर कर्मजी करे तोजी कठोर कर्म करणेकी मनमें इच्छा नही रखणी एसाही प्रसंग आ पमे तो करणा पमे तब आत्माकी साक्षी तथा गीतार्थ गुरुके सांमने उस बातकी निंदा करणी तेसैंही मनमें लज्जा रखकरकेही एसा काम करणा सिद्धांतमें जाव आवकके लक्षणमें कहाहे सु-आवक तीव्र आरंज वर्ज उस बिगर निर्वाह नही होता होय तो मनमे तीव्र आरंजकी



वो शास्त्रोमें लिखे हुये ठोमणा नावसें व्यापारके  
 बढ़ोत नैदहे क्षत्री जातिके व्यापारी तथा  
 राजा इनोसें थोमानी कीया व्यापारमें नफा  
 पाणा मुसकिलहै अण्णे हाथसें दीया हुवा  
 पीठे मांगणा मुसकिल होताहै नर रखणा  
 पन्ताहै जो देणेका व्यापार समझते इनहीहै  
 लेकिन सरकार अंग्रेज जो कुछ साहूकारोसें  
 लेणदेण करतेहैं उसमें हरजाणा नही करतेहै अ-  
 दाखत व्याजकी भिगरी रूपे सइकमेसें ज्यादा  
 नही देसकतीहै इमानदार क्षत्री तथा रइससें ले-  
 णेदेणेका विवहार ठनोकी पेठप्रतिति जाणके क-  
 रणा शस्त्रधारी वैश्यांनोकूं कदापि उधार नही  
 देणा जंगल जाटन ठेमीये चोरस्तेमे साह  
 रांघमकदिय न ठेमिये ठेमियां होय कुराह ?  
 श्रेष्ठवणिये व्यापारीकूं चाहिये सो क्षत्रिय व्या-  
 पारी तथा ब्राह्मण व्यापारी शस्त्रधारी दिवाल-  
 खोरोसें उधार लेनदेन न करे फेर मांगणेसें जो  
 वैर विरोध पीठेसें करे एसेकूं उधार नहि देणा  
 उधार देणेसें माल खरीदकर रखनेसें बखत  
 आणेसे निश्चे तो मुनाफाही मिलताहै कदास  
 असली रकम बसूलायतमें तोटा जाण पने तो  
 तुरत वस्तु बेचदेणा चाहिये. कदास व्यापारमें



वो शास्त्रोमें लिखे हुये ठोमणा नावसें व्यापारके बहोत जेदहे क्षत्री जातिके व्यापारी तथा राजा इनोसें थोमन्नी कीया व्यापारमें नफा पाणा मुसकिलहे अणणे हाथसें दीया हुवा पीठे मांगणा मुसकिल होताहे नर रखणा पन्ताहे जो देणेका व्यापार समझते इनहीहे लेकिन् सरकार अंग्रेज जो कुछ साहूकारोसें लेणदेण करतेहें उसमें हरजाणा नही करतेहे अ-दाखत व्याजकी भिगरी रूपे सइकमेसें ज्यादा नही देसक्तीहे इमानदार क्षत्री तथा रइससें ले-णेदेणेका बिबहार उनोकी पेटप्रतिति जाणके क-रणा शस्त्रधारी वेइमांनोकूं कदापि उधार नही देणा जंगल जाटन ठेकीये चोरस्तेमे साहू रांघमकदिय न ठेकिये ठेक्यां होय कुराह ? अष्टवणिये व्यापारीकूं चाहिये सो क्षत्रिय व्या-पारी तथा ब्राह्मण व्यापारी शस्त्रधारी दिवाल-खोरोसें उधार लेनदेन न करे फेर मांगणेसें जो धैर विरोध पीठेसें करे एसेकूं उधार नहि देणा उधार देणेसें माल खरीदकर रखनेसें बरखन आणेसे निश्चे तो मुनाफाही मिलताहे कदास असली रकम वसूलायतमें तोटा जाण पमे तो तुरत वस्तु बेचदेणा चाहिये, कदास व्यापारमें



वो शास्त्रोमें लिखे हुये ठोमणा नावसें व्यापारके  
 बहोत जेदहे क्षत्री जातिके व्यापारी तथा  
 राजा इनोसें थोमानी कीया व्यापारमें नफा  
 पाणा मुसकिलहे अपणे हाथसें दीया हुवा  
 पीठे मांगणा मुसकिल होताहे मर रखणा  
 पन्ताहे जो देणेका व्यापार समझते इनहीहे  
 लेकिन् सरकार अंग्रेज जो कुछ साहूकारोसें  
 लेणदेण करतेहें उसमें हरजाणा नही करतेहे अ-  
 दाजत व्याजकी मिंगरी रुपे सइकमेसें ज्यादा  
 नही देसकतीहे इमानदार क्षत्री तथा रइससें ले-  
 णेदेणेका विवहार उनोकी पेठप्रतिति जाणके क-  
 रणा शस्त्रधारी वेइमानोकूं कदापि उधार नही  
 देणा जंगल जाटन ठेमीये चोरस्तेमे साह  
 रांचमकदिय न ठेमिये ठेम्यां होय कुराह ?  
 श्रेष्ठवणिये व्यापारीकूं चाहिये सो क्षत्रिय व्या-  
 पारी तथा ब्राह्मण व्यापारी शस्त्रधारी दिवाख-  
 खोरोसें उधार लेनदेन न करे फेर मांगणेसें जो  
 धैर विरोध पीठेसें करे एसेकूं उधार नहि देणा  
 उधार देणेसें माल खरीदकर रखनेसें बखत  
 आणेसे निश्चे तो मुनाफाही मिलताहे कदास  
 असली रकम वसूलायतमें तोटा जाण पमे तो  
 तुरत वस्तु बेचदेणा चाहिये. कदास व्यापारमें





फूसका श्रंत अपार गिरवीपर व्याजके रूपे  
 ज्यादा होगये होय तो उस ऋणीकूं नोटिस  
 देकर जताकर मुद्दत जो नोटिसमें लिखे वो  
 बीतनेपर च्यार मोतबर गवाह रखकर बेच देणा  
 चाहिये नोटिसकी नकल पास रखणी चाहिये  
 उधारमें जो नुकसाणी पोहचतीहे उसपर दृष्टांत  
 कहतेहे जिन दत्तनामें एक सेठ जिसके एक बे  
 समझलम्काथा मुग्धयाने जोलाथा बापके प्रताप  
 लीलाजहिर करताथा अच्छे कुलकी कन्यासं उस  
 मुग्धकी सादी करदी सेठ उस मुग्ध लम्केकूं  
 इस तरेकी सीखदी हेवेटा सबजगे जीनकूं  
 दांतोका पन्दा रखणा १ किसीकूं व्याजवास्ते  
 रूपे उधार देणा तो पीठी उघराइ नही करणी  
 २ बंधनमें पनी हुइ उरतकूंही त्रास देणा ३  
 मीठाही नोजन करणा ५ सुखसं नींद लेणी ६  
 मुलक २ मे घर करणा ७ बेस्याके जाणा तो  
 प्रजात समय जाणा ८ जुआ खेलणा तो अपणे  
 शृंगारित चित्रशालीमे खेलणा ९ वासी नही  
 खाणा ताजाही खाणा १० गायामेंही जाणा ग-  
 यामेंही पीठा आणा ११ मिठाइ खाणेका व्यसन  
 पन्जाय तो हलवाइके घरपर जाके खाणा १२  
 दरिद्र अवस्था आ जाय तो खादु उर मकराणे



जहां प्रीति उर आदर दीखे वहांही जीमणा  
जहां प्रीति उर आदरहे निश्चै समझणा वोही  
भोजन मीठाहे ॥

हुहा-बारिवोलावणवेसणो वीभोअरुबहुमान ॥

जीणघरपांचववानही सोघरजाणमस्तान॥१॥

आवनहीआदरनही नहीनयणामेनेह ॥

जिणघरकदीयनजाइये जोकंचनवरसेमेह॥२॥

आवकरेआदरकरे दिलमेधरेसनेह ॥

तिणसज्जनघरजाइये जोपत्थरवरसेमेह ॥३॥

अथवा जब नूख लगे तब भोजन करणा  
सो मीठा लगताहे विगर पचे खाणेसे रोगो-  
त्पत्ति वैद्यक बचनहे सुखसँ सोणा मतलब  
जिस जगे किसीनीतरे कष्टउपद्रवकी शंका नही  
होय वहांही रहणा सो सुखसँ नीजा आवे  
लोकीकमेंजी सात मुख कहतेहे पहली सुख  
निरोगी काया हुआ मुख घरमे हुय माया  
तीजामुख सुथानवासा चोथा सुख राजमे  
हुयपासा पांचमा सुख कुलवन्ती नारी वृद्धा  
सुखपुत्र आझाकारी सातमा सुख धर्ममे मति  
शास्त्र सुकृत गुरुपंक्ति यती इतना मिले स्वर्गमे  
वास ये सातोंही पुण्यप्रकास ? अथवा जब

निद्राका समय होय तबही लेणा दिनकूं नही  
 सोणा खासी जुखामादिक दिनके सोणेसँ  
 नीद्रा करणेमें होताहे नोजन करके मारी करः  
 बट अन्नपाचन करणेकूं विगर नींद सयन क-  
 रणा ताकत बधाणेकूं चित्त सोणा ५ गांम २ मे  
 घर करणा मतलब सब देसके बसणेवाले मोत-  
 बरोसँ दोस्ती करणा सो जहां कार्यविशेषे  
 जाणा पने तो घरकी तरे हिफाजत सब का-  
 माँकी वणसके अथवा घर बेठेही चीजवस्तु च-  
 हीये सो आम्तद्वारा आसके ६ बेस्याके प्रजात-  
 समय जाणा मतलब रात्रिके कीये हुवे शृंगार  
 सो जारपुरपोके मर्दनसँ विनंगकूं प्राप्त हुये हुये  
 मद्यादिकके नसे उतरे हुये महानयानक विद्रूप  
 देखणेमें आतीहे सो पुरपका चित्त किसी प्र-  
 कार वैस्यागमन नही चाहता बलके ऐसा  
 स्वरूपकूं देख एसानी अनुभव प्राप्त होताहे  
 अनेक जार चोर नट बिट नीच पुरपोकी संसे  
 वित वैस्याकूं कौण कुलबन पुरपके मंग नार्याव  
 संसर्गज कर सकताहे निकेवल एक पेसेह  
 कीयारीहे जिसके इण वैस्यायोनै चारुदन व  
 यवने सेठ जेसोकें बारे क्रोममोनइये खाक  
 अंनमें निकाज दिया तो फेर एसी मुनलबगार

वेस्याठके फंदेमे कोन बुद्धिमान जाताहे ७ जुआ  
 खेलणा तो अपणी चित्रशाखीमे खेलणा मतलब  
 जब जुआरीलोक वहां जमा होतेहें तब वो  
 मकानकी सजा बट देख एसआरामी देख बने  
 अपसोस बंद होजातेहे तब नीसासे माखणे  
 लगजातेहे जब उनसें दुखका कारण पूछोगे  
 तब तो ऐसा कहतेहें क्या कहे हमारे घरमें  
 इससें दूनी सजा बटथी ठर पांच लाख रुपये  
 सब इस जुआमें बरबाद हुवा कोइ चोगुणी ठर  
 कोइ अठगुणी कहकर अंतमें जूआ ठर फाट-  
 काही फकीर होणा साबित करेंगे तब तो ऐसा  
 प्रत्यक्ष प्रमाण पाकर फेर कोन बुद्धिमान जूआ  
 ठर फाटका करेगा इस धंदेवालेके निश्चे जद  
 तद नुकशानहे ऐसे धंदेवालेकी हूंभीनी साहू-  
 कार विचारके लेतेहे ऐसे आदम्योंकी पतगये  
 बाद मालसट्टे रुपे मिलणा मुसकिल होताहे  
 सात बिसनोका राजा जुआहे नख ठर पांचव  
 जेसें इसके प्रताप दुख पाये तो आजकलके  
 पुरषोमें कष्ट जुआ फाट केसें पणना क्या बगी  
 बातहे हजारों विगमे ठर एकवणे ऐसा धंदा  
 बुद्धिमान नही करे धंदा हाजर लाख भेष्टहे  
 फाटका इकतका जूआहे जो करेगा फाटका

धन जायगा गांवका थालीविके अरुवाटकां  
 घरकारहेन घाटका ए वासी नही खाणा तां  
 जाखाना मतलब अपने बनेरोने कुछ धनमात्र  
 जमाकर गयेहे अथवा आपकी मूलपूंजी खां  
 जाणा सों वासी - खाणा कहलाताहे अथवा  
 वासी अन्न रोगोत्पत्ति करताहे लाविया जीव  
 गीले जोजो पाणीके संयोजी पकाये जाताहे  
 उन चीजोके खाणेसें अनेक जीवोके संसर्गों  
 हिंसासे परजवमें हिंसाके फल बुरेहे इसवास्ते  
 धर्मशास्त्र विरुद्धहे ताजा खाणा सो कमाके  
 खाणा अथवा ऋतुपथ्य धर्मपथ्य खाणा कमाके  
 खाणेपर चार टकेमें राजा नोजका दृष्टांत जेसें  
 राजा नोज एकदिन किसी कारण जंगलमें  
 गया आगे रस्ता भुलगया प्याससें व्याकुल  
 हुवा तब वृक्षकी छांवमें घोंस बांधके बैठकर  
 प्याससें व्याकुल पाणीकी चिंतामें लगा इतने  
 ) एक धणगर जेन बकरीयां चराणेवाला अपण  
 एब्रल्लेके चला आया राजाने पाणीकी जा  
 पूछी उसने जलका स्थान बतलाया राजा तृप  
 मिटाकर स्वस्थ हुवा तब राजा उसकुं अपण  
 प्राणदाता समझके उस एब्रल्लकुं कहणेलगा :  
 मेरे पास अग्री चीजहोय सो मांग उसने कह

में क्या मांगूं मैं जिन्हुक नही मेरे पुरपार्थसें  
 कमाणेसें मैं च्यार टकेमें राजा नोज हूं राजा  
 बने आश्चर्यमें आकर एवाजसें पूछणे लगा  
 च्यार टकेमें तूं राजा नोज किस तरेसेहे सो  
 मुझे बतला एवाज कहणेजगा देख च्यार रुपे  
 महीना कमाता हूं रुपयाकूं किसी २ देसमें  
 टका कहतेहे सो एक रुपयाको नाज एकमण  
 आताहे जिससें मेरी स्त्री शंतानादिका उदर-  
 पोषण करताहूं दूध उर धी बलीता उर कंबल  
 बिठानेकी टटी ये सब एक्कसे मिलताहे एक  
 रुपया स्त्री पुत्र पूत्री उर मेरे वस्त्र सींवाइ रंगाइ  
 धोती वरतण खरचमें लगाताहूं पाव रुपया ति-  
 वारवार पाव रुपया व्याह खरचका न्यारा रख-  
 ताहूं पावरुपयामें पाहुणा मिजमान स्वजन  
 संबंधीयोका अलायदा रखताहूं पाव रुपया  
 शरीरमें रोगादिकके इलाज वैद्यके वास्ते जुदा  
 धरताहूं दो आने कुलधर्मके गुरुठंके दांन मि-  
 मित्त अलायदे धरताहूं दो आने देव तथा मं-  
 दिर धर्मशाखा दीनडुखीयोके दांन देनेवास्ते  
 रखताहूं वारे आणा खजानेमें जमा करताहूं  
 इसवास्ते मेरे किसी बातकी कमी नही मैं क्या  
 बातपर तेरेपाससें व्यर्थ दांन लूं तब राजा





सो दे जायगा राजा आगे शहरके तरफ आया लेकिन वो बात राजा दममें २ याद करताहे प्रजात होतेही आम दरबार नरके अपने मुसाहिव प्रधान हिसाब माल सायरके तमाम बने २ यहूदेदारोसे कहणेलगा च्यार टकेमें राजा जोज लाख सब सजा कहणेलगी क्षमा २ गरीब परवर अमोख्य रत्न जो राजा जोज सो च्यार टकेमें केसे आवे राजा बोला इस हक नाहक स्तुतिसें में प्रसन्न नहीं होता मोखत देताहुं सात दिनोंकी च्यार टकोंमे राजा जोज दाखल करो नहीं तो सर्वस्व छीनकर सबोकों विना कुटुंब शहरसे निकालदूंगा दरबार बरखास्त करदिया अब वे राजाके सब मुसद्दी बने उदास होकर अपनी अकलसे सोचा सब पंक्ति स्याणे ज्योतपीयोकुं पूठा लेकिन ये बात किसीनेजी नहीं बताई आखिरकों सात दिन पूरे होगये राजा अपने वादे मुजब धोती छोटादे देकर इकेलोकुं शहरसे निकाल दीया ठर कहा जिस दिन इसी बातकुं हासिल कर आठगे उसीदिन शहरमें आके मुर्जे में दिखलाणा लाचार वो फिकरबंद उसी जंगलमें जा पहुँचे उहां सब लोक खाणा पीणा कीया

इतनेमे वो जंगली अपणी बखतपर उसी जगे  
 आया इनोंको देख पृष्ठणेलगा तुम सबके सब  
 बने दिखगीर तुम अच्छे घगणेके दिखतेहो तब  
 उनोंने कहा कोइ कहणेकी बात नहीहे हमारा  
 संकट कोइ काटणेवाला नही दिखता तब  
 उसने कहा कहो नो मही साटणे जेसा होगा  
 तो मनाय फार मफाहें तब ये कहणेलगे  
 क्या कह ये बात बने २ अखलवां ठर पंदि-  
 तोही समझमें नही आई तो तुं जंगली क्या  
 हमारा छुर काटसकताहे जंगलीनें कहा भेरे  
 छापर होय गो नो म कहसकताहूं इसमें  
 यहीन तुम जंगलीकी क्या बातहे याजे काम  
 एगेंहे गो जंगली जाणतेहे नागमिक नही  
 जाणने एह केवली टाव सर्यह कोणहे सबगुणके  
 तुम पच्छेद भूमिवाय होनेहे तब उनाममें किसी-  
 ने कहा जाइ अपण तो जो मिले उनगेंही पूछो  
 कोइनकोइ बताही देगा नट गुक्तिमें नट गुक्ति  
 बाजे काममें अधिक निश्चयहीहे जय गीर  
 वेणा होताहे तब गुप्तके सम्मुख देखाणा  
 पन्ताहे तब उनोंने कहा हम सब राजा जोतये  
 सुम्हीहे हमनो राजाने हमगे कहा क्या  
 देखें राजा जोतवाने हमने तो बहोत मज्जा

करी लेकिन किसीनेभी नहीं बतलाया तब राजाने निकाल दीया सो मारे आपदाके इहां आयेहे तूं कुछ जाणताहे तो बतला इतना सुनतेही जंगली बोला इस बातका क्या मैं बतासकताहूं उन मुत्सद्दीयोंने खूब निश्चयसं पूछा सच बतादेगा जंगली बोला सच बताडुंगा निलनरका फरक नहीं जंगली मनमें विचारणे लगा वो सवार निश्चे राजा नोजथा लेकिन अब राजाका जो हुकमहे बोही करणा चाही-ये तब मुत्सद्दीवनी आजीजसं पूछणेलगे बतला च्यार टकेमें राजा नोज कोणहे जंगली बोला कोठि सोइनये देठ तो राजाकूं तुमारी कही बात समझा देताहूं जब तुमारा राजा कहदेवे तब ले लेउंगा तुम बणिक हो मुतलबी जातहो किसी कविने कहाहे ॥

हुहा-बनोपकनोवाणीयो तातोलीजेतोरु ॥

जोधीरजसूकांमले लेवेकंठमरोरु ॥ १ ॥

वाण्यांथारीवांण कोइनीनरजाणेनही ॥

पांणीपीवेठाण सेंवुंधागटकाकरे ॥ २ ॥

इसवास्ते प्रतिज्ञा करो तो राजाके सामने ज़ब्य धराके फेर राजा नोज च्यार टकेमें पैसे कळंगा सचहे ॥ मुतलबरी मनुहारने तजी मावे



जाणा मतलब पढ़ले पढ़रमे धर्मकृत्य करके  
 व्याख्यान सुणके दांन देकर फेर नोजनकर  
 दुकानपर जाणा गुमास्तोके कामकी तदारक  
 करणी खरच आबंदका आंकला साफरखवाणा  
 ठधार किसी साहूकारमें होय तो बादे मुजब  
 मंगा लेणा नोकरोको नोकरी मुजब इनाम  
 इकराम आंकला बधणोपर देणा फेर ठाया ठले  
 जब घरपर आणा जो मालक अपने घरका  
 अवतर्नदी देखता सिरप गुमास्तोके नरोसे  
 ये तब मुत्सद्दीकी का घर बिगड़ जाताहे केइ  
 चार टकेमें राजाहे ११ मीठाई खानेका विसन  
 कोटि सोइनये हजारोंके घरपर जाके खाणा  
 बात समझा देतवारोंके घरपर प्राणी जाताहे  
 तब ले लेऊंगा तु ठसकी मिठाई खाणुकुं जी  
 किसी कबिने कसीमें तो हजारों मखीयां मरी  
 दुहा-बनोपक कोमे ठर चिमटीयां मरी हुइ  
 जोर गिलेरी आदि अनेक जीवोके  
 नानावृणके मिठाई बणाताहे न पाणीकुं  
 ताहे नवरतणोकी शुद्धिहे पोंठणें ठर ठा-  
 के बस्त्रनी महाअशुद्ध ठर मखीन रहतेहे  
 हर ते ठोकरोके दिसा फराकतके हाथनी ल्यां  
 न्यां योंही लगा देतीहे ठोकरे योंही मृततेहे

उसी रात्रमें जल पीलेतेहे उसीसें मिठाइ काम  
 देतीहे तो तसे अपणी आंग्योंसे देखता हुवा  
 दया धीन धर्मी वो मिठाइ बजारु केसें खास-  
 कताहे जिसके घरमें ये सब शुद्धियां होय  
 दया धर्मवाले दलवाई होय तो निजरसे तपा-  
 सके मिठाइ के आणेमें होइ हरजाना नही  
 होइ । तबमें राये दलवाईका काम क-  
 रणगारे ब्राह्मणादिकनी मांस नक्षीहे इसवास्ते  
 गिरावे ही उन्हा होय तो विवेकीके हाथसें  
 बणा सके अपणे घरमेंही राखणा अतुपथ्य उर  
 म । तबमें मांस पढ़वानकर इहां जो मिठाइ  
 दलवाई राख जाके खाणा कहाहे सो सिरप  
 जाके देखणेकाही मृचना करताहे विवेकी पुर-  
 योंके नालीय माधर्मीदाल उर मयजन मित्र-  
 वा । तबमें राये दलवाईके घर विनाकारण  
 विशेष जाजननी नहि करे १७ दरिद्र अथवा  
 आ जाय तो ग्याह उर मकगणोंके चीनकी  
 जमीन ग्याहनी या अरम गृहकों बनाताहें  
 देखके चल्णा इस मिश्राके माफक चल्णा तेरे  
 घरमें तब ग्याहका पथर उर मकगणोंका प-  
 थरका तब दया धीन होइ उहां दमलक्षरी  
 मेहरा नहीहे सो निराल लेख नतगाय

कारण नर्तहर राजा लिखताहे ॥ श्लोक ॥

यस्यास्तिवित्तं सनरःकुलीनः संपन्तिः सश्रुतः वा-  
नगुणज्ञः सएववक्तासचदर्शनीयः सर्वगुणाःकांच-  
नमाश्रयंते ? मायकहे मेरापूतसपूता बहन  
कहेमेराजडया घरकीजोरूलेतबलडया सबसे  
बनारुपडया ? श्लोकका अर्थ जिसकेपास धन  
हे वो अदमी कुलवान कहजाताहे वोही पंन्ति  
हे वोही गुणोका जाणनेवालाहे वही कहणे-  
वाला वही देखणे योग्यहे इसवास्ते सब गुण  
कांचनके आश्रयमें रहतेहे ?

हुहा-कंताजोरूनराखीये जाकोनांमगरत्थ ॥

जिणदेख्यांनूपतिभिगे तरुणीपसारेहत्थ ?

इसवास्ते हे विवेकी गृहस्थ धर्ममें धनकीही  
प्रधानताहे ये जन्मका सुधारणा तो प्रत्यक्षही  
दिखताहे लेकिन विवेकी इस लक्ष्मीमें परजव-  
नी सुधार सकताहे जैसें मुपात्रोकी भक्ति अन्न  
वस्त्र पात्र उपधि विद्याशाला दानशाला पुस्त-  
कालय पिंजरापोल जिन मंदिर पूजा साधर्मो  
वात्सल्य रथयात्रा तीर्थयात्रादि अनेक मुकृतार्थ  
धनसें संचकर चक्रवर्ति स्वर्ग तीर्थकरादिक  
पदका आयु बांधताहे एसी शिक्षा देकर विदा  
किया उस शिक्षामें चलता हुवा वो मुग्ध सब





विचारमेंही रहे आखिरकों निजायही दिया  
 पुरपोंकों चाहीये अपणी करी प्रतिज्ञा ऐसी  
 निनावे किसी राजपूतके घरके अंदर नामका  
 दरख तथा उसके नीचे वो राजपूत जब बैठता  
 तब एक कछुआ उसपर बाँटकर देता वो धनु-  
 पवाण मंगाता वो काग देखतेही उमजाता एक  
 दिन उसने अपणी कन्यासे कहा मैं जब सम-  
 सेरलाकहूं तब तीरकवाण लादेणा इसीवजे  
 कछुएने बाँटकी संकेत मुजब राजपूत बोला  
 समसेरला कछुएने विचारा समसेरसें तो मैं  
 मरता नहीं निश्चित बेठारहा जो बाणजगा  
 त्योही राजपूत बोला थरे दुष्ट अब तो मरा  
 तब पम्ने २ कछुआ बोला ॥

हुहा-वचनपलट्टासोमरा कागामरामजाण ॥

नामलियासमसेरका लाईतीरकवाण॥१॥

सो जुवान कहके पलटणेवाला मराहुआ-  
 हीहे जब अपणेसे पार नहीं पम्ने तो ऐसा  
 बोझ उठाणाही नहीं कदास कोइ कारण यो-  
 गसें रुपे वादेपर नहीं पोहचसके तो किस्त  
 करकेनी करजा उतार देणा ऐसा नहीं करे तो  
 फेर पत जाते रहवीहे जहांतक वणे करजदार  
 होणाही नहीं कारण सुणणा आवाज देणा

व्याज फेर नुकना उर नमाज नीतिमें लिखाहे  
 धर्मका काम १ करजा उतारणा २ कन्यादान ३  
 धन जमा करणा ४ उर दुस्मनका उच्छेद ५  
 अग्निका उपद्रव ६ उर रोग ७ इतने काम बणे  
 जहांतक जलदी करणा तेलका मालिस १  
 बेटीका मरण उर ऋणका उतारणा ये बात प-  
 हली दुख देकर पीछे सुखदाई होतीहे जो  
 अपनी पेट जराईनी नही बणसकती होय  
 जिस्सें करज नही चुकासके तो साहूकारकी  
 नोकरी कर अदाकर देणा चाहिये जो ऐसा  
 नही करसकेगा तो आवते नवमें ऊंठ बलद  
 पाना गधा खच्चर घोडा बगेरह होकर बोझं  
 उठाके २ नी करजा तो देणाही होगा जो देणे  
 समर्थ नही होय एसोसें करज मांगणा नी  
 नहि चाहिये नाहक संक्लेश पर जीवकूं पीनारूप,  
 पापकी बढ़ोतरी होतीहे नादारकूं कहणा तूं  
 नही देसकताहे इसवास्ते ये मेरा द्रव्य धर्म-  
 खाते में कीया देशकेगा तो जरूर धर्मादि-  
 कार्यमें लगादूंगा जो धन होये वादनी करज-  
 दारकूं नही चुकाताहे तो वो जीव आगले ज-  
 न्ममें उसके संग बैर विरोध युद्धादिकमें हारतेइ  
 रहताहे इस नवमें लगाइ बैर विरोधकीनी बढ़ो-

तरीही होतीहे व्यापार करतां धननही उधारमें आवे तो अपणें मनमें धर्मखाते करणा इसवास्ते विवेकीकूं चाहीये सो साधर्मीके साथही व्यापार करणा म्लेच्छ अनार्योंकी उधार नही आवे तो धर्मखाते गिणनेका रस्ता जैनागममें नहीहे इसवास्ते उसपरसैं ममता उतारकर निकेवल मनसैं त्यागही करणा उर त्याग कीया पीठे कदास देदेवे तो धर्मवास्ते श्रीसंधकूं सोंप देणा तैसेंइ ड्रव्य अथवा शस्त्र आयुध बगेरे कोइ चीज खोड जाय तो उर पीठा आपेका संजव नही होंवे तो उसकानी त्याग करणा वो सिराय देणा कदास जो नवो सरावे उर चुराणे-वाला चोर अथवा दुसरा जिसकूं मिले सो उस चीजसैं पापकर्म करे तो गृहस्थनी पापका नागी होय त्यागसे न होय इतना जानहे विवेकी पुरप पापके अनुबंधकारी अनादिरूप शरीर घर कुटंब ड्रव्य शस्त्र बगेरे चीजोका अंतमें त्याग करणा नही करे तो उन चीजोसैं होती हुई पापक्रियासैं नवोनव गुरे फल नोगणे पमे इस बातकी साक्षी श्रीनगवती मृषमेंहे पांचमें शतक उठे उद्देशेमें सिक्कारीने हिरण मारा तब जिस धनुषसैं १ पाणसे २ धनुषकी

सेठके व्याजमें चूना पीसताहूं लेकिन रुपया  
 उतरणा मुसकिल होगया तब बेजने पूठा कोइ  
 उपायनीहे नेंमा बोला अगर हजार रुपेकी  
 सग्न लगाकर राजाके हाथीसं मुझे लमावे तो  
 जरूर मेरे सामने हाथी नाग जायगा में तो  
 सेठकूं समझा नहीं सकता जो कोइ सेठकूं  
 समझा देवे तो में ऋणमुक्त होकर मरजाऊंगा  
 ये बात राजपूत सकुनरुत शास्त्रका जाणका  
 गया सो सब समझगया के इन दोनो जीवों  
 जानीमरण ज्ञान होगयाहे उसने सुनारसं  
 कही मिय देणा सो परन्वमेंनी वृद्धता नहीं  
 गिरपर बोझा ठगके परन्व विगामणाहे इस  
 तोहा झालहे सुनारने ये बात मानी नहीं इन-  
 नेंमें सेठ आया नर बोला लोनाइत जिस काम  
 आये हे। वो कार्य कहो सब राजपूत निमल्य  
 पणमें सब बात कह मृणाइ कारण राजपूत  
 प्राये तो ध्यानदानी होनेहे सो आर्य होनेहे  
 किसीकी संगत नर सीपमें नेतामक गजो  
 हर हर कम को नहीं तो तैनधर्ममें राजपूत  
 कुछों सबमें सतम जियाहे प्रवक्ष फल देण-  
 कर एसा अज्ञानी बीच विगडा होगा जो ५-  
 न्वात्री को सेठ इस बातही पसिदा कर्णोंहे

तीन दिन बिताया कहे मुजब बैल मरगया तब सेठ उस राजपूतकुं संग लेकर राजाकेपास जाकर नजर नोठावरकर राजाके हुकम मुजब बैठगया राजाने कुशल क्षेमकी बात पृथीउर बोला सेठ व्होत दिनोंसें आये कुछ कार्य होय सो कहो तब सेठ बोला गरीब परवर नोकरी करके मालककी बंदगी बजाकर हक्क खाणेवाला मेरा चुना पीसणेवाला जेसा जेसा ताकतदारहे जेसा हजुरका माज मलीदा चरणेवाला वृथा पुष्ट पाट हाथीमें ताकत नही अगर लम्तके मुकाबलेमें दोनोंकों दंगलमें ज़िमाये जाय तो आपका हस्ती जाग बूटे राजा हसकर बोला क्या सेठ जंग खाईहे ये बात किसीके समझमें कब आसकतीहे सेठ बोला न माने तो हाथो-तालीका परचा देख लीजीये तब राजा बोला कुछ सरत करोगे सेठ बोला हजार रुपयेकी मुकरर ठहराकर दोनोकों लाये जेसंकुं देखतेही हाथी जाग गया तीन बखत लाये लेकिन हाथी तो तीनही बेर जाग गया सेठकुं हजार रुपे दियेगये उर पाना मरगया राजा बोला हाथीसें धेसत खाके भेंसा मरगया तब सेठने उस राजपूतसें सब बात राजासें कहलाइ राजा

बोला सच्चदे में इस मोदीके हजार रुपे मोदी  
 खाणेके देणाथा देणा किसीतरे नही बूटता  
 इस दृष्टांतमें बेल पानेकी जो बात करणी लि-  
 खीहे सो पंचारव्यान शास्त्र मुजबद्दी दृष्टांत  
 जाणना उपदेशरूपहे बात करणी सर्वथा अ-  
 संभवहे मुसलमीनोके धर्मकायदेमें व्याज खा-  
 णा भनालिगवाहे लेकिन हमारी समझ मुजब  
 तो हम प्रतक्ष प्रमाण देकर कहतेहे व्याज वि-  
 गर संसारका विवहार उर राज्यधर्म दोनोंना-  
 स होजाताहे जिस ॥८॥ ॥१॥ में ताकतेगहते  
 दृष्टांत लिखनाह ॥ परन्तुमेंनी पाँकों दंगलमें  
 शूरवीर जयसिंघराके परन्तु नि। ताग बूटे राजा  
 पुत्रये बने हुसियारने ये बात मा। खाईहे ये क  
 दुसरेका नाम भोक्तालिखा जोनाइ हि सेठ बोको  
 दो पदिकाका पदनरा। मरग राज ॥ देख। गमी  
 पदे मोलवीयांका उर दुसरेका कील्लो पदे प-  
 न्नीकां दोनों पदके इमनियान नाम हुये गम-  
 सिंदकी बुद्धि हन्दु धर्मपर गदर। भाँकलकी  
 कुगनपर गदरी जय गजाने बिगार कीपा म-  
 चहे कोरे घमेंमें अगम मेल गाला जाये सो मेल  
 निकलनी जाये सो तीकरी बिकनाम नही गो-  
 र्तीहे धी गालनेमें धीका सो इस भोक्तागि-

हकें दिलमें जो कुरान मजहबका धर्मकायदा  
 वैठगयाहे सो इह व्यापारनीति तथा राजनी-  
 तिकूं बाधा पोहचाकर सिरफ इतना जालम-  
 पणा जरूर यह जानताहे जो हजरत मह-  
 म्मदका हुकम नही माने उसकुफरकूं कतल  
 करणा इसवास्ते एसी अकलवाला अपणी प्र-  
 जाकूं अपणी हितकारणी केसैं बणाकर केसैं  
 वादस्याही करसकताहे कारण इस जरतक्षेत्रमें  
 तरे २ के फिरकेहे उनोमें अपणी २ मताध्यक्ष-  
 की बात सब मानतेहे सिद्धांत मत तो एकहे  
 में धोंकलसिंह जाणता नही एकदिन राजा  
 राजा सिहको बुलाके कहा तुमारे हाथ खरच-  
 वास्ते में ठ हजार रुपैया आवंदका खरचा  
 नेकालदेताहूं ये लाख रुपे तुमलो इसके आव  
 आनीके व्याजसैं ठ हजार सालीयाना होगा  
 तब मनमें तो कसमसाया लेकिन वापकी वे  
 अदबी नहि करणी तब बोलां हजार कल ह-  
 जूरकी खिदमतमें उस्ताद मौलवीसाहबकूं ने-  
 जताहूं जो फरमावे सो ठनहीसैं फरमां देवे  
 राजा समझ गया लेकिन बोला अच्छा दुसरे  
 दिन मौल वीसाहब आकर कहणेलगे गरीब  
 परवर आपने ये बने आजावकी बात माहागज



कुमारकों क्या फरमाई सूतका खाणा हरामदे  
 एसाही हेतो हजूर दश हजार सालीआनेका  
 गंम माहाराज कुमारकों देदिये जावे तब ह-  
 जूरनें विचारा इस मोलवी तथा धोंकलसिंहकुं  
 अकल आजावे एसा विचारके राजा बोला मो-  
 लवीसाहब में दोनों लम्कोंकों मुलक बगेरे आधा  
 १ देकर तीर्थोंकुं जानाहूं देखताहूं च्यार बरसमे  
 रासतका काम कैसें चलानेहे एसा कहकर स-  
 चीजे आधो आध बांटदिया उर कहा देर  
 अपणे १ पंक्ति उर पढे हुये शास्त्रोंसें केसी  
 रामन बधानेहो रामन सांपके राजा तीर्थों  
 गया अब दोनों नाई अपणे १ पंक्तियोंद्वारा अ-  
 पणे १ राज्यका काम चलाया उस बखत  
 लवीसाहबके कहनेमें एसा दंडोग। निोंकों  
 धोंकलसिंहने सिखाया फोड जो न्यायमारसी  
 यगा सो सजा पायगा तब साहूकारोंदे प-  
 कीया इस रामनमें रहकर अब अपणे  
 करसकनेहें एसा विचार सब एकजे होक  
 कलकर रामसिंहके राजमें जा बसे रामसिं  
 बहोन प्यार करके बसाये साहूकारोंनें  
 हकीमत कह मुणाड तब रामसिंहने अपणे  
 सिपाहीयोमें कहदीया जो फोड आदमी एसा

रास्ततसें आवे उसकुं अपणे राज्यमे खातरक-  
 रके बसाउं पहलेही वर्षमें जब रुपे उधार  
 देणेवाले साहूकार नहीं मिले तब तो कर्पाण  
 लोक जमीन नहीं बोयसके तब तो सरकारमें  
 हासल बढ़ेत कम बेग़ा दशलाखकी आवंद  
 साहूकारोके माल ताल जगत बगेरेके बैठतेथे  
 जिसमेंसें कुलम पैदास आठ लाखकी हुइ  
 खरच सिपाइयोकी तनखा घोमे हाथी बगे  
 रोका सब लगणेपर उधार कीइ देणेवाला नहीं  
 रहणेसें असबाब जो बिका सो सब रामसिंह-  
 हने लीया यूंकरते चोथे वर्षमें सब शस्त्र हाथी  
 घोमे बिकणेपर सब रइयत नागके रामसिंहके  
 तावे हुइ जाचार मोलवीसाहब उर धोंकलसिंह  
 अपणी जमीन बेची सोनी रामसिंहने खरीद  
 रली मोलवीसाहब मक्काकुं तसरीफ लेगये  
 दपीठे धोंकलसीहकुं अपणेपास रखा राजा  
 थोंसें पीठे आकर देखा तो रामसिंह चोगुणी  
 मृद्धिसें राज्यकर रहाहे धोकलसिंह लजरवा-  
 गा हुआ तब राजाने कहा बेटा ये क्या हुआ  
 अब धोकलसिंह बोला हे पूज्य मोलवीसाहब-  
 के कहणेमाफक कुरानसरीफके कायदेपर चला  
 तोनी खुदाने मेरे तरफ कुबजी खयाल नहीं



शहरमें कुतबदीन बादशाह राज करताथा-  
 उसकेपास कुरान पढ़े हुये बहोतसे मोलवीये  
 उसकेबाइस लाख फोजका दलथा एकदिन  
 सब मोलवीयोका आम दरवारथा तब मोल-  
 वीयोने बयान किया जापना हुकनाहुक इतना  
 खरच फजूल क्यों रख ठोमाहे कुरानसरीफमें  
 खुदाका हुकमहे जो आदमी आप अपना  
 इमान ठोमके पराये चीज लेणेका दिल कर-  
 ताहे तो उसकीनी चीज लेणेको दुसराजी  
 इमान ठोमके कोसीस करताहे सो हजूरसें हम  
 पूछतेहे क्या आपनी अपना इमान ठोम कि-  
 सीकी रासत ठीननेका विचार रखतेहो बादशा-  
 ह बोला तोबा २ में कुरानसरीफके बरखिलाफ  
 कनी अपना इमान ठोम कनी किसीकी रासत  
 लेणेका विचार नहीं रखता तब मोलवी बोले  
 यकीन रखिये आपकीनी रासतकों कोइनी नहीं  
 ठीनेगा बादशाहकुं यकीनथा कुरान उर मोल-  
 वीयोका तब बोला आपलोग सच कहतेहे मुझे  
 पक्का जरोसाहे कोइ नहीं मेरी रासत ठीनेगा  
 तो मोलवी बोले रीतके पांचसो सातसो सिपाह  
 रहणे दीजीये वाकीकों रुकसत कीजीये बादशाह  
 बोला वजीरकों कहदूंगा फेर दरबार बरखास्त

जया वजीर जब मुजरे आया तब वजीरकूं सब  
 बात कह मुणाई तब वजीर श्रीमाल सामत-  
 सिंह उसवालनें विचारा बादशाहकी अक़ल  
 मौलवीयोनें निकाल मालीहे इनोकूं समझाणा  
 चाहिये सो एसें कहूंगा तो मानेगें नही बलके  
 गुस्सेमे आकर कहेगें काफिर कुरान मौलवी  
 उर मेरा हुकम अदली करताहे ऐसा विचारके  
 बोला जो हुकम धीरे २ सबको रुकसत करडुंगा  
 अपने मकानपर आके एक खतरूमके बादशा-  
 हकों लिखाके इहां दिल्लीके बादशाहने सब  
 फौज निकालदीहे आप सुरताणहो बादशाहत  
 लेणेकी दरकार होय तो जलदी फौज लेकर  
 दिल्लीपर चढ़आइये नहीं तो ऐसी नाताकत-  
 रासतकों कोइनी ठीनलेगा उस खतमें अपना  
 नाम पना नहीं लिखकर एक बेपारी रूमका  
 जोकी व्यापार करणे देहली आयाथा उसका  
 लिखदिया बादशाह रूमखत पढ़तेही चढ़ाईकी  
 वजीरने सब फौजोके अपसरोकों बुझाकर  
 हुकम दिया अपने २ दस्त खमाइके का-  
 मल तयार रखयो चंददिनमें काम पड़ेगा अब  
 रूमका बादशाह मजलोंमजल हनुदग़थानके  
 मीमपर आया सांगिये सवारोने बादशाहकों

खबरदी रुमके बादशाहकी फोज आरहीहे  
 तब बादशाह सब मोलवियोंसें कही मोलवी  
 बोले हज़ूर आप क्यों करतेहे मेके सरीफको  
 जाताहोगा वह बात वजीरने सुणी तब अपनी  
 सब फोजको हुकम दिया तुम सब चुपचाप  
 इहांसे जाकर आठ कोसके फासलेपर जाव सो  
 जब बुझाउं तनी हाजर होणा वजीरने बाद-  
 शाहसें अरजकी गरीबपर हुकमकी तामील ब-  
 जाइ गइ बादशाह बोला अच्छा कीया रुमका  
 बादशाह पंजाबमें आ पहुंचा सवारोने खबरदी  
 बादशाह मोलवीयोसें पूछा मोलवीयोने कहा  
 खाजेकी जारत जाताहोगा आखिरकों दिल्ली-  
 के एक मजलपर मेरा दिया ठर दिल्लीके  
 बादशाहकुं कहला नेजा तीन दिनमें बिज्जा  
 खाली करो या मोरचे मजबूत करो ये सुणतेही  
 बादशाहके ठोके बूटगये ठर घबराकर मोलवी-  
 योसें कहा जूझम हुवा अब क्या करणा तब  
 मोलवी बोले गरीब परवर क्यों धनरातेहैं हम  
 अनी समझा देतेहे ऐसा कहकर बने खलीफो  
 में फुरान सरीफको माल रुम मुरबाणपास पहुंचे  
 बादशाह फुरब कायदेसें बिठजाये मुसल खेन-  
 की बात चीन पृथकर पूछा हज़ूरया आणा वेसें

हुवा बादशाहने कहाके दिल्लीमें अमल देखल  
करेणेंकूं मोलवी कुरानका सिपारा दिखलाके  
बोले इस किताबमें अगर आपका इकीनहे  
तब तो बसलोट जाइये नहीं तो फरमावे आ  
किस कायदेसें आये बादशाह चुपरहा जव  
उन मोलवीयोने दो तीन बखत बोले बताइये  
आप किस कायदेमें आये तब बादशाह म्यान  
मेंसें खांभा निकालकर दिखलायाके हम इस  
कायदेसें आये तब तो मोलवीयोकूं कुठ्नी ज-  
बाब नहीं आया कुरान ग्वलीतेमें मालके अपणे  
बादशाहपाम पहुँचे बादशाहकूं कहा बस दि-  
ल्लीका किल्ला ग्वाली करदीजीये जो काफर  
कुरानके वचनपर यकीन नहीं रखता उसका  
इमानगया आपकी गियासत गई दोगोटी उर  
सज्जन आप जहा गेहेंगे वहा खुदा देदी देगा  
सुणतेही बादशाहके ठके बूढ़गये खाणा उर  
पीणा नूलगया फिरमें आकर फेर पूछा आप  
लोक फिर क्या करेंगे जो अब चैन करतेहे  
मोलवी बोले हम लोक इनके पास रहजायेंगे  
जो नहीं रखेगा तो आप क्या नहीं जाणतेहे  
मुसलमीनोके कायदाहीहे धन होणेसें अमीर  
नृपे फकीर मरे तां पीर जेसी आ पीनेगी

खुदाकों जो करणा होगा सो करेगा इस बजे राजाने जब बात कही तब धोकलसिंहने पूछा फेर हजूर रियासत गई या रही गजा बोला तब मौलवीयोकी बात सुणके बादस्याह वमा फिकर बंध होकर वजीरकुं बुलाया उर आंखो-सैं पाणी टपकाता हुवा मौलवीयोकी हकीगत कह सुणाई तब वजीर बोला हजूर जापनाह कुरान सरीफका कायदा राजकाजमें क्या देखल करसकताहे ये राजनीति शास्त्रही जुदाहे जिसमें साम दाम दंभ जेदादिक अनेक ठल बल उर बढ़ाछुरीहे खेर इन पदत मूर्खोंकी बातपर फेर ज्यादा अमल मत-करणा बादस्याहने तोबा खाइ तब वजीर बादस्याहकुं दिखासा देकर कहा हजूर दिलमें धीरज रखीये जो कुछ सिपाहदे ठसहीसे जमंगं क्या आपने नहीं सुणाहे रणजीतसिंह सिय पांच घोमेका सूबेदारथा सो अपणी ब-हादुरीसैं पंजाब हत्येका बादस्याह दोगयाथा ठसीबखत रुम सूत्रतानकुं लिखनेजा आप तीनदिन ठहरें फेर मुकाबला करेंगें एक सवार फोजके तरफ जेजा आव पदरमें फोज आवर रुमकों घेर लिया ऐसा हाल देख रुमनें बहला



जेजा में कुठ लेमणें नही आयाहुं जब मेनें एसी खबर पाई तो तुमकों नसियत देणें आयाहुं वजीरनें दोनों बादशाहोंकी मुलाखात यानें संधि कराई दिल्लीके बादशाहसें आणेजाणेका खर्च दिवाकर रूमकों रवाणें कीया इतनी बात सुणकर धोंकलसिंह जैन पंभितोसें धर्म-शास्त्र राज्यनीति दोनों सीखके इस लोकमें उर परलोकमें सुखी हुवा विवेकी आदमीवे अगर जो नुकशान धनका होजाय तो उदास नही होणा चाहिये उद्यममें मजबूत रहणा कारणके निश्चय सत रखणेवाला उर चतुर परिश्रम करणेमे तकलीफ सहणेवाला दावसे उद्यमकरणेवाले पुरपके लक्ष्मी कहांतक जागके जायगी जेसें आजदिन अंगेरेजोके प्रत्यक्ष प्रमाणमे लंदन राजधानी तथा अमेरीका साक्षात् सोने किसी लंका बणरहीहे जहांसे बहोत धनकी आवंद होय उस जगे थोमाब-होत नुकशाननी होय तो सहणाही पन्ताहे बीज जाट करवणी घोता हे अनाज मणो बंध होताहे लेकिन वो बोया हुवा दाणा तो अस-ली कनी नही मिलताहे संपदा उर तकलीफ दोनोंमें सम परिणाम रखवे वो गृहस्थ धन्यहे

संपदा स्थिर नहीं रहे तो विपदा क्या थिर रहती है जो लक्ष्मीकूं श्रीकृष्ण प्रेमसे गोदीमें बेगताथा ऐसी जो लक्ष्मी समुद्रके ठर कृष्णके ही जब नहीं रही तो उमाठ बैकुण्ठके पास कब रहसकती है पूर्वजके पापके उदयसे जो कनी आगे जैसी नाग्यवानी नहि आवे तो नी मनमें धीरज रखवणी क्योंके आपदारूप समुद्रमें मूवतेकूं धीरज हेसो जिहाजहे सब दिन एक तरीखे नहि रहते इस जगतमें सदा सुखी कोणहे लक्ष्मी जब जगतसेठजीकेही स्थिर नहीं रही तो ठर किसके रहेगी प्रेमजी स्थिर कब रहताहे मोतके वश कोण नहींहे ठर विपयाशक्त कोण नहींहे इसवास्ते विपदमे संतोष रखना जो कनी ज्यादा फिकर करे तो इस जवमें रोगोत्पत्ती परजवमें बुरीगती होतीहे तरे २ के उपाय करणैसेनी जब अपणी तकदीर नहीं खुले तो किसी श्रीमंत नाग्यवानका सहारा लेणा कारणके लक्ष्मके सहारेसें छोड़नी पाणीमें तिरणे लगताहे एक नाग्यवानके सधर मुनीमथा वो जब मरगया तो उसका बैठा निर्धन होगया तब सेठ उसकूं नोयरी रखे नहीं लेकिन कनी २ बुटकर काम करणा सोपे



पुरष सो आपदा आणेसें दीन नही होय  
 लक्ष्मी संपदासे गर्व न करे पराया दुख देख  
 दुखी होवे आपमें संकट पने तो सीदावे नही  
 उस पुरषकुं नमस्कारहे समर्थावान होकर  
 पराया पुरषोका कीया हुवा उपद्रवसहे धन-  
 वान होकर गर्व नही करे पंक्ति होकर विनय-  
 वान होय यह तीनों पुरष पृथ्वीमें अलंकार  
 समानहे विवेकी बहीहे जो कोइके संग क्लेश  
 नही करे तथापि बने अदम्योसें तो नूलचूक-  
 केनी कनी क्लेश नही करणा कहाहे जिसकुं  
 खासीका विकार होय उसकुं चोरी नही करणा  
 जिसकुं बहोत नींद आती होय वो जारी नही  
 करणा जिसकुं रोगहे वो भीत्रे आदि रसऊपर  
 आसक्त नही होणा जुवान बसरखणा पथ्यमें  
 रहणेसें रोग भिटही जाताहे धनवान होकर  
 किसीसें बैरविरोध नही करणा नंभारी राजा  
 गुरु तपस्वी पक्षपाती ताकतवर कूर ठर नीच  
 इनोके संग वाद विवाद नही करणा कनी  
 किसी बने आदमीसें धन जमीनादिक्वाग्ने  
 अस्तरचा पम्गया होय तो विनय बुद्धिसें यान  
 निकाल लेणा चाहीये चाणाक्यनीति तथा दं-  
 चारख्यानमे लिखाहे उनम पुरुषकुं आजीजीमे

वस करणा मृगवीरकूं बलसें वस करणा नीच  
 पुरषकूं अल्प उध्यादिक देणेसें वस करणा उर  
 अण्णे वगावरीवाजेकूं अण्णी ताकत देखाकर  
 वस करणा धनके गरजीकूं तथा धनवानकूं  
 विशेषकर गम रखणा चाहीये क्योके क्षमा  
 ग्यणेमें धनकी बढोतरी उर रक्षा होतीहे  
 ब्राह्मणका वन होम मंत्र राजाका बल नीतिशास्त्र  
 अनाथ गरीब प्रजाका बल राजा उर वणिक  
 पुत्रका वन क्षमाहे मीठा वचन उर क्षमा ये  
 दोनोंही धनका मुलहे धन जरीग मोचनअवस्था  
 ये तीन सामनाका सामणहे दान दया उर ईडी-  
 गोवा जीवणा ये तीन धर्मका कारणहे उर  
 गरिगंग परित्याग करणा मोक्षका कारणहे  
 तुषानका क्लेश सब निहाने वर्जणा दारिद्र  
 मंत्राद ग्रंथमें कहाहे ब्रह्मीजी इन्द्र कहाहीहे  
 हे इन्द्र जिस जगे गुणवान वने आदमीकी  
 पुत्रा होतीहे न्यायमें धन पेदा करतेहें उर  
 जगजी वचनमें क्लेश नहीं करता उर जगे में  
 रहतीहें सब दारिद्र कहाताहे हे इन्द्र जो हमेशा  
 जुआ खेतनेहे स्वजनकेसाथ द्वेष रखनेहे रि-  
 मीयागरीमें धनही पाव रखनेहे सदा आत्म  
 तथा पैदाम तथा रखनी माफ रमाव

रखणेवाले ऐसे आदम्योके पास में हमेसां रह-  
 ताहुं विवेकी आदमी उधारकी उगराइ पण  
 कोमलता राखकर करणा दुनियामें निंदा नही  
 होय जैसे करणा ऐसा नही करे तो देणदार-  
 की चतुराइ लाज वगेरेका छोप होय वस्सं  
 अपना धर्म तथा धनकी प्रतिष्ठाकी नुकसाणी  
 होणा संभवहे इसवास्ते लंघन वगेरे न करणा  
 नही करणा लंघन करणे ठर कराणेवाला अं  
 गरेजी राज्यके कायदेसं सजावार हे जो कि-  
 सीको नोजनादिकमे अंतराय देगा वो जीव  
 कृष्णके कुमर दंडण ऋषिकी तरे नोजनकी  
 अंतराय पावे सर्व पुरपोकुं तथा वणियेकुं चा-  
 हिये सो संप तथा च्यारजनोकी सजाहसं  
 काम करणा चाहिये सब काम साधनके साम  
 दाम दंरु नेद ऐसे चार नेदहे जिसमेंनी सा-  
 मसं सर्वत्र कार्यसिद्धीहे वाकी उपाय सामके  
 जोमेके नहीहे करमा ठर करार अदमीनी  
 मीठी जुवानसं वस होजाताहे लेणदेणमें नृत्तसं  
 जो कनी लूगमा पमजावे तो निकम्मा विवाद  
 नही करणा तब पांच पंच चनुर छोकीकमें  
 प्रतिष्ठावंत जो कहे सो मंजूर करणा उन पं-  
 चोका माने तो लूगमा मिटे नही अं

[illegible]

कीया ऐसा द्रव्य जो निरवयव उसकी मिठाई  
 जुजीये सीधा ले आवेगा सो बैठके स्वादोंगे  
 साधोंके उपदेशमें बने लाज होगा स्नान करणे-  
 का मंदिर करवाणेका मूर्तिपूजामें एकांत पापहे  
 इसवास्ते इस बातका जावज्जीव त्याग साध  
 कराय देगा अपनेको धर्मी जाणके बने आदमी  
 जो दृढक धर्मीहे सो धनकी मदत देंगे खेर वो  
 बणिकू तो बेस्याके गया उर दृढक पंथी ऋषि-  
 जीके थानक गया समयसार नाटक ग्रंथमे  
 लिखाहे दया दान उर पूजादिक विषय कथा-  
 यादिक इन दोनोंका एक खेवहे इन दोनोंके  
 मन परणाम आश्री दोनोंकी करणी अंतमे ए-  
 कसीहे कारण ज्ञानीको जोग सोतो निर्जराका  
 हेतुहे अज्ञानीको जोग सोतो बंध फल हेतुहे  
 ये अचरिजकी बात दिखे नहि आवे पृष्ठ कोइ-  
 यक शिष्य गुरु समझावे ? अब वो बेस्याके  
 गया उसनें मनमें विचारा धिक् मेरी बुद्धि सो  
 में सब जन्म इनही पुकर्मोंके करणमें खोया  
 धन्यहे वो सो धर्म करणीके वास्ते गयाहे ए-  
 सा विरक्त नाबना नाबता हुवा बेस्याके संग  
 रातनर रहकर प्रजातसमें निकला रस्तेमें संवे-  
 गधर्मी स्वेतांवरी साधू मिले जिनके मुसस





ताहे निरख तोमकर वे सुमार मोल वधायकर  
 अयोग्यरीते व्याज वधायकर रुसपत देकर  
 अथवा लेकर झूठा मासूल कर्पणोंसें धोखा-  
 बाजी करके खोटा नाकल घसाहुवा रुपया पेसा  
 देकर कोइ खरीदता होय अथवा बेचता होय  
 उसका जंग करके पराया ग्राहकोकूं जरमाय  
 कर नमूना एक बतावे माल दुसरा देणा नही  
 जहां लेणेवालेकूं बराबर दीखे नही ऐसी जगे  
 कपना बेचे नही लिखणे पढणेमें फेरफार करणा  
 नही इत्यादिक उगाइ धोखाबाजी कनी करणा  
 नही इस जवमें सरकारसे दंड परजवमें स्वर्ग  
 मोक्षके सुखमें हानी पहुंचतीहे कोइयक मूर्ख  
 ऐसा कहतेहे कूरु कपटविना कमाइ होती नही  
 आजिविका तो कर्मके आधीनहे लेकिन व्यव-  
 हार शुद्ध रखखे तो उलटे ग्राहक ज्यादा आवे  
 मुनाफा ज्यादा होय इसपर एक दृष्टांतहे एक  
 सुंदरपुर नगरमें देवानामका सेठ रहताथा  
 उसके चार लमका हुवा उरजी उसके परिवार  
 ज्यादाथा तब वो सेठ ग्राहक जब आता तब  
 लमकोकूं समझा रखाथा उसवास्ते गाळी देणेके  
 वहाणोंसें त्रिपुष्कर पंचपुष्कर ऐसा शब्द कहकर  
 खोटी तराजु बट बापरकर लोकोकूं उगताथा

उसके ओटे लम्बेकी बहू बहोत समझारपी  
 उसनें सुसरेकूं आने समझाया तब सेउ बोला  
 एसा नही जूं नो पेठ नगाड केसे होय यह  
 शास्त्रोंमे लिखाहे नूरा आदमी कोणसा पाप  
 नही करे तब बहू बोली हे पूज्य एहमें परजत  
 हे धर्ममें चलाणेचाले आदमीके सब काम सिरु  
 होनाहे इस बातकी परीक्षा करणी होय तो  
 उ महीनेतक शुद्ध व्यापहार करके देरतो इत-  
 नेमें परगीत आ जाये तो आगेनी एसा परते  
 रहणा एत सेउ इस बातकी परीक्षा करणों  
 तगाही चरणोपाय अनुक्रम सादर बहोत एाणे  
 एसा आजीविता अही गये चलाणे लागी धर  
 एसा सोना सोना परसपरस जाके बचा तब  
 भेदेही यह इतकं गनीति चणजाणेकूं बोली हे  
 मान एहक एसाय विपनी परतहे व्यापो-  
 नाजन एत अपर सोया जाय सोनी केर  
 मीठा आवाजे एसा बहूए एक दोदपर सोना  
 मंदाया नमक अणो नामका कोनता एसाया  
 एहक उ महीने परहर एक पाणीके ६६म  
 एत दीन नमक एक माही निमजगड भीर  
 एत महीने परकी नमके पेठमें कोनता  
 निमजगड मंदाया नाम विमदाया देमाए

सेठकूं लायकर कांठला दीया ऐसा देखकर  
 सेठकूं हक्क कमाणेपर आस्ताआई शुद्ध व्यापार  
 करता हुवा सेठ बना धनवांन होगया श्रावक  
 धर्ममें अगवाणी जया उसका नाम लेणेसें सब  
 विघ्न टलगया तब जिहाजोके चलावणेवालो कूं  
 आदि ले सब मनुष्य हेलाहेलो नाम पुकारणे  
 लगा विचारवानोकूं सब पापोके काम ठोमणा  
 उसमेंनी अपणा मालक दोस्त अपणेपर विश्वा-  
 स रखणेवाला देव गुरु वृद्ध तथा बालक  
 इनोके संग बैर विरोध करणा नही इनोकी  
 धरबट खाणी नही जमाखाणा उनोकी हत्या  
 करणे जेसीहे झूठी गवा देणेवाला बहोत दि-  
 नोतक गुस्सा रखणेवाला विश्वासघाती ठर  
 कीये उपगारीका उपगार खोपणेवाला कृतघ्न ए  
 च्यारोही कर्मचंमाल ठर पांचमा जातिचंमाल  
 जाणना विश्वासघातपर विसेमिराका दृष्टांत  
 हे विसाला नगरीमें नंदराजा जानुमती राणी  
 उनोका पुत्र विजयपाल ठर बहुश्रुतनामे मं-  
 ब्रीथा नंदराजा जानुमती राणीपर आसक्त  
 होणेसें सनामेंनी राणीकूं पासही रखताथा  
 शास्त्रोमें लिखाहे राजाका वैद्य ठर गुरु तथा  
 मंत्री ये लोक राजाकूं प्रसन्न रखणेकूं मीठी २



राजाके सामने हमेसां बांचे जो वाक्य यथार्थ  
 आवे उसका विस्तार करे बाकी अवशेषकूं क-  
 बिताका देखल मानता हुवा बांचके सुणावे  
 एकदिन क्यामें मांस खाणेका निषेध अधि-  
 कार सात्वकी आया व्यास बोला यःपुमान्  
 तिलतुप प्रमाणं पलजंनुंक्ते साधो अवन्त्यां कुंती-  
 पाके पचति अर्थात् जो तिल तुसजर मांस  
 खाताहे वो मनुष्य कुंतीपाक नर्क नीचेकी पृ-  
 थ्वीमें पकताहे ये बात सुणके राजा चमक  
 उठा ऐसी व्याख्या राजाने कनी बने, व्याससें  
 नही सुणीथी राजा बोला अहो व्यासजीके  
 पुत्र ऐसा अर्थ आपने सुणाया ये अर्थ झूठाहे  
 क्या व्यासजीसें आप ज्यादा पंक्तिहो अगर  
 आपका कहा अर्थ सच्चाहे तब तो वेदमे जो  
 यज्ञोमें नानातरेके पशुओंकों होमके मांस  
 खाणेकी विधी लिखीहे उस मुजब असंक्षा  
 जीवोका पुरोनासा अर्थात् यज्ञ कीये बाद बचा  
 जो मांस सो तुमारा बनेरा तथा अनेक राजा-  
 ठनें खाया ठर खातेहें क्या वो सब नरक  
 गये होंयगे वेदके वचन कनी झूठे होसकतेहे  
 जोकी जगवान ब्रह्माजीने प्रकास कराहे जिस  
 यज्ञोकी तारीफ वेद व्यासजीने पुराणोमें गा-



दांन करे उर एक आदमी एक जीवकों मरतेकूं  
 बचावे तो कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन अहिंसा  
 बराबर कोइ धर्म नहीं राजा स्वार्थीये सब  
 मार्ग कजी नहीं बतासकतेहे ऐसा कह व्यास  
 घरकूं आया राजाने पेटीये उर रुपये बंधकर  
 लिये चंददिनमें व्यास घरकूं आये तब व्यास-  
 ण रोणेलग्गी व्यासने पूछा क्या जया व्यास-  
 णने सब हकीमत कह सुणाइ व्यासका लम्का  
 बोला आप केसी कथा हमेसां वांचतेहे सो  
 राजा सचे अर्थकूं झूठा कहणेलग्गा व्यास बोला  
 कलसुबे राज महलमे आजाणा देख केसाक  
 राजाकूं समझाताहूं खेर फजर होतेही व्या-  
 सजी राजापास जाके आसीर्वाद दिया राजा  
 नमस्कार कर सत्कार कर पूछा कुशल क्षेमहे  
 व्यासने कहा अन्नदाता कुशल क्षेमतो हजूरकी  
 सु निजरसेंही रहसक्तीहे राजा बोला महा-  
 राज कथा इतनेतक तो आपके पुत्रसें मुणी  
 लेकिन् लोकोमें मैने ऐसा सुणायाके व्यास-  
 जीका पुत्र बन्ना पंभितहे सो तो कुछ नहीं  
 व्यास बोला गरीबपर पंभताईका घर दूरहे  
 कलियुगके पंभतहे आप तो कल्पवृक्ष फामधेनु  
 साक्षात् ईश्वररूपही ऐसा सुणकर राजा प्रसन्न





व्यासजीसँ पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहै व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी उर नेरी चतुराईकी तारीफ करताहै ऐसा कहकर ऊँट व्यासजी अपने लम्बेका हाथ पकड़के अपने घर ले आये बेटा बोलो चाचा तुमने वना अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहै आपने स्वर्ग जाणा कैसे बतलाया तब व्यासजी बोले अरे नाइ अपने हिसाबसँ नर्क जावे तो क्या उर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपने तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जैसें राजी रहे वैसें करणा तबही कुछ देताहै इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म विगन जाताहै इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसँ राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य बताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें ऐसा लिखा हुवा वांचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब स्वाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे -



चूथे जेसा बना विदरूप दीखताहे म्वेच्छ अ-  
 नार्योका खांणापीनाहे इस वेंगणकूं बहुत बीज  
 होणेंसैं जैनधर्मवाले अजन्म कहतेहे ठर पुरा-  
 णोंमें व्यासजीनं लिखाहे जो प्राणी वेंगण  
 खायाहे ठर ठ महीनेमें आदमी मरजावे अगर  
 एक बीजनी जो पेटमें रहजावे तो प्राणी नर्क  
 जाताहे तब राजा बोला वैद्यजी हमने जब  
 वेंगणकूं अच्छा कहा तब तो आपनेजी अच्छा  
 कहा ठर मेने बुरा कहा तब बुरा कहा ये क्या  
 हाजहे तब वैद्य बोला गरीबपरवर नोकर आ-  
 पके क्या वेंगण चंदजीके बापके आप राजी  
 रहो हमकूं तो बेसाही कहणा जरूरहे ॥

हुदा-जाटकहेमुणजाटनी इसीगांवमेंरहणा ॥

ठंठविजाइलेगया हांजी २ कहणा ॥१॥

सो हमकूं तो बेसा कहणा जरूरहे ऐसा  
 खुसामंदीया वैद्य राजाके रोगका बढाणेवाला  
 होताहे ऐसा विचार मंत्री राजाकूं कहणेलग  
 महाराज सजामें राणीसाहिबकूं पास रखणा  
 वाजिवनही क्योंके नीतिमे लिखाहे अति नि-  
 कट विनाशाय अतिदूरेतिनिष्कजः सेव्यतामध्य  
 जागेन राजाबन्दिगुरौस्त्रियः ॥ १ ॥ अर्थ ॥  
 राजा अग्नि गुरु ठर स्त्री ए च्यार बहोत न-



एकर आदमीका दिन्न पिघलाकर दगावाजीसँ  
 मनुष्योंका प्राण लेताहे इसवास्ते पेस्तर तू मेरी  
 गोदमें सोजा पीठली रात्रिकों में सोउंगा तब  
 राजकुमार उस बंदरकी गोदमें सो रहा बाघने  
 अनेक ठलवल कीये लेकिन बंदरने राजकुमार-  
 कूं नीचे भाला नहीं जब पिठली रात्री आइ  
 तब राजपुत्रकी गोदमे बंदर सूता बहोत स-  
 मझाया हे कुमार देख ऐसा नहीं होजाय  
 जो बाघकी दया लाके मुझे तू नीचे पटकदे में  
 तेरे सरणागतहूं मेरे प्राण तेरे हाथहे ऐसा  
 समझकर कुमरके गोदमें बानर सोरहा इतनेमें  
 बाघ आकर बहोत आजीजी करणे लगा हे  
 कुमर में बहोत झूखाहूं तुझे वना पुन्य होगा ये  
 बंदर तेरे क्या लगताहे उर इसकूं तूं मुझे  
 देदेगा तो तेरेजी प्राण बचजायगें तब कुमर  
 अपनी ज्यांनकी रक्षावास्ते बंदरकूं नीचे भाल-  
 दिया तब बंदर बाघके भूंमे गिराये स्वरूप  
 देख के बाघ हसणे लगा तब बंदर बाघके  
 भूंमेसँ निकलकर रोणे लगा तब बाघ बंदरकूं  
 रोणेका कारण पूछा तब बंदर बोला जो कोइ  
 आदमी अपनी जाती ठोकर पराइ जातिपर  
 आसक्त होतेहे उण मूर्खोंकी क्या गती हो-



गम स्नानके पापसँ बूटता नही ऐसा सुणकर  
 दुसरा अक्षर से ठोमदीया मित्रकूं मारणेवाला  
 कृतघ्नी इच्छा करणेवाला कृतघ्नी ठर विश्वास-  
 घाती चोर ये च्यारोंही जहांतक सूर्य चंद्रमाहे  
 वहांतक नर्कमें रहेंगे तव कुमर तीसरा अक्षर  
 मि कहणा ठोम दीया राजन् तूं अपणे लम्बेका  
 कन्याण चाहताहे तो सुपात्रांकों दांन दे का-  
 रण गृहस्थ दांन देणेंसँ शुद्ध होताहे ऐसा  
 वचन सुण कुंवर चोथा अक्षर रा ठोमदिया तव  
 अग्ना होकर कुंवर बाध ठर बंदरका सर्व वृ-  
 तांत सुणाया तव राजा पन्धेमें रहा शारदा-  
 नंदनकूं पूछणेजगा हे वाला वनमे जो बीती  
 बात सो तुझे क्या खबर सो तेने सब हकी-  
 गत श्लोकोमे बनावर कहकर भेरे पुत्रकूं अच्छा  
 करदिया तव पंक्ति बोला हे राजन् जिनेश्वर  
 देव सज्जुके प्रतापसँ भेरे जीझाग्रपर सरस्व-  
 तीहे जिस्सँ जेसँ मेने जानुमती राणीके जां-  
 घका तिख जाण्या तेसँइ यह बातजी जाण-  
 ताहूं तव पीछे दोनोंकी मुलाखांत जइ दोनोंके  
 आनंद जया इसवास्ते विश्वासघात करणा  
 नही इस लोकमे पाप दो प्रकारकाहे एक तो  
 गुप्त ठर दुसरा जाहिर वो वानेका पापजी दो





समाधान ऐसा है जो अन्याइ अधर्मी सुखी दिखते हैं और धर्मी दुखी दिखते हैं ये सब पूर्व-कृत पुण्यपापका फल है इस जवका उनोके नहि जाणना श्रीधर्म घोपसूरजीने कहा है पुण्यानु बंधिपुन्य १ पापानु बंधिपुन्य २ पुण्यानु बंधिपाप ३ पापानु बंधिपाप ४ इसतरेसें पूर्वकृत कर्मके सुखदुखके चार जेद है जो जीव जैन धर्मकी विराधना नहीं करते हैं वो जीव भरत-चक्रवर्तिकी तरह निरुपम सुख पाते हैं वो जीव पुण्यानुबंधवाले कहाते हैं जो जीव पूर्वजन्ममें अज्ञानसें कष्ट करे वो जीव कौणिक राजाकी तरे बहोत ऋषि निरोग शरीरवाला होता है पापकर केनी धर्म करे नहीं और पापकर्ममें रक्त होय वो पापानुबंधिपुन्य जाणना जो जीव पापके उदयसें दलझी और दुखी हो करकेनी लेसमात्र दयाधर्म होणसें झमक मुनिकी तरे जैनधर्म पाता है वो पुण्यानुबंधिपाप जाणना ३ और जो जीव काल शोकरिकश्वंमाल कसाईकी तरे क्रूर-कर्म करणेवाला अधर्मी निर्दंड करे हुये पापका पठतावा नहीं करणेवाला ज्यों ज्यों दुखी होता जाय त्यों त्यों ज्यादा २ पापकर्म करता जाय वो पापानुबंधि पाप कहलाता है पुण्यानुबंधिपुन्यसें

तरेकाहे एक ठोटा ठर एक बन्ना खोटी तराजु  
 बट माप बगेरह रखणा ये ठोटा गुप्त पाप ठर  
 विश्वामघान करणा यह गुप्त महापापहे प्रगट  
 पापका दो प्रकारहे एक तो कुखाचारसें करणा  
 सो दुसरा लोकीक लाज ठोम्के करणा सो  
 गृहस्थलोक कुखाचारसें आरंज समारंज कर-  
 तेहें तेसें म्लेच्छ लोक कुखाचारसें हिंसा कर-  
 तेहें वो जाहिरा ठोटा पाप जाणना तेसेंही  
 साधुका बेप पहरकर निर्बज्जपणेसें हिंसा प्र-  
 मुख करतेहे वो प्रगट महापाप जाणना ल-  
 ज्या ठोम्के महापाप करणेसें अनंत संसारी-  
 पणा होताहे क्योंकि प्रगट महापाप करणेसें जैन  
 शासनका उमाह होणेसें महापापहे कुखाचारसें  
 प्रगट लघु पाप करे तो थोमा कर्मबंध होताहे  
 ठर जो गुप्त ठोटा पाप करे तो तीव्र कर्मबंध  
 होताहे जो कोइ आदमी पराये अवगुण बिड  
 ठर मर्म उघामकर स्वार्थ साधनकी उन्नती क-  
 रतेहें वो कजी होती नही जेसे अरटकी धर-  
 नांज खाती ठर नरी होजातीहे कोइ एसी  
 शंका करतेहे की न्यायवान ठर सदाधर्ममें  
 चलणेवाले दुखी देखणेमें आतेहे ठर अन्याइ  
 अधर्मी लोक सुखी देखणेमें आतेहे जिसका

समाधान ऐसाहे जो अन्याइ अधर्मी सुखी  
 दिखतेहे उर धर्मी दुखी दिखतेहे ये सब पूर्व-  
 कृत पुन्यपापका फलहे इस जवका उनोके नहि  
 जाणना श्रीधर्म घोपसूरजीने कहाहे पुण्यानु  
 बंधिपुन्य १ पापानु बंधिपुन्य २ पुण्यानु बंधि-  
 पाप ३ पापानु बंधिपाप ४ इसतरेसैं पूर्वकृत  
 कर्मके सुखदुखके च्यार जेदहे जो जीव जैन  
 धर्मकी विराधना नही करतेहे वो जीव भरत-  
 चक्रवर्तिकी तरह निरुपम सुख पातेहे वो जीव  
 पुण्यानुबंधवाले कहातेहे जो जीव पूर्वजन्ममें  
 अज्ञानसैं कष्ट करे वो जीव कोणिक राजाकी तरे  
 बहोत ऋद्धि निरोग शरीरवाला होताहे पापकर  
 केनी धर्म करे नही उर पापकर्ममें रक्त होय वो  
 पापानुबंधिपुन्य जाणना जो जीव पापके उद-  
 यसैं दलझी उर दुखीहो करकेनी लेसमात्र  
 दयाधर्म होणेतैं डमक मुनिकी तरे जैनधर्म  
 पाताहे वो पुण्यानुबंधिपाप जाणना ३ उर जो  
 जीव काल शोकरिकश्वंमाल कसाईकी तरे क्रूर-  
 कर्म करणेवाला अधर्मी निर्दइ करे हुये पापका  
 पठतावा नही करणेवाला ज्यों ज्यों दुखी होता  
 जाय त्यों त्यों ज्यादा २ पापकर्म करताजाय वो  
 पापानुबंधिपाप कहलाताहे पुण्यानुबंधिपुन्यसैं

बाहरकी शुद्धि उर अंतरंग शुद्धिनी पातेहे दोनोंमेंसे एकनी शुद्धि जिसने नहि पाइ उस मनुष्यजन्मकों हिकारहे जो जीव पदवी अठे परिणामसे धर्मकाम मुरू करे उर पीठेमें शुन परिणाम उतर जाणेसें पुरा धर्म करे नही वो जीव परभवमें आपदा संयुक्त संपदा पावे इसतर कोइ जीवक पारानुबन्धी पुन्यके उदय-सें इस लोकमें दुखकष्ट जनावे नही तोनी उसकं अगले नवमें परिणामसें निश्चें पापकर्म-का फल मिलेगा इसमें शंका नही कहाहे के प्रव्य पैदा करणकी बहोन इच्छामें अंधा हुवा मनुष्य पापकर्मकरके जो धन पातेहे वो धन मांसमें पोये हुये लोहके कांटेकी तरे उस अ-दमीका नास करे बिगर पचता नही इसवास्ते जिसमें स्वामीप्रोह होय गया मांसनही चो-री वगेरे सर्वथा गोमणा उरमें इसलोकमें उर परलोकमें अनर्थ उत्पन्न होताहे जिसवानमें किसीकों थोमीनी तकलीफ पैदा होय ॥ व्यवहार तथा घर दुकान करावते तथा जणोंमें तथा रहणेमें जो कुठ होय सो वर्जणा कयाके किसीकों तकलीफ देणेसें अपणे सुखकी उर धनकी बढोतरी नहि होती कहाहे के जो कोइ

आदमी मूर्खताइसमें मित्रकं कपटमें धर्मकं सुखसे  
 विद्याकं धूर ठर पओरताइसमें स्त्रीकं बस करणा  
 चाहे तेसमें दुसरेकं तफ्ज़ीप देकर आप सुख-  
 की चाह करे उसकं मूर्ख जाणना विवेकी लो-  
 कोको चाहीये सो ज्यों अपणोपर लोक प्रीति  
 करे तेमें धजणा क्योके इंद्रीयां जीतनेमें वि-  
 नयगुण पैदा होताहे ठर विनयमें अत्रे २ गुण  
 पैदा होतेहे तब सब लोक उस गुणोके पि-  
 ठामी प्रीति रखतेहे ठर लोकोके अनुरागमें  
 सर्व संपत्ति पैदा होतीहे चतुर पुरुषकों चा-  
 हिये अपणो घरके धनका नफा नुकसान कीया  
 हुषा संग्रह बगेरह बात कोइके आगे नही  
 कहणी क्योके चतुर आदमी स्त्री आधार पुण्य  
 धन गुण दुराचार मर्म ठर मंत्र ये आव चीज  
 अपणी ठीपाके रखणी कोइ अजाण अदमी  
 ऊपर खिखी आव बातोंमेंसें पूछे तो झूठ तो  
 नही बोलणा जेकिन् एसा कहणा नुमारे इस  
 बातमें क्या मतलब हे एसा उत्तर जापानुम-  
 तिसमें देणा राजा गुरु बगेरे बने आदमी इन-  
 मेंकी बात पूछे तो सच २ जेसा होय बेसा  
 कहदेणा क्योके मित्रोके साथ सच बोलणा  
 ठरतके साथ मीठा बोलणा दुस्मन साथ झूठ

लेकिन मीठा बोलणा उर अपणे मालकके साथ उनोकों अच्छा लगे ऐसा सच बोलणा सच बोलणा ये मनुष्यकूं बना आधारहे कारणके सच बोलणेसें विश्वास पैदा होताहे इसपर एक दृष्टांतहे दिल्ली शहरमें एक मोहनसिंहनामका पारंगत गढ़नाथा वो बना सत्यवादीथा तभी उसकी मीनिं फेल रहीथी बादशाह एकदिन उसकी परिक्षा करणेकूं उस मोहनसिंहकूं पुत्रा तुमारे पास कितनाएक धनहे मोहनसिंह बोला में अपना बड़ीयाता संजानके कहेंगा तमनें अपना बड़ीयाता संजानके अज करी। मरीजपर मेरेपास आसरे भोगगी लाख रुपया होगा बादशाह बोला में थोडा गुणायवा लेकिन इसने तो बहुत कहा बादशाह प्रसन्न होय। तमनें पागलपद देकर अपना निज खजाना साप दीया बिंकी पुरवई चाहीये सो कष्ट आपदामें साहाय करे इसवास्ते एक मित्र कण्ठा वो भर्त्सना तथा धनमें प्रतिष्ठामें तथा उरनी अन्ध गुणाम अन्धी बगवरीका बुद्धवान हर निरुत्तरी। होय मनुष्यजालमें लिखाहे साक्षात मित्र बिद्वत्त नकिर्मदित होय ना साक्षातें बरपदा काम

अपनेसे राजापर उपगार नहि करसके ठर  
 राजाका दोस्त राजासे ज्यादा शक्तिवान होय  
 तो वो राजासे इर्ष्यासे बैर विरोधकर बैठताहे  
 इसवास्ते राजाका दोस्त मध्यम शक्तिवाला  
 होणा चाहीये मित्र ऐसा होताहे सो आपदा-  
 कृ दूर कर विपमवखतपर सहाय करताहे  
 जिस वखतमें सगा जाइ ठर वाप ठर कोइनी  
 स्वजन काम नही देसकताहे रामचंद्रजी क-  
 हतेहे हे लक्ष्मण अपनेसे वना ठर समर्थकी  
 साथ प्रीति रखणी मुझे रुच तीनही कारण  
 उसके घर जब आप जावे तब तो अपना कुछ  
 आदरसत्कार होता नही अगर वो जब अपने  
 नकानपर आवे तब उसकी सब तरेसें हाजरी  
 नरणी पने ठर धन खरच करणा पने ऐसाहे  
 तथापि जब कोइ वना काम आय पने तो वने  
 आदमी बिगर सुघरतानी नही ठरनी हरतरेके  
 फायदेहे क्योंकि यातो आप समर्थावान होणा  
 या समर्थकूं हाथमें रखणा नही तो कार्य सा-  
 धनका दुसरा रस्ता नहीहे वने आदम्योंकों  
 चाहीये सो हलके आदमीके संगती दोस्ती  
 करणा कोइ काम ऐसा आय गिरताहे सो ह-  
 लका आदमीसेही निकलनेका होताहे पंचा-



ख्यानमें लिखाहे जंगलमें बंधनमे पने हुये  
 कबुतरोके बंधन ऊंदरने बुनाये सुईका काम  
 तलवारसैं वणे नही मित्रोकूं शुद्ध मनसैं जाइ-  
 बंधवोंको सन्मानसैं स्त्रीजेंको प्रेमसैं नोकर  
 चाकरकूं दांनसैं दुसरे लोकोकूं चतुराईसैं बस  
 करणा कोइ वखनपर दुष्ट अदमीकोंनी अग-  
 वाणी करणा परताहे अपणा मतलब सिद्ध  
 करणेकूं रसकूं चाखणेवाली जीन लगाइ कर-  
 णेकी वखत एसी चतुरहे सो दांतोंको आगे कर-  
 के अपणा काम साधतीहे कांटाहे सो प्रायें दु-  
 खदाइहे लेकिन उस विगर निर्वाह होता नही  
 देखो खेत गाम घर बगीचोकी रक्षावास्ते प्रायें  
 कांटोंकी घाम लगाइ जातीहे जहां प्रीनी मोह-  
 पन होय वहां लेणदेण करणा नही जिस अ-  
 दमीमें मैत्री नही करणी होय वहांही लेणदेण  
 करणा छर जहां अपणी इज्जत जाणोका मर  
 होय वहां खमा नही रहणा सोमनीविमें लि-  
 खाहे जहां लेणदेण छर सामान रहणा होय  
 वहां लगाइ दृये विगर रहे नही अपणो दोस्त-  
 कोंनी कोइ चीज सोपणी होय तो गनाही  
 रखे विगर नहीं सोपणी मेमेंड कोइ चीजवख  
 किर्मीमें नेत्रणी होय तो मित्रके साथ नेत्रणी

नहीं अगर विश्वास रखे तो धनकी हानी  
 नहीं रखे तो अनर्थ होय विश्वासवाला या  
 अविश्वासवालाहो लेकिन ऐसा मित्र बिरला  
 होगा सो अपनी टुपाकर सौंपी चीजपर लोभ  
 नहीं करे बने २ सेठ साहूकारोंकी बुद्धि अस्त-  
 विस्त होजातीहे पराङ् जमा जब अपने घरमें  
 आपमे तो मनमें कहतेहैं हे इष्टदेव ये घरबट  
 घरणेवाला मरजावे तो तुझे प्रसाद चढाऊंगा  
 जरूरसें धन अनर्थकी जगहे लेकिन जैसें अग्नि  
 बिगर तेसें धन बिगर गृहस्थका काम चलता  
 नहीं इसवास्ते चतुर पुरपोंको चाहिये सो अ-  
 ग्निकी तरे धनका जावता करे एक धनेश्वर सेठ  
 अपना सब धन माल बेचकर आठ रत्न एक  
 क्रोममें खरीद कीया किसीकूं खबर नहीं पमे  
 इसतरेसें अपने मित्रकूं सौंप दीया पीछे आप  
 धन कमाणेकूं परदेश गया वहां बहोत दिन  
 रहा अंतमे बेमारीके बस मरणे लगा तब लो-  
 कोनें पूछा कुछ समाचार अपने बेटोसें कहणा  
 होय तो कहदो तब सेठ बोला इहां जो मेनें  
 बहोत धन कमाया सो तो लोकोंमें ठधार  
 लेणाहे सो तो पुत्रोंको मिलणा मुसकिलहे ले-  
 किन् एक क्रोमके आठ रत्न मेरे मित्रके पासहे



पासमें होगा जब चोर भाज लेकर चले गये  
 सेठ अपनी वस्तीमें आया एकदिन वे सब चोर  
 बहोतसा भाजताज लेकर आये तब सेठ उन  
 चोरोंकूं बोला हमारे रुपये जानूं चोर बोले  
 हमने कब रुपे लीयेथे आखिरकों लम्ते २ स-  
 रकारमें गये हाकम पृठणे लगा कोइ गवा  
 साक्षीहे सेठ बोला एक मीन्नीहे चोर बोले  
 सरकार बणीया सरासर झूठाहे जंगलकी लों-  
 कनीकों मीन्नी बतलाताहे इतना सुणतेही हा-  
 किम समझगया के बणीया सच्चाहे लेकिन  
 बन्ना धूर्तहे उसी बखत सेठके सब रुपे दिजया  
 दिये गवाही ऐसा काम देताहे किसीमें जमा  
 धिरग गवा धरदी गइहो ठर वो बढलगया  
 होय तो धरघट निकाजणेकी चतुराइ बेरया  
 जेसी करणी वो दृष्टांत ऐसाहे एक पारीक घा-  
 तनके पास दस हजार मोहरेंथी वो किसीका  
 बिश्वास फरे नही उस गांवके धादिर एक  
 जोगीकी छूंप्मीथी वो बाबा बगानेक ठर पेसा  
 नही रखताथा किसीने रोटी लायदी तो खा-  
 यली नही तो किसीके घर जाता नहीथा  
 अदख २ जपताथा न किसीके पाससैं पुठ  
 मांगता कोइ रुपया देता तो लेता नहीथा एक



में क्या करूं इसके लालचसें कोई मुझे मार  
 जायगा इस बख्शेको दूर रख ज्यों ज्यों ब्रा-  
 ह्मण बढ़ोतही नम्रतासे पांव पकड़के आजीजी  
 करणेलगा दुनियामें आने हाथही धी गिरताहै  
 तब जोगी बोला उस आत्मेमें इस थेलीको  
 रखके तालाबंद करके कुंची तेरेपास लेजा  
 किसीसे कहणा मत तब वो ब्राह्मण खुस हो-  
 कर इसी तरेसें घरके चलधरा थोमे दिनबाद  
 योगीने थेली निकालकर विचारणे लगा एक २  
 मोहरके अगर पच्चीस २ रुपये बटेगे तो अठ्ठाइ  
 लाख होगा होते धन तकलीफ पाणा ये वे  
 अकलीहै इसबातका कोई गवा साक्षी तो हे-  
 नही यह धन तो मेरा हो चुका ऐसा विचार-  
 कर जोगी अब गृहस्थोसें कहणेलगा बाबा  
 एक जोगी यानी छटका हासिल कीयाहै पत-  
 वाके तो देखें उन छोकोके पाससें एक जाम-  
 साही पेसा मंगाके बाबाजी फुठ जंगलकी प-  
 तीमें घरके अंगीठीमें पहले मोहर धर दीया  
 करे ठंढा हुये बाद वो मोहर निकालकर उन  
 गृहस्थोके हाथ बिकवाणा सुरू करा बाबा बोले  
 लो बच्चा एक मठ तो बनवा माले नाम रहजा-  
 यगा अब तो बाबेकुं रसाणी किमीयागर जाण-

लंगोटी उर तूँवा चिमटा रखताथा उस ब्राह्मणकों तीर्थ जाणेकी जरूरी नइ मनमें विचारणे छगा वणियोकूं सों पूगा तो खाजायगें कारण व्याजके लालचसें पहली तो धरणेवाला मांगे नही देवाला निकाले बाद वणिया देता नही इय बात दुनियांमे मसहूरहे ॥

हुदा—कंताकबहुनकीजिये वणिकपुत्रविसत्रास ॥

धीरजादेकेधनहरे रहेदासकोदास ॥ १ ॥

दुसरे जेपधारी पददर्शनवालेकी जमातो बहोतही राजीपेकेसाथ हजम करताहे निहूँता देदेके चंगेमाल खिलाताहे उस लालचमें ब्राह्मण उर जेपधारीकी जमा जाते रहतीहे एसा विचार करते बने त्यागी बेरागी जोगी फकूर याद आया मनमें विचारा ये बाबा कोमीजी नही ठीपताहे एसा विचार बाबेजीके पास एकांतमे जाके बोला बाबा साहिव बनी मह-रवानी होगी में आपकी कृपासे च्यारों धाम फिर आउं अगर ये आपके पास धरलो तो ये बना आस्तान होगा आप तो परमार्थ साधते हो दुसरे जोनी साहूकारोका मुझे जरोसा नही आता आप निस्पृही इस सोनेको धूल मटी समझतेहो तब योगी बोला चल २ इहांसे

में क्या करूं इसके लाजचसें कोइ मुझें मार  
 जायगा इस बख्सेको दूर रख ज्यों ज्यों ब्रा-  
 ह्मण बहोतही नम्रतासे पांव पकम्के आजीजी  
 करणेलगा दुनियामें आने हाथही घी गिरताहे  
 तब जोगी बोला उस आजेमें इस थेलीको  
 रखके ताजाबंध करके कुंची तेरेपास लेजा  
 किसीसैं कहणा मत तब वो ब्राह्मण खुस हो-  
 कर इसी तरेसैं धरके चखधरा थोमे दिनबाद  
 योगीने थेली निकालकर विचारणे लगा एक २  
 मोहरके अगर पच्चीस २ रुपे बटेगे तां अढाइ  
 लाख होगा होते धन तकलीफ पाणा ये बे  
 अकलीहे इसवातका कोइ गवा साक्षी तो हे-  
 नही यह धन तो मेरा हो चुका ऐसा विचार-  
 कर जोगी अब गृहस्थोसैं कहणेलगा बाबा  
 एक जोगी यानी छटका हासिल कीयाहे पत-  
 वाके तो देखें उन लोकोकें पाससैं एक जाम-  
 साही पेसा मंगाके बाबाजी पुठ जंगलकी प-  
 तीमें घरके अंगीठीमें पहले मोहर धर दीया  
 करे ठंठा हुये बाद वो मोहर निकालकर उन  
 गृहस्थोके हाथ बिकवाणा सुरू करा बाबा बोले  
 लो बच्चा एक मठ तो बनवा लावे नाम रदजा-  
 यगा अब तो बाबेकुं रसाणी किमीयागर जाण-





लिया लोकोसें पृथा जोगीबाबा कहा लोकोनें  
 इसारेसें बतलाया तब नजीक जाकर धीरेसें  
 बोला महाराज अठे हो जोगी बोला तुम  
 कोणहो कहाँसे आये क्या नांमहे ठर क्या  
 कामहे तब ब्राह्मन बोला महाराज में वो ब्रा-  
 ह्मनहूं जोकी दश हज़ार मोहरे धरगयाथा ये  
 बात सुणतेही बाबेजी बोले अरे इस तूखे ब्रा-  
 ह्मनको सेर आटा देकर बाहर निकालो ऐसे  
 जिधुकोको मेरेतक अंदर केसे आणे देतेहो  
 एसा कहता ठठके अंदर चलागया इतनेमें  
 नोकर आके ब्राह्मनकुं बोला लेजा सेर आटा  
 हुकमहे बाबेजीका ब्राह्मन तो मूँच्छा खाके ज-  
 मीनपर गिरगया नोकरोनें उठाकर बाहिर  
 चोकीपर धरदिया जब जाग्रत हुवा तब हाथ  
 मोहरें २ करता फिरणेलगा मनमें विचारणेलगा  
 गवा साक्षी विगर सिरकारजी तो सुणोगी नही  
 दुसरे सब लोक मुझें झूठा कहेंगे मेरी कोण  
 सुणोगा क्या करूं कहाँ जाउं हा विधाना  
 मेरी वे अक्खीका फल मुझको मिला एसा वो  
 ब्राह्मन निरास दिवानेकी तरे मोलणेलगा ऐसे  
 फिरतेकुं एक बेस्याने देखा तब उस ब्राह्मनकुं  
 बुलाके बहोत धीरज ठर दिखासा देकर पृथा







विधाताका कोप होताहे तब रसायण जूवा फाटका अंजनसिद्धि ठर यक्षणीकी गुलामें प्रवेश करणेकी बुद्धि होतीहे जो अदमी मंदि-  
रकी धर्मकी सब्बी या झूठी सोगन खातेहे उ-  
सका बोधबीज जाते रहताहे ठर अनंत शं-  
सार रुखताहे किसीकी जमानत नही देणी  
कारण जमानतनी एक आपदाहे ये पांच चीज  
आपदाका कारणहे घरमें दखझी होकर दो  
ठरत रस्तेपर खेत जमानत देणी गवाही जर-  
णी ठर दो तरेकी खेती विवेक पुरपोंकों चाही-  
ये सो वणे जहांतक जहां रहता होय वहां-  
ही व्यापार करणा जिस्सें स्वजनोसें विगोहा  
नही होवे धर्मनी अठी तरेसें वण आताहे जो  
आजीविका नही होती दीखे तब तो परदेस  
जाणेकी तक्लीफ ठगवे कृष्ण कहतेहे हे अ-  
र्जुन दखझी रोगी मूर्ख मुसाफर ठर हमेसां  
पराइ नोकरी करणेवाला ये जीतेजी मरे जेसे-  
हैं ऐसा समझणा जो परदेस जाणेकी जरूरी  
होय तो आप अथवा अपने लम्कोंसें परदेसमें  
व्यापार नही करवाणा अपने परीक्षावंत खा-  
तरीदार मूनीमसें व्यापार चलाणा कोइ  
कारण योगसें परदेस जाणा पमे तो अच्छे



विधाताका कोप होताहे तब रसायण जूवा  
 फाटका अंजनसिद्धि ठर यक्षणीकी गुप्तामें  
 प्रवेश करणेकी बुद्धि होतीहे जो अदमी मंदि-  
 रकी धर्मकी सच्ची या झूठी सोगन खानेहे ठ-  
 सका बोधबीज जाते रहताहे ठर अनंत शं-  
 शार रुखताहे किसीकी जमानत नही देणी  
 कारण जमानतनी एक आपदाहे ये पांच चीज  
 आपदाका कारणहे घरमें दखडी होकर दो  
 ठरत रस्तेपर खेत जमानत देणी गवाही जर-  
 णी ठर दो तरेकी खेती विवेक पुरपोंकों चाही-  
 ये सो वणे जहांतक जहां रहता होय वहां-  
 ही व्यापार करणा जिस्सैं स्वजनोसैं विगोहा  
 नही होवे धर्मनी अग्री तरेसैं वण आनाहे जो  
 आजीविका नही होती दीखे तब तो परदेस  
 जाणेकी तक्लीफ ठठावे कृष्ण कहतेहे हे अ-  
 र्जुन दखडी रोगी मूर्ख मुसाफर ठर हमेसां  
 पराई नोकरी करणेवाला ये जीतंजी मरे जेसे-  
 हैं ऐसा समझणा जो परदेस जाणेकी जरूरी  
 होय तो आप अथवा अपने लम्कोंसैं परदेसमें  
 व्यापार नही करवाणा अपने परीक्षावंत खा-  
 तरीदार मूनीमसैं व्यापार चलाणा कोइ  
 कारण योगसैं परदेस जाणा पने तो अच्छे











नकी सफलता होती है धर्मके सान क्षेत्रोंमें धन  
 लगानेका मनोरथ करणा जोकी धन पैदा करते  
 आरंभ करणा परे उसकी निवृत्तिके वास्ते वि-  
 वैकी आदमीकों चाहिये सो नित्त बने २ मनो-  
 रथ करता रहे कारण मनुष्यकी बुद्धि जैसी  
 अपनी तकदीर होय उसही तरेकी काम कर-  
 णेका यत्न करता है धन काम उर यश ये ती-  
 नोका कीया हुवा यत्न वाजेवखत निष्फल  
 होता है लेकिन धर्म काम करनेके मनोरथ  
 खाली नही जाते है जीर्ण सेठकी तरे जब  
 धनकी वृद्धि होय तब धर्मकामकेवास्ते पहली  
 कीया हुवा मनोरथ सफल करणा चाहिये  
 क्योंकि उद्यमका फल धन धनका फल सुपा-  
 त्रोंको दान देणा जो अगर सुपात्रोंको नही  
 करे तो लक्ष्मी उर उद्यम दो का-  
 रणा होना है सुपात्रोंके  
 ता है धर्ममें लगाइ जा  
 खगाइ जाय सो नोग

के काममें नही लगे

कहाती है पूर्व

आगुं

५५

ब्राह्मण एक रजपूत एक वशिष्ठा एक सुनार ए  
 च्यारजणे आपसमें दोस्तये वो च्यारोंही धन  
 कमाणे परदेस चले रातकूं एक उद्यानमें रहे  
 उस जगे रातकूं दरखतके सोनेका पोरसा ल-  
 टकता देखा च्यारोंमेंसें एक बोला धनहे तब  
 स्वर्ण पोरसा बोला धन अनर्थका मूलहे तब  
 तीनों तो उसका लालच ठोरु दिया लेकिन  
 सुनार बोला नीचे गिर तब स्वर्णपुरष नीचे  
 गिरा तब सुनार उसकी अंगली काटली बाकीके  
 स्वर्णपोरसेंको खड़ेमें मालदिया पीठे उन च्यार-  
 जणोंमेंसें दो अदमी खानपान लाणेकों गांममें  
 गये ठर दोजणे बाहिर रहे तब गांममें गये  
 सो जहर मिलाके खानपान लाये मनमें वि-  
 चारा वो दोनों इसके खाणसें मरजायगें तब  
 पोरसा अपने दोनोंके रहजायगा उधर उन  
 दोनोने विचार कीया वो जब सहरमेंसें आवेगें  
 तब उनोको तलवारसें मारमालेगें तब ये पोरसा  
 अपने दोनोंके रहजायगा आखिरकों उन दो-  
 नोंकों उनोनें शस्त्रसें मारदिया ठर वो दोज-  
 णोनें उनोकों मारके मिठाइ खाइ सो बोली  
 दोनुं मरगये ये पापकृष्णि कहलातीहे इसवास्ते  
 हमेसां देव अरिहंतका पूजन अबदान बगेरह





















तेजी आइ सो देवसेठके मालमें चोगुणा लान  
 होगया अन्यायके धनका ऐसा हाल देखकर  
 श्रावक व्रत यदनेनी अंगीकार करा इस तरेसें  
 न्यायसें कमाया धनका अगर दांनजी लीया  
 जाय तो खेणेवालेके बहोत बढोतरा होतीहे  
 इसपर दृष्टांतहे चंपा नगरीमें सोमनामे राजा  
 था उसनें अच्छे पर्वपर दांन करणेकुं बहोत धन  
 जमा कीया तद पीछे अपने प्रधानको पृठा अहो  
 मंत्री दांन लेणेवाला सुपात्र चाहीये तब मंत्री  
 बोला इस नगरीमें एक ब्राह्मणहे लेकिन हे  
 स्वामी न्यायोपाजित धन मिलणा मुसकिलहे  
 तेसेंइ मुळमनवाला ठर योग्य ठर गुणवान  
 ऐसा पात्र ये दोनोका योग मिलना तो बहो-  
 तही कठणहे तब सोमराजा न्यायसें धन  
 कमाणेकी इच्छासें वेप बढलकर कोइ नही  
 पहचाणे इस मुजब घणियेकी दुकानपर जाके  
 मजूरी करके आठ मोहरे कमाइ पर्व आणेसें  
 सब बिप्रोंकों निहुंता दीया उस सुपात्रकों न-  
 हुंता देणे मंत्रीकुं नेजा तब वो ब्राह्मण बोला  
 हे मंत्रवी जो ब्राह्मण लोकके बश राजासें दांन  
 ले वो तमिस्रा घोर नर्कमें पम्के दुखी होय  
 राजाका दांन सदतमें जहर मिला जेसा हे वाब-



तपर चाहे पुत्रका मांस खावे सो श्रेष्ठ लेकिन  
 राजापास दान नहि लेणा चक्रवर्त्तपास दान  
 लेणा दस हिंसा समान ध्वजकेपास दान  
 लेणा हजार हिंसा समान राजापास दान  
 लेणा सो दश हजार हिंसा समान ऐसा  
 स्मृतियोंका तथा पुराणोका वचनहे इसवास्ते में  
 राजदान नही लेउंगा तब मंत्री बोला हे सा-  
 क्षात् ब्रह्ममूर्ति आपकूं निजन्यायसें पेदा किया  
 धनका दान देगा इसवास्ते उसमें कुछ दोष  
 नही इत्यादिक वचनोसें समझायकर मंत्री रा-  
 जाकेपास लाया राजा उसकूं निजासन दीया  
 पगधोकर विनयसें पूजा करी वो आठ मोहर  
 दक्षिणा तरीके कोइ नही देखे इस मुजब मू-  
 र्ठीमें दान दिया दुसरे ब्राह्मण इस स्वरूपकूं  
 देख मनमें गुस्मे हुये राजाने इसकूं कोइ सार  
 पदार्थ देदीया पीछेसे राजा बहोतसा धन  
 दुसरे ब्राह्मणोंकें देदेकर खुस कीया राजका  
 दीया धन उस विप्रोके थोमे दिनोमें खूट गया  
 सब ब्राह्मणोंके लेकिन वो आठ मोहरे तो  
 खाते खरचते जन्मजर उस ब्राह्मणके अखूट  
 होगया जेसें खेतमें बीजवृद्धि होय तेसें न्या-  
 यसें पेदा कीया धन उर सुपात्र दान इसके





सैं खरीदकर क्रोमो सोनइये लगाकर मंदिर  
 बनवाया जिस मंदिरकों तोमणेंको ठरंगजेब  
 मुसलमीन बादशाह चढा जबके मंदिरकी को-  
 रणीकी रमन्नक देखी तब हाथमें जो गुरजथा  
 सो बूटगया ठर कहणेलगा अय परवर दिगार  
 में इस अइमारतको हरगिज नहीं तोमसकता  
 करवाणेवाले ठर कारीगरोकों कहांतक खूबी  
 दीजाय बने २ अंगरेज उस मंदिरकी ठिव  
 देखकर यह कहतेहे अगर सब मुल्कका धन  
 इनाममें दीया जाय तोजी इस जिन मंदिरकी  
 नक्ख नहीं कोइ बणासकता तो अनेक पापारं-  
 नसे अनुचित काम करके जमा कीया धन  
 धर्मखाते नहीं लगावे तो इस जवमें अपयश  
 ठर परनवमें नरक पमणा होताहे जिसपर म-  
 म्मणसेठका दृष्टांत जाणणा ४ अन्यायसैं पेदा  
 कीया धन ठर कुपात्र दांन यह चोथा जंगहे  
 जिसकरके मनुष्य धिकारणे जायक होतेहैं  
 विवेकीयोकुं जरूर ठोमणा चाहीये जेसैं गायकुं  
 मारके कठुअेकुं पोपणा जेसैं अन्यायके क-  
 माये धनसैं श्राद्ध करतेहे उस कर्मसे चंमाल  
 निज्ज एसी हलकी जातमें जन्म लेणा होताहे  
 जेसैं विद्यमानकालमें तेरा पंथीमतके दूढक गुरु





























मनोहरा धर्म करणा तुममेंती देवपूजा गुरुजन  
 धर्म सुगुणना धन उच्यमान करणा उ आवस्य  
 हमें उच्यमान मान देहमें धन नगाणा तीर्थ  
 यात्रा करणी नर दीन दुर्ग्वी अनाथोकुं परवर्ग  
 न करणा ये धर्म मनोग्थ पिताके अच्छे उमं  
 गये पुरा कर्माणा कोइती नरे मातापिताके  
 उपगारका नार नर नदी नगर मकरा लेकिन  
 अपने बड़े गुरु लोकोकों केवलीका कदा स-  
 र्ज्मके विषे जोमे विगर नर उपाय उनके  
 बदला उतारणेका नही उपाय नरमें जिग्याहे  
 तीन अदमीका उपगार उत्तर न ही नरे उपाहे  
 माबापका १ धनीका २ नर धर्माचार्यका ३  
 कोइ अदमी जावजीवनक प्रगानसमें अपने  
 माबापकुं शनपाक सहस्रपाक तेलसेती मालिन  
 करे सुगंध पीठीमसले गंधोदक गरम पाणी नर  
 पाणीसँ स्नान करावे गहणे पहरावे मुशोनिन  
 करे नोजन शास्त्र मुजब रांधकर नरे जानिके  
 शागयुक्त मन माफक अन्नादि नरे नर  
 पावेजीव गंधे उगावे किये नरे नर  
 उपगारका बदला पृथ नहि नरे नर  
 नर नो दुग्ध केवली नाथि नरे नर  
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर





हजार गुण अधिक माताहे जानवर जहांतक दूध पीणा होय उहांतकही नां मानतेहे अधम पुरप जहांतक स्त्री नहि मिले उहांतकही ना मानतेहे मध्यम पुरप घरका कामकाज उत्तमाताके हाथसें चल्ता होय उहांतकही नाकूं मानतेहे ठर उत्तम पुरप तो यावज्जीव मानतेहे जानवरोकी माता पूत्रकूं जीता देखके संतोष पातीहे मध्यम पुरपोकी माता पूत्रकी कमाईसें सुखी होतीहे उत्तम पुरपोकी माता पूत्रका सूरवीरपणाका काम देखके खुस होतीहे ठर धर्मात्मा पुरपोकी माता पूत्रका उत्तम आचरणसें खुस होतीहे २ अब जाइ संबंधी उचितचरण कहतेहे अपने सगेजाईकूं अपनी मांफक जाणना ठोटे जाईकूं बने जाईमाफक गिणना क्योके बना जाइ वाप बराबर होताहे जैसे श्रीरामचंद्रजीकूं लक्ष्मण खुस रखताथा तेसेंइ शोक नाका अथवा सगीमाके जायोके संग बत्तावा रखणा जायोकी मरजीमाफक चलाणा जायोकी स्त्री पूत्र वगैरे लोकोंनेही उचित आचरण ध्यानमें रखणा जुदा नाब नही दिखावे मनका अजिप्राय कहे पृष्ठे उनोकूं व्यापारमें लगावे जायोसें थोमानी धन व्यापारमें



चार गुण अधिक माताहे जानवर जहांतक  
 धूष पीणा होय उहांतकही मां मानतेहे अधम  
 रूप जहांतक स्त्री नहि मिले उहांतकही मा  
 नानतेहे मध्यम पुरुष घरका कामकाज उस  
 माताके हाथसैं चखता होय उहांतकही माकूं  
 मानतेहे उर उत्तम पुरुष तो यावज्जीव मानतेहे  
 जानवरोकी माता पूत्रकूं जीता देखके संतोष  
 गतीहे मध्यम पुरुषोकी माता पूत्रकी कमाईसैं  
 सुखी होतीहे उत्तम पुरुषोंकी माता पूत्रका  
 सूरवीरपणाका काम देखके खुस होतीहे उर  
 .मात्मा पुरुषोंकी माता पूत्रका उत्तम आच-  
 रणसैं खुस होतीहे २ अब जाइ संबंधी उचि-  
 ताचरण कहतेहे अपणे सगेनाईकूं अपणी मां-  
 फक जाणना ठोटे नाईकूं बने नाईमाफक  
 गिणना क्योंके बन्ना जाइ चाप घरावर होताहे  
 जेसैं श्रीरामचंद्रजीकूं लक्ष्मण खुस रखताथा  
 तेसैंइ शोक माका अथवा सगीमाके जायोंके  
 संग बर्तावा रखणा जायोकी मरजीमाफक च-  
 छाणा जायोकी स्त्री पूत्र वगेरे लोकोंनेनी उचित  
 आचरण ध्यानमें रखणा जुदा जाव नही दि-  
 खावे मनका अजिप्राय कहे पृठे उनोकूं व्यापा-  
 रमें लगावे जायोंसैं थोमानी धन व्यापारमें



न लोकोकें थोमीसी बातमें दिलमें फरक  
 गाताहे उर लोकोमें अपकीर्ति होतीहे इसीतरे  
 उर लोकोसँजी उचिताचरण जिसके जेसा  
 योग्य होय वेसा ध्यानमें रखणा जेसँके पेदा  
 करणेवाला १ पावणेवाला २ विद्याका सिखा-  
 णेवाला ३ अन्न वस्त्र देणेवाला ४ उर अपणे  
 जीवकूं बचाणेवाला ५ ये पांच पिता कह्ला-  
 तेहे राजाकी स्त्री १ गुरुकी स्त्री २ सासू ३ उर  
 अन्मदेणेवाली ४ उर धाय माता ५ ये पांच  
 माता कह्लातीहे सगा जाई १ संगमे पढणे-  
 वाला २ मित्र ३ मांदगीमें बंदगी करणेवाला ४  
 उर रस्तेमें बातचीत करणेसँ हुवा सो मित्र ५  
 ये पांच जाइ कह्लातेहे जाइयोकों चाहीयें सो  
 एक एककूं अच्छी तरेसँ धर्म करणी याद कराणा  
 चाहीये जो पुरप प्रमादरूप अग्निसँ सिलगे  
 ये शंशाररूप घरमें मोहरूप नींदमेंसँ सूतेंकूं  
 जगावे वो उसका परम बंधु कहाताहे जायोंकी  
 आपसमें प्रीतिपर भरतका दूत आपोसँ ऋषज  
 देवके अठाणवे पूत्र जगवानकूं पूठणेगये उनोका  
 दृष्टांत जाणना इसतरे जाईका उचिताचरण  
 जाणना ३ अब जायोंके संग उचिताचरण बि-  
 खतेहे मनुष्यकूं चहीये सो स्त्रीका अच्छीतरे



करणा चुणना फटकाणा कूटणा पीसणा बह  
 सीणा कमीदा निकाजणा कलावतू कनारी गोटे  
 बगेगेके गोखरु अलमाम चंपा लमी नाना  
 कसणा बणाणा गहाणा पोणा गाय दूहणी  
 दही जमाणा विलोणा करणा नोजन पाक  
 बगेरे सब तरेकी तयारी बणाणी जिसकुं जेसा  
 लायक ऐसा पुरसाग करणा नाग्यवानकी स्त्री-  
 यां अगर आप नहीं करे तो नोकरणी दासी  
 अथवा सूर्यकारादिकसं निगें दास्तीसं करवाणा  
 अपने लायक होय सो आप करणा सासू  
 सुसरा जर्तार नणद जेठ देवर बगेगेका विनय  
 साचबणा इस बजेसं अनेक किसम कुलबहुत-  
 का कृत्य जाणना जो घरका पति इनकामोमें  
 स्त्रीयोकों नहि लगावे तो उरतें हमेसां उदा-  
 स रहतीहे उर स्त्रीके उदास रहणेसं घरका  
 काम विगन्ताहे दुसरे उरतका स्वभाव चपल  
 होताहे सां निकम्मी रहणेसं विगन्तीहे स्त्रीकुं  
 देखणेसं बातचीत करणेसं उसके गुणकी तारी-  
 फ करणेसं उसके १. चीजोके जेणेसं उर  
 मनमुजब चजपोरे २. ऊपर ३. प्रेम  
 जमताहे ४.



करणा चुणना फटकाणा कूटणा पीसणा वस्त्र  
 सीणा कसीदा निकालणा कलावतू कनारी गोटे  
 वगेरेके गोखरू अलमास चंपा लमी नाना  
 कसणा बणाणा गहाणा पोणा गाय दूहणी  
 दही जमाणा विलोणा करणा भोजन पाक  
 वगेरे सब तरेकी तयारी बणाणी जिसकूं जेसा  
 लायक ऐसा पुरस्कार करणा नाग्यवानकी स्त्री-  
 यां अगर आप नहीं करे तो नोकरणी दासी  
 अथवा मूर्षकारादिकसैं निगें दास्तीसैं करवाणा  
 अपने लायक होय सो आप करणा सासू  
 मुसग ननार नणद जेठ देवर वगेरेका विनय  
 साचवणा इस वजेसैं अनेक किसम कुलबहूत-  
 का कृत्य जाणना जो घरका पति इनकामोमें  
 स्त्रीयोकों नहि लगावे तो उरतें हमेसां उदा-  
 स रहतीहे नर स्त्रीके उदास रहणेसैं घरका  
 काम बिगडताहे दुसरं उरतका स्वभाव चपल  
 होनाहे सां निकम्मी रहणेसैं बिगडतीहे स्त्रीकूं  
 देवणेसैं वानचीन करणेसैं उसके गुणकी तारी-  
 फ करणेसैं उसके मनमानी चीजोके देणेसैं उर  
 मनमुजब चरणेसैं पुरुषके ऊपर मजबुत प्रेम  
 जमताहे ऐसा श्री उमास्वातिवाचक प्रशमरति  
 ग्रंथमे लिखतेहे पुरुषोंकूं चाहीये सो पिताचका



कोड कागण योगमें दो स्त्री पण तो दोनोंके  
 पूत्रोंपर सम दृष्टि रखे उनमेंमें किसीका वाग  
 खंभित नही करणा जो स्त्री अप्रणी जोकका  
 वाग खंभित करके मैथुन सेवे उसके चोथे  
 व्रतमें अतीचार लगे उरुतोमें हमेसां नरमाय-  
 स रखणा कारण बहोत गुम्मेमें आणेसे प्राण  
 धातवक रूग् वेगनी दे उरु विना नरमायस  
 का रम उरु जाणा करनी दे जो कनी धरकी  
 स्त्री निर्गणीनी मित्राण तो बहोतही सम-  
 झदारके साथ धरका रम चलाणा देहमें  
 जीवहे उदांरक मचवा मे। रणी समझणा  
 गृहणीदे सोही। उरु। नर। स स्त्री मुखे  
 हायोमें धन मारणे। उरु। देहमें  
 मान दिखनी नर। उरु। उरु।  
 उरुनी गुप्त चान उरु। उरु।  
 में कदकर आधर। उरु। उरु।  
 कें कदणेमें राजदंमनी। उरु। जानादे। तम।  
 एना दृष्टांतदे हमके बादशाहन दिख।  
 दशाहमें चार चीजे मगवाइ गादीका गया  
 तराड कृना अमर। अमर।  
 अमर बह दृष्टांत। अर्था।  
 उ गृहणी नही।



[illegible]

जुझकी ठर पढी हुइ चतुर ठर रूपवंत पद्मनी  
 या चित्रनी वह उत्तम स्त्री कहलातीहे समझ-  
 वार ठरत तो घरमें मुक्त्यारी करे तो फेरनी  
 केइ बातोसैं डुरस्तनीहे लेकिन जिस घरमें  
 प्रायें ठरतोका चवण होताहे वो घर मही  
 मिलजाताहे सरकारी दमनी होताहे इसबारते  
 चतुरोंको चाहीये सो विगर बिचारे घरमें ठर-  
 तोको मुख्य नही करे जिसपर ऐसा दृष्टांतहे  
 एक जुझाहे कपमे वृणनेवालेके घरमें स्त्री मु-  
 क्त्यारथी वो जुझाहा एकदिन बख्त्र वृणनेके  
 ठजारकेवारते लफमी लाणेकुं जंगलमे गया एक  
 सीसमके दरखतकुं काटणेजगा उसका अधि-  
 ष्ठायक कोइ व्यंतर बोला मतकाट तोनी जुझा-  
 हा मरा नही साहसकर काटणेजगा तब इस-  
 का सब देखके नृत प्रसन्न होयर बोला घरमां-  
 ग जो मांगेगा सो दूंगा वह जुझाहा स्त्री लंपट-  
 था बोला मेरी ठरतसैं पूछे घर मांगूगा रेरे  
 स्त्रीकुं जाये पूछा तब वो ठरत मुछ रबनाबरी-  
 थी इसबारते उसके पादमें ऐसी घात थाइ ॥  
 श्लोक ॥ प्रवर्तमानपुरुष रघाणामुपपातकृन्  
 पूर्वोपाजितमित्राणां दाराणामथवेरमनाम् ॥ १ ॥

अर्थ—जब दुरपकुं लक्ष्मी बहोत मिलजानी





एसी स्त्रीके संग अपनी स्त्रीके प्रीति करावणी  
 उरत वेमार पने तो उसकी दवा दारु पथ्य  
 गेरे करे लेकिन उसकुं सूगाके वे बजे गोमणा  
 नही तपस्या ऊजमणा दांन देवपूजा तीर्थ  
 यात्रा वगेरे धर्मकृत्यमें उमंग बधाकर धनकी  
 मदत देकर सहाय करणा लेकिन अंतराय  
 नहि करणा कारण स्त्रीके पुन्यमें पुरपका हिस्सा  
 प्रतक्ष प्रमाणसेहे धर्मकृत्य कराणा यही परम  
 पगारहे ठर जब उपगारहे तब तो पुन्यमें  
 जाग निश्चेहे ४ अब पूत्रके संबंधमे पिता सं-  
 वंधी उचिताचरण कहतेहे पिताकुं चाहीये सो  
 पुष्टिकारक अन्नादिक अस्तुपथ्य मुजब खिलोवे  
 बालकके मनमाफक फिरावे धिरावे तरे २ के  
 खिलोणे देकर कलाकुशल करे बालकपणेमें जो  
 शंका करके दूबला सरीर रहे तो बोजबानीमें-  
 जी कमजोर होताहे चाणक्य कहताहे पुत्र  
 पांचवर्षका होय जहांतक छाम लमाणा तदपीठे  
 धमकीसैं पढाणा खाणे पहरणेका छाम रखणा  
 एवं दसवर्ष बाद मारपीटके साथजी हितशिक्षा  
 उर विद्यान्यास कुलाचार सिखाणा सोखे वर्ष  
 बाद मित्रकी तरे पिताकुं बर्ताव पुत्रसैं करणा  
 देव गुरु धर्म सुखी स्वजन इनोके संग हमेसां



खातमाजी आगे दोनुं जोमोका संयोग दुरस्त  
 नही ऐसा समझ उन चोरोने वो रूपवान स्त्री रु-  
 खवान पास सुजायदी कुरूप कुरूपके पास धरदी  
 रूपवंत दोनों दिखमें उदासये उन दोनोंके तो  
 मनकांमना पूरी नई लेकिन विदरूप बणिया  
 मनातसमें ऐसा दाल देखकर राजा जोजसँ  
 करियादकी तब राजा सहरमें ढंढोरा पिटवा-  
 गा ये काम किसने कीया ठर क्यों कीया क-  
 णेमें क्या फायदा देखा मेरे सांमने जाहर  
 होवे तब चोरोने आकर कहा गरीब परवर  
 जग हंसका जोमा जो विधाताने जूझके कर-  
 दीयाथा सो जूझ हम चोरलोकोने सुधारदी  
 रत्नसँ रत्न मिलादीया यह बात राजा सुणके  
 हुकम दीया यह इनसाफ ठीकहै पुत्रकुं हमेसां  
 पेदास खरच करणेका घरकांममें लगाणा जो  
 जायक होय तो घरकी मुक्त्यारी साँप देणी  
 क्योंके हमेसां घरके फिकरमें रहणेसँ इच्छा चारी  
 तथा मदोन्मत्त नही होताहै बनी तपस्त्रीपसँ  
 धन कमाणा पम्ताहै इस बातका जाणकार  
 होजाय तब धन नही उमाताहै छोटी उमरमें  
 इसमेही प्रतिष्ठित इल्लतदार कहजाताहै जेसँ  
 राजगृही नगरीका प्रशेनजित राजा छपरो

[illegible]

तीखजावे तो उस कामोसँ धनका नास बेइ-  
 ज्जती राजदंन होताहे इत्यादिक दुर्दसाकी  
 बातोके दृष्टांत सुणावे जो लम्का अक्कलवाला  
 उर तकदीरवाला होय तो जरूर विसनोसँ बच  
 जाताहे रोकम्की कूची लम्केकू सोंपे तो आवंद  
 खरच उर शिजक हमेसां संजाज लेवे उसकरके  
 मनोमती नहि होसके गुरूकी तारीफ सामनें  
 करणी जाईकी उर दोस्तकी तारीफ पिठानी  
 करणी चाकरकी दासकी गुमास्तेकी तारीफ  
 अच्छा काम करचूके तब करणी स्त्रीकी तारीफ  
 मेरे वाद करणी पुत्रकी तारीफ तो बिजकुछ  
 करणीही नहीं जो करणी तो पीठानी करणी  
 जबकी बिना तारीफ कीये सरे नहीं तब लम्-  
 केकू राजसना दिखलाणी क्योंकि कोइ कर्म-  
 योगसँ अणचिंता संकट आपमे तो कायर होके  
 घनराता नहींहे वने १ राजमान्य पुरषोके संग  
 मोहवत करणेसँ बहोत फायदाहे जेसँके धन-  
 वानके दुस्मन बहोत होतेहे दरतरेसँ जालजा  
 पटकतेहैं इसवास्ते राजवर्गीयोसँ धनका फाय-  
 दा नहीं होवे तो अनर्थ तो जरूरही मिटा  
 सकतेहे परदेसकी रीतजांतसँ लम्केकू जरूर  
 वाकिफ करदेणा चाहीये क्योंकि जब परदेशके



लातेहे उनोके संगजी उचिताचरण रखणा अपणे घरमें पुत्रजन्म तेसैं विवाह सगाइ वगेरे मंगलीक कामोंमें उनोका हमेसां सत्कार करणा तेसैंही उनोंके नुकशान वगेरे पमजावे तो उनोंकों अपणेपास रखणा स्वजनोमे संकट आपमे तब अथवा उनोके घर उच्छव होवे तब उनोके इहां आप जाणा रोगाग्रस्त अथवा धनहीन होजाय तो उनोका उद्धार करणा मित्र उर स्वजन बोही कहलाताहे जो रोगमें आप पदामें डुकाजमें संकट आपमे तब राजद्वारमें उर स्मशानमें जो संग रहे उर ठेहनही दिखोवे सो बंधव कहताहे स्वजनोका उद्धार करणा वो अपणाही उद्धार समझणा कारण लक्ष्मी चंचलहे अरटकी धमनाजकी तरे नरी उर स्वाली होजातीहे तेसैंही पेसेवावा दलझी उर दलझी तालेवर होजाताहे इसवास्ते जिसकुं सहाय आपने कीया होय वर्यत पमणेपर जरूर वो अपणी सहाय करताहे स्वजनोकी परपूठ निंदा नही करणी उनोके संग मस्करी वगेरेमेंजी बिगर कारण सूका वाद नही करणा कारणके वाद-विवादमें बहोत दिनोंकी प्रीती तूटजातीहे स्वजनोके शत्रुके साथ दोस्ती नही करणी स्वज-





गीत ताल वगेरे कजामें कुशजहूं कामकी जल  
दीपणा बताणेकूं अथवा दोप ठल वगेरोका नास  
करणेकूं चिमठी वजातीहूं टचकारासैं शिक्षा  
करतीहूं एसेंइ तीसरी अंगली अनामिकाकूं  
पूठा तब वो बोली देव गुरु स्थापनाचार्य सा-  
धर्मीयोकी नवांग पूजा मंगलीक साथिया नं-  
द्यावर्त वगेरे करणा जल चंदन वासक्षेप चूर्ण  
वगेरोका मंत्रणा ये काममे करसकतीहूं तब  
तर्जनी चोथी अंगुलीसैं पूठा तब वो बोली में  
पतलीहूं इसवास्ते कांन वगेरेकी खाज खुणनी  
शरीरमें कष्ट आवे तब तकलीप पातीहूं दूत  
शाकनीके उपज्रवमें कष्टसहके दूर करतीहूं  
जापकी गिणती करणेमें अगवाणीहूं ऐसा सुण-  
के च्यारोंही आंगलीयोनें आपसमें दोस्ती करी  
ठर अंगूठेकूं पूठा तुमारेमें क्या गुणहे तब अं-  
गूठा बोला में तुमारा मालकहूं देखो खिखणा  
चित्रांम कवा घास छेणा चिमठी नरणी चिमठी  
वजाणी टचकारा करणा मूठी जरणी गांठ देणी  
हथियार वापरणा दाढी मूंठ समारणा कतरण  
कातणा ठवेमणा लोच करणा पीजणा वूणन  
धोणा कूटणा दजणा पुरसणा कांटा निकाखण  
गाय दूहणी जापकी गिणती करणी बाल अ



अपनी शक्ति होय उद्दांतक दूर करणा इस बातपर कोई संका करताहे के प्रमादसें रहित ऐसे गुरुओंके बल बिछ होताही नहीं तो फेर देखेही क्या ठर मित्रकी तरे उनोसें कैसें वर्त्तवा रखणा इस बातका ऐसा उत्तरहे तुमारा कहणा सचहे धर्माचार्यतो निश्चे अप्रमादी होतेहे लेकिन् पंचम कालमे शरीरके संघयणानी बेसा नहीं न ऐसा मनोबलहे इस कारणोसें अपवादके रस्तेकी आचरणा देशक्षेत्रादि कारणो करके करते होय सब श्रावक जो तुच्छ बुझीहे उनोंकी न्यारी २ प्रकृतीके अनुसार नाब प्रगट होताहे वाणांग सूत्रमें लिखाहे हे गोतम च्यार प्रकारका श्रावक होताहे एक मातापितासमान दूसरा नाइ समान तीसरा मित्रसमान चौथा शोकसमान साधुओंका जो कुछ काम होय सो मनमे बिचारे किसीबखत साधुओंका प्रमाद देखणेमे आवे सोजी साधुओंके ऊपरसें प्रेमनाथ कम नहीं करे जैसें मातापिता अपने बालकपर अंतरंगसे हेत रनेह रखाहे तेसें साधुपर दयाका परिणाम रखे वो श्रावक मातापिता जेसा समझणा १ जो श्रावक साधुओंपर मनमें तो बहुत नाब रखे लेकिन् बद्वारसें बिनप

सानवणोंमें मंद आदर दिखावे लेकिन साधूकों  
 कोइ दुमरा अनादर करे तो नुरत उहां जाय  
 करके महाय करे वो आवक नाइ जेसा जाण-  
 ना २ जो आवक साधूनोंकों स्वजनसेनी ज्यादा  
 गिणे ठर कोइ कामकाजमें साधू सजा नही  
 पूछे तो अहंकारसें क्रोध करे वह आवक मित्र  
 जेसा जाणना ३ जो गृहस्थ अहंकारी साधू-  
 ठंका बल ठिऊ हमेसां देखा करे ठर उनोका  
 जो कमूर प्रमादसें होजावे वो हमेसां जाहिर  
 कीया करे ठर उन जती साधूठंको तिणखे  
 जेसा गिणा करे वो आवक शोक जेसा जाणना  
 निंदक लोकोंहें सो जो कुछ जिन मंदिर जैन  
 शासनकी हीजना निंदा करते होय तो यथा-  
 शक्ति मिटाणा चाहिये जेसें कुंजारके जवमें  
 साठ हज़ार आदमीका कीया हुवा उपद्रव दूर-  
 कीया यात्रा जाते हुये संघकी रक्षा करी वो  
 मरके सगर चक्रवर्तिका पोता जन्हुकुमार हुवा  
 वह दृष्टांत जाणना धर्माचार्य शिक्षा दे तो तहत  
 कहणा धर्माचार्य कोइ तरेका प्रमाद सेवने  
 होय तो एकांतमें समझाणा माहाराज आ  
 जेसें चारित्रवंतोंकों यह बात योग्य नही इत्य  
 दिक् हित शिक्षा देणी शिष्योंकों चाहिये साम

ने आणा ऊठणा आसण देणा पग चंपी करणी  
 शूद्र वस्त्र पात्र अन्न उपधी ज्ञानके उपगरण  
 वगेरे समयके उचितविनय उपचारजक्तिसे कर-  
 णा हृदयमें प्रीति रखणी आप परदेशमें होय  
 तो गुरुका सम्यक्त दांनके उपगारकूं हमेसां  
 याद करे अब सहर वस्तीके लोकोंसे उचिताच-  
 रण लिखतेहैं सहरके लोकोंमें कोइ संकट आय  
 पने तो मनमें समझणा की मेंनी संकटमें  
 पमाहुं ऐसा विचारणा उच्छवमें होय तो आप-  
 नी उच्छव मांणना क्योंके एक वस्तीमें रहके  
 द्विधा नाव नही रखणा एक धंदेके रुजगार  
 करणेवालो आपसमें कुसंप होय तो निश्चे वो  
 लोक संकटमें जा गिरतेहे बन्ना कोइ काम परणा  
 होय तो बन्नाइ बधाणेजेवारते सब नागरिक  
 लोकोंके संग जाणा जिस्सं किसीका दिख  
 नही डुरे इपेले नही जाणा कोइ फांमकी गुप्त  
 मसजत करी होय तो घादिर प्रयाश नही  
 करणी किसीकी पुगली नहि परणी सब बरा-  
 धरीके होय तोनी मुसलमीनोकी तरे एउकूं  
 अगवाणी करके आप छनोके पिठामी रहणा  
 लेकिन राजाके हुजम मुजब मंजवी परीक्षा र-  
 रणेकूं एउसेज सबोयों सोनेवूं दी तब पांचसे

मूर्ख कुसंपसें आपसमे लड़ने लगे ऐसें कुसं  
 वाले लोकोकूं संग ले राजाकी मुलाखात व  
 णेकूं नही जाणा उर एसोंकी अरजजी न  
 करणी प्रतक्ष प्रमाणहे कितनीही नाकात तु  
 चीज होय लेकिन जब वोही चीज बहो  
 एकठी होजाय तब बनी ताकतपर होजाती  
 देखीये कचे घास या सूतके तागे जब सांम  
 होके रस्सा बनाया जाताहे तब हाथी जे  
 ताकतवरकूं बांध लेताहे जो अदमी आपस  
 एक २ का मर्म उघामे वो बंवीमे रहे उर पेट  
 रहे सापकी तरे मरणांत कट पाते हे ॥ श्लोक ।  
 परस्परगणिमर्माणि नाप्येतेऽधमानराः ते नरावि  
 लयंयानि बन्धीकोदरमर्पयन् ॥ १ ॥ किसी दोनो  
 अदम्योके आपसमें ऊगना होय तो ताराजूके  
 पाक्षणे मुजब बराबर रहणा लेकिन अपणे  
 स्वजन संबंधीयोकी खंच अथवा किसीमें रुस-  
 पनाखाके न्यायसं वेमुख कनि नही होणा ठप-  
 ना छे/सचे इनसाकसं करणा आप समर्थ  
 होय गरीब लोकोपर मासूल कर तथा राज-  
 दंगमें मनाणा नही तथा योगा फमूर किसीने  
 छे लीया होय तो एकदम दंग नहि करणा  
 दिखल तथा राजदंगमें तरलीर जब लोक

पातेहे तब आपसमें संप ठर प्रीति ठोर देतेहे  
 जब वस्तीवालोंमें संप नही होय तो कितनाही  
 ताकतवर क्यों न होय बगनमेंसे निकले हुये  
 सिंघकी तरे जहांतहा अनादर पाताहे इस-  
 वास्ते आपसमें संप रखणा कल्याणकारीहे उ-  
 समेंनी अपणे पक्षमें न्यातीगोतीयोमें तो ज-  
 रूरही चाहिये क्योंके तिलके दूर करदीये जाय  
 तो चावल उगते नहीहे इत्यादिक जाणना  
 अपणा जला चाहो तो राजाके देवस्थानके अ-  
 थवा धर्मखातेके अधिकारी देरासरी तथा उ-  
 नोके नीचेके लोकोंके संग लेणदेणका विवहार  
 नही करणा क्योंके ये लोक पहले तो मीठी  
 बात बणाकर आसन ठर पान बीनी देकर न-  
 लाइ दिखातेहे लेकिन बखत पण्णपर रुपे मां-  
 गणेंसें एसा कहतेहे हमने तुमारा वो कांम  
 कीया वो कांम कीया तिलके फोतरे जितने उ-  
 पकारकूं उस बखत पहार जितना गिणातेहे  
 पहली बातकूं नूखजातेहे घाअणमें क्षमा १  
 मातामें द्वेष २ कसबणमें प्रेम ३ ठर सरकारीय  
 हुदेदारोंमें इमानदारी ४ ये वानें प्रायें होणी  
 मुसखिलहे देणा तो दूर रहा लेकिन ज्यादा  
 मांगणेंसें कोइ ज्यादा मूमत छापटवनेहे क्योंके



मूर्ख कुसंपर्से आपसमे लगने लगे ऐसे कुसंप-  
 वाले लोकोकू संग ले राजाकी मुलाखात कर-  
 नेकू नही जाणा उर एसोंकी अरजनी नहि  
 करणी प्रतक्ष प्रमाणहे कितनीही नाकात तुच्छ  
 चीज होय लेकिन जब वोही चीज बढेत  
 एकत्री होजाय तब बनी ताकतपर होजातीहे  
 देखीये कच्चे घास या सूतके तागे जब सांमल  
 होके रस्सा बनाया जाताहे तब हाथी जेसं  
 ताकतवरकू बांध लेताहे जो अदमी आपसमें  
 एक २ का मर्म उघामे वो बंधीमे रहे उर पेटमे  
 रहे सापकी तरे मरणांत कष्ट पाते हे ॥ श्लोक ॥  
 परस्परानिमर्माणि ज्ञाप्यन्तेऽधमानराः ते नरावि-  
 लयंयाति बलमीकोदरसर्पवत् ॥ १ ॥ किसी दोनो  
 अदम्योके आपसमें जगना होय तो तराजूके  
 पालणे मुजब बराबर रहणा लेकिन अपणे  
 स्वजन संबंधीयोकी खंच अथवा किसीतं रुस-  
 पतखाके न्यायमें बेमुय कनि नही होणा उप-  
 गाः को/ सचे इनसाफसें करणा आप समर्थ  
 होकर गरीब लोकोंपर मासूल कर तथा राज-  
 दंगमें सनाणा नही तथा थोना कसूर किसीने  
 जर लीया होय तो एकदम दंग नहि करणा  
 दिखत तथा राजदंगमें तकलीफ जब लोक

पातेहे तब आपसमें संप ठर प्रीति ठोर देतेहे  
 जब वस्तीवालोमें संप नही होय तो कितनाही  
 ताकतवर क्यों न होय बगनमेंसे निकले हुये  
 सिंघकी तरे जहांतहा अनादर पाताहे इस-  
 .ास्ते आपसमें संप रखणा कल्याणकारीहे उ-  
 समेंनी अपणे पक्षमें न्यातीगोतीयोमें तो ज-  
 .रही चाहिये क्योंके तिलके दूर करदीये जाय  
 तो चावल उगते नहीहे इत्यादिक जाणना  
 अपणा ज्ञान चाहो तो राजाके देवस्थानके अ-  
 धवा धर्मखातेके अधिकारी देरासरी तथा उ-  
 मोके नीचेके लोकोके संग लेणदेणका विवहार  
 नही करणा क्योंके ये लोक पहले तो मीठी  
 घात बणाकर आसन ठर पान बीसी देकर न-  
 खाइ दिखातेहे लेकिन बसत पणोपर रुपे मां-  
 गणोसँ ऐसा कहतेहे हमने तुमारा वो काम  
 कीया वो काम कीया तिलके फोतरे जितने उ-  
 पकारकं उस बसत पहान जितना गिणातेहे  
 पहली घातकं नूखजातेहे ब्राह्मणमें क्षमा १  
 मातामें द्वेष २ कसबणमे प्रेम ३ ठर सरकारीय  
 हुदेदारोमें इमानदारी ४ ये बातें प्रायें होणी  
 मुसकिलहे देणा तो दूर रहा लेकिन ज्यादा  
 मांगणोसँ कोइ ज्यादा मृनन छापटवतेहे क्योंके

मंत्रीकूँ बोला क्यों तें मेरेसँजी ज्यादा दाँन देणे  
 लगा तब आँवरु मंत्री बोला हे राजन् आपके  
 पिताजी दस गामनोके मालकथे उर आजदिन  
 आपके तावेमें अगरे देस होगयेहे उर आप  
 अहमिंज बणरहेहो तो क्या इस बातसँ आ-  
 पकी तरफसँ आपके पिताकी बेअदबी मानी  
 जावे ऐसा उचित वचन सुणके राजा प्रसन्न  
 होकर दुसरी किताब राजपूत्रकी बगसी उर  
 आगे जो दीयीथी उससँ दूणी ऋद्धी इनायतकी  
 इसवाम्ने शास्त्रोंमे लिखाहे के दाँन देतें रस्ते  
 चलने मृते बेनुने ग्वाने पीते बोलते सब जगे  
 योग्यहै। बोलणा बगवतपर बरुई मिलतीहे सम-  
 यकूँ जाणा उसने सब कुछ जाणा बोही उचि-  
 ताचरण जाणनाहे कहाहे एकतरफ ओरु  
 गुण उर एकतरफ उचिताचरणहे अगर उचि-  
 ताचरण नही जाणताहे तो सब गुण जहर  
 बराबरहे इसवास्ते अनुचित काम ओर देणा  
 जिसकरके अदमी मूर्खोंमें गिणे जाताहे वो  
 सब काम अनुचित अयोग्य नही करणे चाहीये  
 वो सब लोकीकशास्त्रों मुजब उपगारका कारण  
 समझके इहं लिखताहूँ हे राजेंज सो मूर्ख हो-  
 तेतेहैं तें इन बातोंकाँ ओर जिसकरके तूँ जंगतमें



ज़मीनोंके बग़ान क्रोध करे २० बने कायदेकी  
 आसामें धन बिखरे २१ साधारण बोलणमें  
 कतन सम्पन्न बंगरेके शब्द बोले २२ बेटेके  
 हाथमें सब धन सोंपके आप दीन दुखी होवे  
 २३ नरगतके पक्षके लोकोसें उधार बगेरे मांगणी  
 करे २४ नरगतके संग लमाइ होणेसें दूसरी  
 सारी करे २५ कामी गुरगोके संग हरीफाइसें  
 धन उठावे २६ लम्बेपर गुस्सा करके उसका  
 नुकसान करे २७ मंगन लोकोकी करी हुई  
 स्तुति सुणके मनमें अहंकार लावे २८ अपनी  
 अहंकार बुद्धिमें दुसरेका दिनकारी बचन नहीं  
 सुणे २९ हमारा बर्दा जानिहे एसे अहंकारसें  
 किसीकी नोकरी नहि करे ३० दुखमें कमाया  
 जावे एसा जो धन सो देखके काम जोग सेवे  
 ३१ मोल बिगाया देकर गगन चरने जावे ३२  
 जो राजा जानी होय उर उसके पाससें धन  
 छेणेकी आसा रखे ३३ हाकम छुट अन्याइ  
 होय उसके पासमें धनकी आसा रखे ३४  
 कायस्थ लोकोमें दोस्ती मोहवतकी आसा रखे  
 ३५ मंत्रवीजादित्त कर कठोर होय उसका  
 नर नहीं रखे ३६ कृतघ्नीसें उपकारके बद-  
 लेकी आसा रखे ३७ जो मूर्ख रसकूं नहि

समझे उसके आगे अपना गुण प्रगट करे ३७  
 शरीर निरोगी रहते हुये वे हमसे दवा खावे  
 ३९ रोगी होकर पथ्यपरे जनहि करे ४० लो-  
 जके बस स्वजनोकुं ठोमदे ४१ जिस बातोंसे  
 दोस्तका दिल पट्टा होजाय ऐसी बात फहे  
 ४२ फायदेका बखत आवे उस बखत आवस  
 करे ४३ बन्ना धनवान होकर लमाइ दंगा करे  
 ४४ जोतपीकी जुवानपर नरोसा रखके राज्य  
 मिलणेकी इच्छा करे ४५ मूर्खके संग सल्लाह  
 फरणेका आदर रखके ४६ गरीब अनाथ लो-  
 कोकुं तपस्वी देणेमें सूरचीरता जाहिर करे ४७  
 जिसकी एवजा हिरा देखणेमे आवे ऐसी  
 उरत परप्रीति राखे ४८ गुणके सीखणेमें क्षण-  
 मात्र प्रीति राखे ४९ दुसरोका जमा कीया  
 हुवा धन ठमावे ५० अहंकार रखपर राजा  
 जैसा बणाव करे ५१ लोकोके सामने राजा  
 बगेरोकी जाहिर निंदा करे ५२ दुख आपेसें  
 दीनपणा प्रगट करे ५३ सुख होणेसें आगे  
 होणेवाली लोटी गतिकुं पूछ जावे ५४ योमे  
 बचावेवारेते व्यादे खर्च करे ५५ पन्ति क-  
 रणेकुं जहर खावे ५६ विनियागरीनें धन दोमे  
 ५७ खपरोग होगयेबाद फेर रसायन खावे ५८

आप अपने बर्तनका अनिमान रखके ५९ गु-  
म्मेमें आकर आत्मदान करणोंके तयार होय  
६० निन विग्नफरण इधर उधर नटकता रहे  
६१ शम्भोंके प्रहार लगेबाद फेरनी गुरु देखे  
६२ बमोंके साथ विरोध करके नुकशानीमें जा  
६३ योमा नो धन होय नर आरंभर बना  
६४ म पदिर १०५५ समझके बहोन  
६५ अर्णी मृगवीरता समझ  
६६ बहोन व्याख्यान  
६७ हामी  
६८ दलप्रीके  
६९ पदाम नो होय  
७० पणमे पयच  
७१ जगोमे  
७२ हो-  
७३ यमनही  
७४ गृज्याग ७५  
७६ बहोन मा-  
७७ होय  
७८ पावद  
७९ दृष्टि  
८० प्रवक्त

होय ऐसे अदमीकी तारीफ करे ७९ सजाका  
 काम पूरा हुवे नहीं ठर पहली ऊठजावे सो  
 ८० दूतयाने हलकारेका काम करे ठर संदेसों  
 चूज जावे ८१ खासीका रोग होय ठर चोरी  
 करणेंकू जावे ८२ दुनियामें नामंबरी ठर य-  
 शकी इच्छाके चाहसे नोजनका खरच बढ़ोत  
 रखे ८३ लोक मेरी तारीफ करेगा इस नरोसे  
 आहार थोमा करे ८४ जो चीज थोमी होय  
 वो चीज बढ़ोत खाणेकी इच्छा करे ८५ कपटी  
 ठर मीठे वचनोके बोलणेवालेके जालमें जाफसे  
 ८६ कसबणके जारके संग लमाइ करे ८७ दो-  
 जणे कोइ गुप्त सज्जा करते होय ठसके बीचमें  
 तीसरा आप जावे ८८ राजाकी महारवानी ह-  
 मेसां बणी रहेगी ऐसा दिलमें नरोसा रखे  
 ८९ अन्यायके रस्ते पळे ठर आपणी बढ़ोत-  
 रीकी आसां रखे ९० धन तो पासमे होय  
 नहीं ठर धनसैं होणेवाले फांम परे ९१ ठाने-  
 की बात लोखोंमें जादिर करे ९२ पशवेवासे  
 अजाण अदमीका जाम न होय ९३ दिनबचन  
 बढ़ोणेवालेके संग घेर करे ९४ सब जगे नरोसा  
 रखे ९५ लोक व्यग्रद्वार नहीं जाणे ९६  
 यावर नील मंगा होयर गरम नोजन रखे-



[illegible]

हलकी जुवान कहे तो पीछा उत्तर हलकी जु-  
वानसें नहि देणा जो बात बीतगइ या आगे  
होणेवाली या वर्तमानकालमें नरोसा रखणे  
योग्य नही होय ऐसी बातमें ऐसा नही क-  
हणा की ये तो सच हे ठर ऐसंहिदे ऐसा  
प्रगट अपणा अजिप्राय नही जाहिर करणा  
कोइ काम किसीके पाससें कराणा विचारघा  
होय तो उसके सामने किसी दृष्टांतसें अथवा  
विशेष वचनोसें पहली जताणा चाहिये  
अपणा विचारघा हुवा कामके अनुकूल कोइ  
वचन कहे तो जरूर मान लेणा चाहिये  
जिसका काम अपणोसें नही घणसके ठसकुं पद-  
लेहीसे नहि कहदेणा छूठी दिखासा देकर  
धक्का नही खिजाणा चतुर पुरपोकुं चाहिये सो  
अपने दुस्मनकोजरी फरबी जुवान नही पहे  
अगर किसी मोजेपर सुणाणा पने तो मि-  
सालपरके दुसरेके बदलनेसें सुणाणा जो अ-  
दमी माता पिता रोगी आचार्य ब्राह्मण नाइ  
तपरबी बुद्धा घालर दुर्बल गरीब आदमी वैद्य  
अपणी छलाद जापोये पुटंब बायर बदेन इ-  
णोके संग लगाइ नही परें सो अदमी तीन ज-  
गतकुं बस परे एज टरी लगायर हृदये. सा-

•

•

•

मान्य पुरपोका मानखंन उर अपयश होताहे  
 अपणी जातिकों ठोम पराइ जातिमें जो आस-  
 क होताहे उसकी कुकर्म राजाकी तरे दुर्दसा  
 होतीहे जातिमें कलह करणसें अदमी भ्रष्ट  
 मिलजाताहे उर संपमे रहे तो कमलमें कमल-  
 णीकी तरे बढ़ताहे अपणा दोस्त साधमीं उर  
 जातिमें आगेवान बना पुत्र जिसके नहीं होय  
 ऐसी बहिन इतनोका जरूर पोषण करणा जो  
 पुरप मनमें बरुपन रखवा चाहे वो सारथीका  
 काम पराइ चीज खरीदणी उर बेचणी अपने  
 कुलके अनुचित काम नहीं करणा महाभारत  
 ग्रंथमे लिखाहे मनुष्यकूं ब्रह्म मुहुर्त्तमें ठठणा  
 धर्म अर्थका विचार करणा सूर्यकूं उदय होते  
 अस्त होते उर किसी बखतजी देखणा नहीं  
 दिनकूं उत्तरकी तरफ रातकूं दक्षिणकी तरफ मूं  
 करके दिसा जंगल जाणा अगर कुठ हरकत  
 होय तो चाहे जिधर मुखकरके जंगल जाणा  
 आचमनादि करके देवपूजा कर गुरुकूं वंदना  
 करके साधू मुपात्रोंकें दान देकर भोजन कर-  
 णा जो भोजन घरमें होय वो पहली देव जिन  
 राजके सामने धरणा फेर नूख लगणसें भोजन  
 करणा कारण भोजनका कोइ बखत शास्त्रकारोंमें

[illegible]

हाथसें अथवा आप स्वना रहके स्त्री वगेरोके पाससें दिलावे जैनमुनिके आहार संबंधी ब-यालीस दोषण टालणेके पिन विशुद्धि वगेरे ग्रंथोसें जाणना दांन दीयां पीठे मुनिराजकुं घंदन करके ठनोंकों दरबाजेतक पोहचाणे जा-णा मुनिराजका योग नहि होय तो वहल बि-गर वृष्टिमास्तक साधूठंके आपेकी राह देखणी शुद्ध आंवक साधूकुं दांन दिये बिगर कोइजी चीज नहि खातेहे मुनिराजका निर्वाह दुसरी रीतसें होता होय तो अशुद्ध आहार लेणे ठर देणेवालेकुं हितकारी नही ठर कुसमयमें जो निर्वाह नही होवे तो आतुरके दृष्टांतसें अशुद्ध आहार दोनोंकों हितकारीहे भगवती सूत्रके लिखे मुजब रस्ते चलणेसें थके हुये रोगी सोच करे हुये ऐसे आगम शुद्ध वस्तुका लेणेवाला साधूकुं उत्तर पारणेके बिपे दांन दीया होय तो उस दांनसें बहुत फल मिलताहे सुपात्र दांनसें देवके तथा मनुष्यादिकोका सुख तथा समृद्धि होतीहे चक्रवर्ति आदि पद मि-लताहे अंतमें थोडे समयमें निर्वाण सुख मि-लताहे अन्नय दांन १ ठर सुपात्र दांन २ अ-नुकंपादान ३ उचितदांन ४ कीर्तिदांन ५ पह-

लीके दो दानोसें मुक्ति उर सुखसंपदा मिल  
 तीहे उर तीन दानोसें फकत सुखसंपदा मि  
 लतीहे मुपात्रका लक्षण इस तरेसेहैं उत्त  
 पात्र साधू जोकी सर्व संगका त्यागी शुद्ध उप  
 देशक मध्यम पात्र श्रावक साधर्मी उर जव  
 न्यपात्र अविरति सम्यक्दृष्टी सास्त्रांतरोमें लि  
 खादे हजारो मिथ्या दृष्टीसें एक थोमी श्रद्धा  
 वाला सम्यक् दृष्टी अच्छादे उर हजारो संक्षे  
 प श्रद्धावंतसें एकवारे व्रतधारी श्रावक श्रेष्ठ  
 हजारवारे व्रतधारीसें एक मुनिराज श्रेष्ठदे उ  
 हजार मुनिगजोसें एक तत्वज्ञानी श्रेष्ठदे त  
 त्वज्ञानी जेसा पात्र हुया न होगा सत्पात्र बर्मी  
 श्रद्धा योग्य काल उचित ऐसी देणोकी वस्तु  
 ऐसें धर्म साधनकी सामग्री बने पुण्यसें प्राप्ति  
 होतीहे नांचढाणी १ नजर करमी करणी २  
 श्रंतवृत्ति रखणी ३ मूं फेर लेणा ४ मोन क  
 रणा ५ देणोमें देरी करणी ६ ये घाते नाकारा  
 करणोका चिन्हदे आंखमें आनंदके आंसू १ कं  
 खने होणा २ बहुमान ३ प्रियवचन ४ अनुमो  
 दन ५ ए पांच दानका नूयण फदखाताहे इत्या  
 दिक संक्षेपसें दानविधी कही तेसेंइ भोजनकी  
 वासन साधर्मी आवे तो छसकुंती यथाशक्ति

जीमाणा साधर्मीजी पात्र कहलाताहे साधर्मी  
वात्सल्यका बन्ना लाज शास्त्रोमें तीर्थकर महा-  
राजने वयान कीयाहे तेसैं दुसरे जिझारी जो-  
कोकूं दांन देणा निरासकर पीडा निकाळणा  
नही कर्मबंध तेसैं धर्मकी हीलणा नहि कराणी  
अपणा मन निर्दय नहि करणा जीमणके व-  
खत दरवाजा बंध करणा ये गृहस्थ सत्पुर-  
पोका लक्षण नही धनवानकूं तो निश्चेही अनं-  
गद्वार होणा क्योंके अपणा पेट कोण नही  
भरताहे लेकिन बहोत जीवोंकी प्रतिपाल करे  
पुरष बोही गिणे जाताहे इसतरे दीन दुखि-  
योंको अनुकंपा दांन देकर पीडे जीमणा जिने-  
श्वरदेव श्रावककूं अनुकंपा दांन मना कीया नही  
नगवतीमे श्रावकके वर्णनमें अवंगु अष्टुवारा  
लिखाहे जवसमुझमे मूबते हुये जीवोके समुदा-  
यकूं दुखसैं हेरान हुयेकूं न्यातकी जातकी  
तथा धर्मकी तफावत दिलमें नहि रखकर झ-  
व्यसैं तो अन्नादिक जावसैं सद्धर्मके रस्ते च-  
गाकर यथाशक्ति अनुकंपा करणी तीर्थकर म-  
हाराज संशारसे विरक्त जावना लाये वाद  
दीन दुखीयोके उद्धार करणेकूं संवत्सरी दांन  
देतेहैं एक वर्षतक फेर संजम छेतेहे प्रदेसी





करणा आहार पाणी वगैरे वस्तु स्वभावसेंही  
 दुष्ट ठर खराब होय तोनी किसी २ कूं माफ-  
 गत आताहे उसकूं साम्य कहतेहे जन्मसें ले-  
 कर जहर खाणेकी टेंम पटकी होय तो उस  
 अदमीकूं जहरनी अमृत होजाताहे ठर अमृ-  
 तनी अगर कनी नहि खाया होय तो वो ज-  
 हर माफक होताहे इसवास्ते पध्य चीज नही  
 सदे तोनी खाणा चहीये कुपध्य चीज सदे  
 तोनी नही खाणा ताकतवर अदमीकूं सब  
 चीज हितकारी होतीहे ऐसा समझके काल-  
 कूट जहर नहि खाणा जहर शास्त्रका जाण-  
 कारनी कोइ वखत जहर खाणेसें मरजाताहे  
 जेसें के तेरुकी रांग होतीहे गलेके नीचे उतरे  
 सो सब असन कहजाताहे इसवास्ते क्षणजरके  
 सुखकेवास्ते जीनका लालची नहि होणा इस-  
 वास्ते अनक्षय अनंतकाय ठर बहुत पापकारी  
 घट्टु बीजवस्तुका खाणा ठोमणा क्योंके रोगका  
 मूल रसहे नावप्रकाशमें लिखादे बहुत साग-  
 पात रोगकारीहे अजन्म अनंत कायका विचार  
 जैन तत्त्वादर्थ नापाग्रंथसे जाण लेणा पापका  
 मूल जोनहे दुखका मूल स्नेहहे रोगका मूल  
 रसहे इन तीनोका ठोमणेवाला सुखी होताहे

अपणी अग्नि बलमाफक प्रमाणसर जोजन करणा बहोत जोजन करणैसैं उलटी दस्त हेजा वगेरे रोग होताहे जीमकर सो कदम टहलणा अथ कच्चा अन्न नहि खाणा जीमकर अन्न पचणैकूं नावी करवट पावघंटा सोणा अथ घंटा चित्ता सोणा ताकत बघणैकूं निद्रा लेणा नही दिनकूं कजी हमेस फिरणे घिरणेकी मेहनत करणेवाला देरी नहि रखतां मलमूत्रका त्याग करणेवाला ठरतोसैं वचके रहणेवाला ऐसे पुरयोके रोग नहि होताहे बिलकुल प्रजातसमें तदन त्रिकाल संडयाकी बखत अथवा रातकूं तथा रस्ता चलते जोजन नही करणा जोजन करती बखत अन्नकी निंदा नहि करणी नावे पगपर हाथ नहि रखणा एक हाथमे खाणेकी चीज लेकर दुसरे हाथसैं नही खाणा उघानी जगेमें धूपमें अंधारेमे दरबतके नीचे जोजन नहीकरणा जोजन करती बखत तर्जनी अंगूठेके पास वाली टाळनी नहि बस्त्र उर पग धोया बिना नंगा होकर मेला बस्त्र पहरकर एक धोती पहरकर भीगा बस्त्र लपेटकर अपवित्र शरीरसैं अतिशय जीनकी जोलपता इत्यादिक प्रकारसैं जोजन नही करणा पगोमें जूता पहरा

हुवा चित्त ठिकाणे रखे विगर केवल जमीनपर  
 अथवा पिलंगपर बैठकर स्तूपेमे बैठके दक्षिण  
 दिसामे मूं करके तेसैं पतले आसनपर बैठके  
 इत्यादिक प्रकारसैं जोजन नहि करणा आ-  
 सनपर पग रखकर कुत्तेकी चंमालकी ठर नीच  
 अदमीकी जहां नजर पकती होय एसी जगे  
 जोजन नही करणा फूटे वरतणमें मलीन पात्रमें  
 अपवित्र वस्तुसैं उत्पन्न गर्भहत्या करणेवालाका  
 स्पर्शा हुवा गाय कुत्ता पक्षीयोका सूंधा हुवा  
 जिस चीजकी खबर नही के ये कहांसैं आई  
 हे जिस चीजकूं आप पहचाणे नही एक बेर  
 रांधे हुवेकुं डुबारा गरम कीया होय ए इत्या-  
 दिक वस्तुका जोजन नहि करणा जीमते वखत  
 वच २ शब्द बांकातिरठा मूं नही करता अपणे  
 इष्टदेवका नाम लेणा उत्तम हाथोसैं जीव जय-  
 णासैं बणाया गया जीमणा स्वर बढ़ते हुये  
 मौन करके जोजन करणा शरीर बांका तिरठा  
 नहि रखणा खाणेकी सब चीज सूंधके फेर  
 खाणी जिससैं नजर दोष टलताहे बहोत खा-  
 रा बहोत खट्टा बहोत गरमागरम बहोत ठंढा  
 अन्न नही खाणा शाक बहोत नही खाणा  
 बहोत मीठी चीजजी नहि खाणी अत्यंत रु-

चिकारीनी चीज नहि खाणी ज्यादा गरम रस  
 नाकनका नाम करेदे बहोन खट्टा डंडियोकी  
 शक्ति तथा वीर्यकं हीन करनाहे अतिमय खारा  
 आंखोंको विकार करेदे बहोन चिकणा गृहणी  
 आंत उठी कला दाजमा बिगामेदे कफकूं कमवा  
 उर तीखे रसमें जीतणा पिनकूं मीठे खट्टा  
 मंदरसमें जीतणा वायुकूं चिकणा उर गरम  
 रसमें जीतणा अजीर्णादि सन्निपातादि बाकी  
 गोभीकं तुलसीरसमें जीतणा चीकें संग करनी  
 वस्तु पट्टली ग्यावे मीठा रस वगेरे दूध वगेरे  
 बजिरा वस्तु नित ग्यावे दाहकारी वस्तु नही  
 ग्यावे बहोन जल नही पीवे ग्याया हुवा पचे  
 बाद तोजन करे पट्टली मीठा बीचमे तीखा  
 अंतमें कमवा रस ग्यावे जलही नहि करता  
 हुवा मीठा उर चीकणा रस ग्यावे बीचमे पतला  
 खट्टा उर खारा ग्यावे अंतमें कमवा तीखा रस  
 ग्यावे तोजनकी सहआतमें जल पीवे तो अग्नि  
 मंद होवे बीचमें पीवे तो रसायण मुजब अंतमें  
 पीवे तो विष माफक नुकशान करे जीमे बाद  
 एक कुम्हटा में साफ करणोकूं जरूर पीणा दृष्टके  
 जीमणा नही तोजन करे नीजा दाथ नेत्र  
 गेगी दाखके आग्य गात्रके बाये दाथके नही

लगाणा कल्याणकेवास्ते दोनों गोमोके स्पर्श  
 करणा नोजन करके दो घंटेतक स्त्री संग नहि  
 करणा दोमणा वगेरे खेचल नहि करणा शरीर  
 मर्दन पगचंपी करवाणा नही नार ठठाणा बे-  
 सणा अथवा स्नान नोजन करके नहि करणा  
 नोजनकर बेठणा नहि बेठे तो मेदवृक्षिसें पेट  
 चूतमनारी होजाताहे सुभ्रावक निर्वद्य निर्जीव  
 उर परित्त मिश्र इससें अपणा निर्वाह करतेहे  
 जीमते वृंद या अनाजका दाणा नही गिरावे  
 मन वचन कायाकी गुप्ती रखके नोजन करे  
 विवेकी देव गुरु नगरका मालक तथा स्वजनमे  
 शंकट पमे तो उती शक्ति नोजन नहि करे  
 सूर्यचंद्रका गृहण लगे तब नोजन करणा नही  
 अजीर्ण नेत्ररोगमें नोजन नहि करणा तावकी  
 सरूआतमे लंघन शक्ति माफक करणा वायूसें  
 थकेलेसें क्रोधसें शोकसें कामसें जो ज्वर चढे  
 अथवा चोटसे उसमे लंघण नहि करणा तीर्थ  
 वंदनमें आठम चोदसकूं वमे पर्वके दिन नोजन  
 नही करणा तपस्यासें अनेक कार्य सिद्ध हो-  
 ताहे चक्रवर्ति नारायणजी तपस्यासें देव आ-  
 राधतेहे नोजनकर दांत साफ कर नवकारस  
 मरणकर ठठे तथा गुरुकूं तथा देवकूं चैत्य वं-



हुवा- इसकूं तूं क्या अच्छा समझताहे अरे जीव बिष्टा बगेरे गलीच चीजकूं देखके, जेसैं तूं थू-थू करताहे उर नाक चढाताहे तो फिर हे मूर्ख ऐसे स्त्रीकी सरीरकी क्या इच्छा करताहे बिष्टाकी थेली कीनोकी जरी कपटण चपलाइ उर झूठसैं जो पुरपोकूं उगतीहे ऐसी स्त्रीका हावजाव उर बहारकी सफाइ देख जो मनुष्य मोहके बस उरतकूं जोगतेहैं उसकरके नरकप्राप्ती होतीहे जरूर काम देव जगत लोककूं जीतणे-वालाहे तथापि मनकूं संकल्पसैं वर्जे तो सहजमें काम जीतणेमें आताहे जो जीव जगतमें पूज्य होगये वेनी अपने जेसेही आदमी थे लेकिन क्रोध मान माया लोभकूं त्यागणेका उद्यम कीया तब थोमेही कालमे ईश्वर सिद्ध होगये वाकी सत्पुरष पैदा होणेका कोइ अज्ञान-यदा क्षेत्र नहीहे इन्द्रियां बगेरे वस्तु तो मनुष्यके स्वभाव करके प्राप्तहे तेसैं साधूपणा मिलणा सहजसैं नही लेकिन गुणोंको धारण करणे-वाला साधू कहलाताहे उद्यम करणेसैं गुणोंकी प्राप्ति होतीहे कोरा उत्तम जातिवाला हुवा तो क्या हुवा रोहीमेके पुष्पकी तरे देखणे मात्र होताहे वनमें पैदा हुये खसबोदार पुष्पकों लोक



[illegible]

( ११७ )

वृद्धत्तगच्छखरतरविटप मुनिश्रावकपतफूल ॥  
नट्टारकयुगवरप्रवर ॥ कीर्तिसूरिजिनमूल ॥ ५ ॥  
शाखाकीर्तिक्षेमकी अतिपसरीजरपूर ॥  
अगणितठपमफलगुणी प्रगटेपुन्यपमूर ॥ ६ ॥  
धर्मशीलगुरुभिष्टरस पल्लवकुशलनिधान ॥  
रसनातारसकरप्रगट कितलगकरेवखान ॥ ७ ॥  
गुरुगुणसरसमुधानिधी ॥ पानकरणलज्जलाय ॥  
शुरसममोमनपीनअति जयोविचक्षणराय ॥ ८ ॥  
परठपगारविचारकर निजआतमअविकार ॥  
पाठकपदधारकरुचिर विरचतगणिःकृत्तिसारा॥९॥

इति श्रीश्रावगव्यवहारालंकारग्रंथठपाध्याय  
श्रीरामलालजीयुक्तिवारिधिःकृतसंपूर्ण ॥

॥ अथ नावश्रावकके लक्षण लिख्यते ॥

सतरे लक्षणवाला नावश्रावक होता है सो संक्षेपसें लिखता हूं १ अनर्थकूं पेदा करणेवाली चंचल चित्तवाली उंगुणगारी नरक जाणेके रस्ते जैसी स्त्रीकूं जाणके अपणे जीवका जला चाहता हुवा उसके वशमें नही रहे २ इंज्रियांरूप चंचल घोमे हमेसां दुर्गतिके रस्ते दोमतेहे इस वास्ते शंसारका यथार्थ स्वरूप जाणणेवाला श्रावक सम्यक् ज्ञानकी लगामसें इंज्रियोकूं खोटे रस्ते नही जाणे देणा ३ सब अनर्थका तथा प्रयासका कलेसका कारण ठर असार ऐसा धनकूं जाणकर बुद्धिमान पुरुष थोनाही धनका लोभ नहि करे ४ संसार आप दुखरूप दुखका फल देणेवाला परिणाम याने आगेजी दुखदाई विटंबनारूप ऐसा जाण उसमें प्रीति रखके मुरझाणा नही ५ जहर जैसा विषय क्षणमात्र मुख देणेवाला ऐसा विचार हमेसां करणेवाला संसार प्रपंचसे मरणेवाला सर्वज्ञ कथित तत्वका जाणकार उन विषयोकी इच्छा नहि करे ६ तीव्र आरंभ ठोमे निर्बाह नहि होता दीखे तोजी सर्व जीवपर दया रखता हुवा गुजरान माफक थोमा आरंभ करे ठर

बिजकुल आरंभसे रहित ऐसे मुनिजनोकी  
 स्तवना करता रहे ७ गृहस्थावासकूं वेनी ठर  
 फास समान गिणता दिलके ऊपर कर दुरक  
 करके रहे ठर चारित्र मोहनी कर्म स्वपाणेके  
 उद्यममें रहे ८ बुद्धिमान पुरुष मनमें गुरुभक्ति  
 ठर धर्मकी श्रद्धा रखकर धर्मकी प्रभावणा प्र-  
 शंसा इत्यादिक करता हुवा निर्मल सम्यक्त  
 पाले ९ विवेकसें चलणेवाला धीर पुरुष साधा-  
 रण मनुष्योंकूं अण समझपणेकर गान्धी प्रवाद  
 चलणेवाला समझे ज्ञानशून्य किसी जाग्यवानकूं  
 कोइ धर्मादि कर्तव्य करता देखे उस मुजब  
 तत्वज्ञानरहित दीया शून्यपणे करतेहे ऐसा  
 समझबुद्धिवंत लोक संझाका त्याग करे १० एक  
 जिनागम स्यादवाद न्याय टाल दुसरा यथार्थ  
 नही ठर दुसरे शास्त्र मोक्षका रास्ता नही  
 ऐसा जाणकर सर्वक्रिया अनुष्ठान जिनागमके  
 अनुसार करे ११ अपने जीवकी शक्तिकूं नही  
 ठिपाता हुवा जेसें संसारके बहोतसे कामकाज  
 करताहे तेसेंइ अपनी हिम्मत नहि दारता  
 हुवा दानशील तपभावना प्रमुख चार प्रकारके  
 धर्मकूं जेसें आत्माकूं पीना नही होय ऐसी तरे  
 आदरे १२ चिंतामणी रत्नकी तरे दुर्लभ ऐसी

हितकारी ठर निरवय धर्मक्रिया पायकर अच्छी  
 तरे आचरणा करता हुवा ऐसा आपणेकूं करते  
 हुवेकूं देखके अज्ञानी लोक अपणेकूं हसे तोनी  
 उनोके हसणेसें मनमें लज्या लाणी नही १३  
 देह स्थिति रक्षाका मूलकारण धन स्वजन आ-  
 हार ठर घर इत्यादिक शंशारगत चीजोके  
 ऊपर रागद्वेष नहि रखता हुवा संसारमें रहे  
 १४ अपणाँ हित चाहता हुवा मध्यस्थपणेमें  
 रहकर नित्य मनमें समताका विचार रखता  
 हुवा रागद्वेषके बस नहि होणा कदा ग्रहकूं  
 सर्वथा ठोमदे १५ हमेसां दिलमें सब चीजोकी  
 क्षणजंगुरताका विचारकर धनवान होकरकेनी  
 धर्मकृत्यमें हरकत होय ऐसा उनोका संबंध  
 नहि रखवे १६ संसारसें विरक्त हुवा श्रावक  
 भोग उपभोगकी चीजोसें वृप्ति होती नही  
 ऐसा विचार करता हुवा उरतके आग्रहसें काम  
 भोगसेवें जेसें ज्वरके पीनामें कुटकी चिरायता  
 आदि खारा छुब्य दिलमें नहि रुचे तथापि  
 रोग मिटाणेकूं प्राणी खाताहे तेसें काम रोगकी  
 शांति करे १७ वेस्या जो कसबण उसकी तरे  
 आशंसा रहित श्रावक आज अथवा कल ठोम-  
 दूंगा ऐसा विचार करता पराई चीजके माफक

सुरखे परणामोसैं घरवास पावे ऐसे ये सतरे गुणोक्तके जो युक्त सो जिनागममें जाव श्रावक कहताहे ऐसा परिणामोवाला जाव श्रावक शुद्ध-कर्मके योगसैं जल्दी जाव साधूपणा पाताहे इसतरे धर्म रत्नशास्त्रमें लिखाहे ॥

इति श्री श्रावकव्यवहारालंकारग्रंथे जावश्रा-  
वकलक्षणसंपूर्ण ॥ जैनधर्ममें मूं बंधोके पंथवाले कहतेहे दो हजार वर्षका जसग्रह वीरप्रभूके जन्मराशिपर बेठाथा सो दो हजार वर्षतक जैन धर्मका उदय पूजा सत्कार नही जया वह ग्रह उतरा उर हम प्रगटे सो जैनका उद्योत जया उत्तर जसग्रह जगवानके राशिपर आ-  
याथा सो उनोके शंतानोका उदय पूजा सत्का-  
र कम पना था जब वह उतरा तब जगवानके शंतान जती साधूउंकी पूजा सत्कार उर धर्मो-  
द्योत जया खरतर गच्छी श्री जिन चंद्रसूरिः  
तपाहीरविजयसूरिः ज्ञानविमलसूरिः विजयदां-  
नसूरि सं १६ से विक्रमके क्रिया उच्चार करा  
जिनोने अकब्बरसैं उपदेस कर जैन तीर्थकी  
रक्षा करी अमारि उदघोपणा हिन्दमे फिरवाइ  
इसवास्ते जिसकूं रोग होताहे रोगकी मुदत  
पोहचणेसैं वोही आराम होताहे सो जया







# नीचे लीखे हुवे पुस्तक हमारे याहां मिलते हैं.

हिंदुस्थानी भाषाके ग्रंथ.

नाम.

किंमत.

१ करुणा वत्तिस्ती, दादासाहेबपूजा	०-४
२ सोळे चाणक्य, शकुनावली स्वरोदय	१-०
३ मूर्तिमंनका सिद्धमूर्ति विवेकविलास	०-०
४ पूजामहोदधि-गायनरूप ३९ पूजा	४-०
५ श्रावक व्यवहारालंकार	१-०

ग्रंथ छपते हैं.

१ श्रीपालचरित्र	१-०
२ धर्मरत्नसमुच्चय—जिस्में पंचप्रति क्र- मणसूत्र विधि समेत, धुई चैत्य वंदन, बने स्तवन, सिद्धाय, गोट्टे स्तवन, पूजा सर्व तपस्या विधि, श्रावकके नि- त्य कर्तव्य इत्यादिक अनेक संग्रहों समेत फेर जीव विचार, नवतत्त्व, दंभक अर्थ समेत उपतादै	५-०

